पोशीदा ख़ज़ाने

ऐ! दुनिया भर के इंसानों आ चुकी है तुम्हारे पास तुम्हारे रब के पास से नसीहत और सीनों में जो तकलीफ़ बीमारी है उससे शिफ़ा का सामान और ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत।

पोशीदा ख़ज़ाने

जादू, जिन्नात, आसेब, नज़रे बद, रूहानी, जिस्मानी, हवाई हर क़िस्म की बीमारियों के मुजर्रब मुफ़ीद इलाज व अमलियात इजाज़त के साथ दर्ज हैं

पोशीदा ख़ज़ाने

मुअल्लिफ़

हकीम आमिल मुफ़्ती मुहम्मद अशरफ़ अमरोहवी

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com • Website : www.faridexport.com

Poshida Khazane

Author:
Hakeem Aamil Mufti Muhammad Ashraf Amrohavi

Edition: **2014**

Pages: **206**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

फ़हरिस्त

उनवान	सफ़ा
एक राज़ की बात	87
तिल्ली के मर्ज़ से हमेशा के लिए निजात	87
पैशाब के बन्द को तोड़ने का अमल	8"
जो शख़्स रास्ता चलने में थक जाता हो	87
जानवरों की बीमारी शिफ़ा के लिए	88
जिसको किसी असर की वजह से औलाद न हो	89
जिसको भूख और प्यास ज़्यादा लगती हो	89
बीमार की अयादत की फ़ज़ीलत	89
चार बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिए	90
हज़रत ख़िज़र अलै० हज़रत इलयास अलै० की दुआ	90
उम्मुल सयान से निजात के वास्ते	91
जिस मुसलमान इन्सान का पैशाब बन्द हो जाये तो क्या करे	91
पैशाब की बन्दिश का फ़ौरी इलाज	92
गुस्सा दूर करने का मुजर्रब इलाज	93
आम बीमारियों का इलाज	93
एक मख़्सूस बीमारी और रूहानी इलाज	94
गुस्से के कम करने का एक मुस्तनद इलाज	94
जमाही का मुफ़ीद व मुजर्रब इलाज	94
कुव्वत मर्दान्गी के ज़अ़फ़ का इलाज	94
जब शदीद किस्म की बीमारियां जैसे ताऊन हैज़ा वगैरह फेल रही हों	94
बच्चे की पैदाईश के बाद दूध ज़्याद होने की वजह से तकलीफ़ हो	95
सांप व अजदहे का फ़ौरी तौर पर ज़ेहर उतारने का मुजर्रब अमल	96

उनवान	सफ़ा

उनवान	सफ़ा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۔ يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِماً اَبَداً عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ خَلْقِكَ كُلِّهِمْ ۔

हम्द व सलात के बाद मुहम्मद अशरफ़ अली उम्मते मुहम्मदिया स0अ0व0 के सामने ये चन्द मुन्तख़ब अमलियातुल्लाह सुबहानहु व तआ़ला और उनके फ़ज़ले अज़ीम की तौफ़ीक़ से पेश कर रहा है। हर क़िस्म के तारीफ़ अल्लाह वहदहू ला शरीक लहु के लिए है और बेपनाह दुरूद व सलाम नाज़िल हों और होते रहें अल्लाह के बुरगज़ीदा नबी व रसूल स0अ0व0 के रूहे पाक पर और आप स0अ0व0 की औलाद पर।

इसको पेश करने की वजह ये है कि ख़ादिम अपनी तालिब इल्मी के ज़माने में ये सोचता था कि हमारे मुल्क के अवाम व ख़्वास और छोटे और बड़े यहां तक कि मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम हर क़ौम हर जमाअत हर तरह का ज़ेहन रखने वाला ये ज़ेहन रखता है कि मौलवियत के अन्दर मदरसों और दीनी दरसगाहों और हर दारूल उलूम में अमलियात और तावीज़ात और गन्डे टोने टोटके और जादू मन्तर जिन्नात व आसेब के उतार चढ़ाव के ये सब तरीक़े पढ़ाये जाते हैं, और बअ़ज़ तो ये भी समझते हैं कि हदीसों में सिवाये तावीज़, गन्डों के और कुछ नहीं है। जैसा कि मुझ से भी ज़माना तालिब इल्मी में सवालात किये गये थे। किसी ने मालूम किया कि यहां तक सबक़ आया या नहीं कि किसी पर जादू या काला अमल कराया जाये और किसी को आबाद किया जाये और किसी को बरबाद किया जाये? तो कुछ लोगों का ज़ेहन ऐसा बना हुआ है कि जो जितना बड़ा मौलवी आलिम व मुफ़्ती होगा इतने ही तावीज़ गन्डों में महारत रखता होगा। जब तालिब इल्मी के ज़माने से अल्लाह तआ़ला ने इससे आगे बढ़ाया (पढ़ने के बाद) तो भोपाल

शहर में जामन वाली मस्जिद फ़तहगढ़ मुहल्ले में इमामत करता था और मेरा हाल ये था इस ज़माने में इसके सीखने का बड़ा शौक़ था। मग़रिब की नमाज़ व अव्वाबीन की नमाज़ से फ़राग़त पर एक नेक सीरत व नेक सूरत साहब मेरे हुजरे में तशरीफ़ लाये और आकर फ़रमाने लगे कि मैं कुछ ख़ज़ाना आपको देना चाहता हूं मैंने ख़ुशी का इज़हार किया तो उन्होंने हुजरे के दरवाज़े बन्द करवा दिये और इस किताब के अन्दर जो जो अमलियात आप की ख़िदमत में पेश हैं वह तमाम नुकूश व तावीज़ात उन्होंने लिखवाये और साथ ही साथ उन्होंने फ़रमाया कि तमाम अमलियात मुजर्रबात व आज़मौदा है। आप इन अमलियात से ख़ालिक़ की मख़्लूक़ को फ़ैज़ पहुंचायें मैं गुलाम व ख़ादिम ये समझा कि आज अल्लाह तआला ने मेरी दिली मुराद को पूरा फ़रमा दिया इल्मी फ़राग़त के बाद भोपाल से अपने वतन गया तो लोग इस सिलसिले से मुतअल्लिक़ ज़्यादा तादाद में आने लगे यहां तक कि पाकिस्तान, बम्बई, बंगलौर, कर्नाटक मुख़्तलिफ़ मक़ामात से आने लगे। चन्द दिन तो इस सिलसिले को जारी रखा जिसमें मेरा वक़्त का बहुत बड़ा नुक़सान हुआ कि इल्मी मुतालए से महरूम होने लगा। इधर मेरे शेख़ पीर व मुर्शिद नमूना सहाबा रज़ि0 आरिफ़ बिल्लाह बक़ियतुस सलफ़ क़ुतुबे वक़्त फ़ानी फ़िर्रसूल स0अ0व0 हज़रत मौलाना डाक्टर मुहम्मद ज़ाहिद साहब ज़ादुल्लाह मजदहुम ने मुझ से उन अय्याम में मना फ़रमाया कि इन तावींज़ात व अमलियात में इनहमाक अच्छा नहीं है। इधर मैंने गौर किया कि शहरों के अन्दर दो क़िस्म के डाकू लुटेरे नज़र आयें एक ये लाटरी टिकट फ़रोख़्त करने वाला और दूसरे ये ग़लत तावीज़ करने वाले कि हाल ये करते हैं कि मरीज़ का आधा ख़ून अपने सामने बिठाकर पी जाते हैं। किसी को कुछ भी नहीं होता सिर्फ़ वदनी कमज़ोरी होती है। इसको जिन्नात या आसेब या किसी पड़ोसी

को कुछ कराया हुआ सहर जादू बोलते हैं और झूठ बोलते हैं। जिसकी वजह से कमज़ोर बदन वाला या जिस्मानी बीमार वाला शख़्स अपने पड़ोसी से बदगुमानी करके दुशमनी करने लगता है और दूर दूर तक नाइत्तफ़ाकियां फैलने लगती हैं सिर्फ़ इस लुटेरे तावीज़ गन्डे करने वाले गुन्डे के झूठ बोलने की वजह से हमेशा देखा गया है कि इस तावीज़ गन्डे करने वाले आमिल का हश्र ख़राब और बुरा होता है और आख़िर वाली ज़िन्दगी बेकार हो जाती है और जो कुछ लोगों से जिन्नात व आसेब व जादू बता कर ठगा होता है इसमें बरकत नहीं होती। अब तो इस ज़माने में इन तावीज़ गन्डों को बिज़निस व कारोबारी धन्दा बना लिया है अल्लाह की पनाह व हिफ़ाज़त।

वाक़िआ

हमारे पड़ोस में एक लुटैरा आमिल इसी क़िस्म का था आने वाले मरीज़ों से बारह रोटियां एक मुर्ग़ लेकर कि इसके ख़ून से तावीज़ लिखा जायेगा। कुन्डे (गोबर के उपले) कुछ गोश्त और बाक़ी नक़दी रुपये लेता था फिर तावीज़ दिया करता था। दूसरे दिन, इसके अमल को देखा कि वह रोटियां तो ख़ुद खा लेता था। ख़ून के हीले बहाने से मुर्ग़ का गोश्त खा लेता था और वह उपले आग के वास्ते इस्तेमाल करता था और हुक़्क़ा पीता था। साथ में कुत्ता रखता था गोश्त कुत्तों को खिला देता था। बहुत से वाक़िआत इस क़िस्म के हैं कि अगर इन आमिल धोखेबाज़ मक्कारों के वाक़िआत को तहरीर किया जाये तो एक किताब बन जाये।

दूसरी तरफ़ इन तावीज़ गन्डे लेने वाले मरीज़ों का हाल है कि इनके अक़ायद इस क़दर बिगड़ गये हैं कि इनका मुकम्मल ऐतक़ाद व ऐतमाद तावीज़ों पर ही होता है। नऊज़ु बिल्लाह नऊज़ु बिल्लाह नऊज़ु बिल्लाह व नतवक्कलु अ़लल्लाह बअ़ज़ का इस क़दर बुरा

ऐतक़ाद हो गया है कि वह तावीज़ गन्डों की ताक़त को अल्लाह तआला की ताक़त से ज़्यादा समझते हैं। अल्लाह तआला हिफ़ाज़त फ़रमाये। चन्द अय्याम क़ब्ल मेरे एक पड़ोसी कह रहे थे कि मुझे एक पागल दीवाने मजज़ूब शख़्सियत ने तावीज़ दिया था इस तावीज़ ने बहुत से काम किये यहां तक कि तक़दीर को ही पलट डाला और उन साहब का हाल ये था कि नमाज़ रोज़ा ख़ुदा के ज़िक्र व फ़िक्र से कोई तअ़ल्लुक़ ही नहीं था।

और बअ़ज़ तावीज़ लेने वाले मरीज़ों का हाल ये है कि वह समझते हैं और कहते भी हैं कि जादू गन्दा व ग़लीज़ अमल है। इस गन्दे अमल की काट करने के लिए गन्दा ही अमल यानी कुफ़्रया व शिरकिया अमल होना चाहिए। पाक अमल यानी कुरान व हदीस के अमलों से गन्दा अमल यानी जादू ख़त्म नहीं होता ख़ूब समझ लेना चाहिए कि ये ख़्याल लोगों का फ़ासिद और बातिल है। हालांकि नापाक चीज़ नापाकी को कैसे पाक कर सकती है। पाक पानी ही नापाकी को दूर कर सकता है। पाक पानी से मुराद कुराने करीम और नापाकी से मुराद जादू वग़ैरह। अब दोनों का हाल तावीज़ लेने और देने वाले एक से हो गये। बरसों हो जाते हैं कोई फ़ायदा मरीज़ को नहीं होता है फिर लोग खुल्लम खुल्ला कुफ़्र व शिर्क पर आ जाते हैं और पन्डितों और नजूमियों और जागियों के पास ईमान व इस्लाम को तबाह व ख़राब करने वाले दीन पर डाका डालने वाले लोगों के पास जाते हैं और वहां अपने ईमान को बर्बाद कराते हैं और करते हैं और अपने सही अक़ीदों का जनाज़ा निकाल देते हैं अब जब मैंने ये देखा कि लोग इस दरजे पर जा रहे हैं और मेरा उन अमलियात और तावीज़ात देने से इल्मी व अमली नुक़सान हो रहा है तो मैंने ये किताब लिखी और अपने बुज़ुर्गवार अस्तारे मोहतरम के बताये हुए नुस्ख़े जो इनकी ज़िन्दगी भर के मुजर्रबात व आज़मौदा हैं तहरीर कर

दिये हैं ताकि इस ज़मीन पर और इस नीले आसमान के नीचे रहने वाला हर मुसलमान शख़्स ख़ुद भी फ़ायदा उठाये और दूसरों को भी फ़ायदा पहुंचाये। मैंने इस पोशीदा ख़ज़ानों की किताब की अमलों व नुकूश व तावीज़ात की इजाज़त साहबे किताब को दे दी है ताकि इतना तो तअ़ल्लुक़ बाक़ी रहे। इसी बिना पर किसी ने कहा है कि हलवा कभी तन्हा नहीं खाना चाहिए। ख़ुद भी खाओ और दूसरों को भी खिलाओ। जबकि इस खिलाने से अपने खाने में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि खिलाने से बरकत होती है। अगर सिर्फ़ ख़ालिस अल्लाह तआ़ला की बेचैन और बेक़रार मख़लूक़ के लिए इसका काम कर दिया जाये तो इसके दिल से ख़ुद बख़ुद दुआएं निकलेंगी। दुनिया बनने के साथ आख़िरत भी बनेगी। पहले के बुज़ुर्गों ने इन तावीज़ात व नुकूश को इसलिए भी दिया करते थे ताकि बिगड़ा हुआ आदमी सही दीन पर आ जाये। अल्लाह तआ़ला ने मेरे दिल में ये बात डाली कि मैं इस किताब के तमाम अमलों की इजाज़त आम कर दूं। लिहाजा में खुले लफ़ज़ों में इस किताब के तमाम अमलो की इजाज़त हर मुसलमान मर्द व औरत को देता हू। इस किताब से फ़ायदा उठाने वालों के लिए न कोई हल्दी गोश्त, प्याज़, लहसन, हीं्, घी, दूध, रोटी, मछली, अण्डा, शहद, सिरका, मुश्क, खजूर, किसी चीज़ को छोड़ने का कोई परहेज़ नहीं है। बस परहेज़ है तो गुनाहों के छोड़ने का है। जो जितना गुनाहों से बचने वाला होगा और अल्लाह तआ़ला से डरने वाला मुत्तक़ी परहेज़गार होगा रसूल अल्लाह स0अ0व0 की सुन्नतों का आशिक़ व दीवाना होगा और सही इल्म पर अमल करता होगा इसके तावीज़ात में भी असर होगा। ज़बान में सच्चाई हो खाने में हलाल रिज़्क़ हो अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ की बेचैनी को अपनी बेचैनी समझता हो तो इसके अता किये हुए तावीज़ात में असर होगा। मैं गुलाम व ख़ादिम अल्लाह तआ़ला

की ज़ाते अक़दस से क़वी उम्मीद करके कहता हूं कि इन्शा अल्लाह तआला इस किताब के होते हुए फिर कोई दूसरी किताब या दूसरी जगह जाने की ज़रूरत नहीं। इस किताब में अकसर नुस्ख़े व अमलियात क़ुरान व हदीस शरीफ़ से निकाले हुए हैं। जैसा कि आप इस किताब के अन्दर देखेंगे भी और कुछ हवाले भी लिख दिये हैं, और कुछ बाक़ी उस्ताज़े मोहतरम भोपाल के आज़मौदा हैं, और अपने ज़ाती भी जिनको मुफ़ीद पाया और इस्तेमाल कर लेने के बाद आप की ख़िदमत में पेश कर रहा हूं। इस हैसियत से कि इसके नक़्श और तावीज़ात जो इस किताब में लिखे हैं फ़ायदा उठाने के ऐतबार से बिल्कुल सही हैं। लोगों में इनसे ग़फ़लत थी इस बिना पर इस किताब का नाम (पोशीदा ख़ज़ाने) रखा। बस अब आप किसी आमिल के पास न जायें। कामिल के पास जायें जो कि अल्लाह तआला की पहचान कराये।

اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا الرَّحْمٰن की शान को तो किसी बाख़बर से ही मालूम कीजिए। इसी किताब में जादू व जिन्नात व आसेब की अलामतें लिखी हैं इसके साथ साथ में देने वाला तावीज़ भी है कि इसके ज़रिये से भी मर्ज़ की शनाख़्त मुकम्मल तरीक़े से मालूम हो जाती है लिहाज़ा पहले साहब किताब (आमिल) को मर्ज़ की शनाख़्त करने ज़रूरी है। फिर बाद को इलाज करें फिर इसके बाद इस किताब में कई कई इलाज जो कि सब मुस्तनद मुजर्रब इलाज हैं तहरीर किये गये हैं। अल्लाह तआला का नाम लेकर और इसी पर भरोसा करके इलाज इख़्तियार करना चाहिए।

एक ज़रूरी हिदायत

एक बहुत ज़रूरी हिदायत ये है कि आमिल किसी मरीज़ का इलाज करते वक़्त अपने गले में हिफ़ाज़त का तावीज़ डाल लिया करें। जिसमें आयाते हिफ़ाज़त क़ुरानी और नक़्श अली रज़ि० हो।

जिन्नात को जलाना जबकि वह शर कशी पर उतर आये तो इसके फ़लीते में नीचे ये इबारत लिखदें (अगर न जावें तो जल जावें) ये इबारत लिख देने से अगर जिन जल जायेगा तो आख़िरत की पकड़ से भी बच जायेगा और एक ख़ूबी इस किताब में अल्लाह तआ़ला की फ़ज़ल ये ये देखेंगे कि इसी के अमलियात कुरान व हदीस के मवाफ़िक़ व मुताबिक़ होंगे। शरीअ़त के ख़िलाफ़ इसी से हट कर नहीं होंगे। क्योंकि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने उम्मत की हर क़दम पर हर मौड़ पर हर लम्हा हर सांस पर रहनुमाई फ़रमाई है आप स0अ0व0 की सीरत व सूरत में तलाश करने वाले को सब कुछ मिल जाता है। ख़्वाह वह जिन्नात या जादू या आसेब या मुसीबतों और परेशानियों से मुतअ़ल्लिक़ हो। बअ़ज़ लोगों का कुछ ऐसा ज़ेहन बन चुका है कि वह समझते हैं कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 के सहाबा कराम रज़ि0 सामने ये सब चीज़ें आयें जैसा कि आप इस किताब के अन्दर भी कुछ देखेंगे और जनाब रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इसका इलाज फ़रमाया। इसको भी आप इस किताब के अन्दर मुतालेआ़ फ़रमायेंगे। अब वह चीज़ जो रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने सहाबा रज़ि0 को बताई हो हम भी अगर ज़रूरत के वक़्त इख़्तियार करें तो हमें इस पर अमल करने की वजह से सवाब भी मिलेगा और ज़रूरत भी पूरी होगी।

शक का अज़ाला

सहारनपुर नानौता के रहने वाले एक मुसलमान मुझ से मिले और फ़रमाने लगे कि मैं अमलियात व जिन्नात वग़ैरह को ही नहीं मानता मैंने जवाब दिया अमलियात को मानो या न मानो मगर जिन्नात को मानना पड़ेगा। इसलिए इसका सबूत कुरान शरीफ़ से साबित है गोया कि जिन्नात व जादू को न मानना कुरान करीम की आयतों को न मानना है और कुरान करीम की आयतों को न मानना

कुफ़्र है बल्कि इसमें शक करना भी कुफ़्र है। मुस्तकिल एक सूरत सूरते जिन पारा 29 में अल्लाह तआला ने उतार छोड़ी है। ख़ुद रसूल अल्लाह स०अ०व० पर जादू किया गया और मुस्तकिल दो सूरतें जादू से मुतअल्लिक आप स०अ०व० पर उतारी गयीं। जैसा कि आप कुरान करीम की तफ़सीरों में देखेंगे। जिन्नात ने ख़ुद रसूल अल्लाह स०अ०व० से अर्ज़ किया कि आप अपनी उम्मत से फ़रमा दें कि वह लीद, गोबर और हड्डी से इस्तन्जा न किया करें ये हमारी और हमारे जानवरों की गिज़ा है आप स०अ०व० ने इसका ऐलान भी फ़रमाया कि इससे इस्तन्जा न किया करो। मेरे शेख़ मेरे पीर व मुर्शिद कुतुबे वक़्त शेख़े वक़्त तबीब जिस्मानी और रूहानी अमरोही मदज़िल्लहु आली फ़रमाते हैं कि जिन्नात ने ख़ुद बताया है कि हम आम तौर पर इसको ज़्यादा परेशान करते हैं जो नंगे सर बैयतुल ख़ला (लैटरीन) में जाते हैं। तो जिन्नात का इन्कार हो या जादू का इन्कार हो गोया कि आयाते कुरानी का इन्कार है। जिन्नात या जादू से मुतअल्लिक बहुत सी कुरान करीम की आयतें और बहुत सी हदीसों और चौदह सौ साल से ज़्यादा के गुज़रे हुए औलिया अल्लाह के वाकिआत है। जिन का जमा करना भी एक मुस्तकिल किताब की शकल इख़्तियार कर सकता है, और जिन्नात का सताना बरहक़ है और जादू का असर होना भी हक़ है ये बात इसलिए अर्ज़ की गयी है कि कई मुसलमान का तअल्लुक़ ज़िन्दगी में पड़ा जो इसका इन्कार करते थे और उन्होंने अपनी औलाद को यही समझा रखा था कि जिन्नात व जादू कोई चीज़ नहीं है। ये सब बकवास है हालांकि जैसे इतनी लम्बी तफ़सील से हमने इसको ज़ाहिर किया और साबित किया है तो फिर इस किताब के अमलियात को ज़रिया बनाते हुए अल्लाह तआला की पनाह व मदद हासिल कीजिए और अपना इलाज अपने मुतअल्लिक़ीन हज़रात का इलाज ख़ुद कीजिए। अल्लाह

तआ़ला ही तौफ़ीक़ अता फ़रमाने वाली हैं और वह ही तमाम बेचैनियों की बैचैनी ख़त्म करने वाले हैं और वह हिफ़ाज़त फ़रमाने से थके नहीं।

ولا یؤدہ حفظھما حسبنا اللہ ونعم الوکیل وصلی اللہ تعالیٰ علی خیر خلقہ محمد والہٖ واصحابہٖ اجمعین اولا واخرا وظاھر اوباطنا.

इस किताब के अमलियात व तावीज़ात व नुकूश के आमिल बनने का तरीक़ा

साहबे किताब अगर इस किताब के अमलियात का आमिल बनना चाहें तो इसको इस किताब के अमलों से फ़ायदा उठाने के लिए आमिल बनना ज़रूरी है ताकि वह इन पोशीदा ख़ज़ानों से भरपूर फ़ायदा ख़ुद भी उठायें और दूसरों को भी इसका फ़ायदा पहुंचायें आमिल बनने का तरीक़ा ये है कि आख़िरी शब में तहज्जुद की नमाज़ के बाद फ़जर के वक़्त शुरू होने से पहले इक्यावन मर्तबा सूरे फ़ातिहा अलहम्द शरीफ़ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के साथ साथ पढ़ें और अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें तमाम दुरूद शरीफ़ों में सब से अफ़ज़ल दुरूद शरीफ़ दुरूदे इब्राहीमी हैं जो कि नमाज़ के आख़िर में पढ़ा जाता है तहज्जुद की नमाज़ 4 से 12 रकअ़त जितनी तौफ़ीक़ हो सके पढ़ने के बाद इस अमल को पढ़े। इस अमल का चालीस दिन तक मुसलसल पाबन्दी के साथ बिला नाग़ा पढ़े। अगर नाग़ा हो गया या अमल पढ़ते पढ़ते फ़ज्र का वक़्त शुरू हो गया तो दोबारा अमल शुरू करना पड़ेगा। चालीस दिन आप ने इस अमल को कर लिया तो आप इस किताब के आमिल बन गये। अब ख़ुद भी फ़ायदा उठायें और अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ को भी फ़ायदा पहुंचायें।

नोटः– बेहतर है कि इस अमल को नौचन्दी जुमेरात से शुरू

करे। नौचन्दी जुमेरात इसको कहते हैं, चांद के महीने के शुरू होने की पहली जुमेरात मसलन! चांद नज़र आया मंगल के दिन तो नौचन्दी जुमेरात चहांर शम्बा बाद बुध का दिन छोड़ कर जो जुमेरात आयेगी। यानी हर महीने के चांद देखने के बाद जो जुमेरात आयेगी। वह जुमेरात नौचन्दी जुमेरात कहलायेगी।

नोटः– अगर आमिल तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने का हमेशा से आदी हो तो इसके अमलों में जान व असर बहुत ज़्यादा होगा।

आमिल हज़रात के लिए ज़रूरी हिदायत

हर आमिल हर वक़्त बावज़ू रहने की कोशिश करे ख़ास कर तावीज़ व नक़्श लिखते वक़्त बावज़ू रहे। अकल हलाल हलाल गिज़ा हो, सदके मकाल सच बोलना तक़वा नमाज़ों का ऐहतमाम हो मुन्करात यानी बुराईयों से बचना हो, तन्हाई पसन्द हो, फ़ुज़ूल गुफ़्तुगू और बद लोगों से अलग थलग रहे। अगर मुहब्बत का अमल करे तो अशराक़ की नमाज़ के बाद या मग़रिब की नमाज़ के बाद करे और जुमेरात, जुमा पीर ये तीन दिन अफ़ज़ल हैं और मुहब्बत का अमल करते वक़्त यानी तावीज़ात वग़ैरह लिखते वक़्त मुंह में मीठी चीज़ रखे और अगर दुशमनी का अमल करे तो ज़वाल आफ़ताब के वक़्त (आम तौर पर बारह बजे) करे। मंगल और इतवार का दिन ज़रूरी है और दुशमनी का अमल करते वक़्त मुंह में नमकीन या तर्श खट्टी चीज़ रखे।

तम्बीहः– नाजायज़ मुहब्बत का अमल या नाजायज़ तौर पर दुशमनी का अमल हरगिज़ न करे वरना इसकी ज़िन्दगी के तबाह होने का ख़ौफ़ है। इस तौर पर कि इससे इस अमल की राहत व चैन व सुकून वाली ज़िन्दगी नहीं रहती और बुरी मौत मर जाता है। ये ख़ास तौर पर याद रखने वाली चीज़ है। हर आमिल को औरतों के इलाज के सिलसिले में परहेज़ ज़रूरी है, यानी परदे का एहतमाम

हो और किसी महरम मर्द को साथ होना चाहिए। तन्हाईयों में औरतों से बात न करें। इन तमाम नक़्श व तावीज़ को दुनिया कमाने का ज़रिया न बनाये। बल्कि लिल्लाहि फ़िल्लाह करे तो बेहतर है ख़ुदा की ख़लूक़ को फ़ायदा पहुंचाने की नियत हो और अपनी मेहनत का कुछ लेना भी जायज़ है। ग़रीबों से न लें तो बेहतर है। मालदारों से लिये बग़ैर न करें।

इजाज़ते अमलियात

अगर कोई शख़्स परेशान हो और अआनत चाहे तो अल्लाह तआला पर ऐतमाद व भरोसा करके नक़्श दे दिया करें। अपनी मेहनत पर ऐतमाद व भरोसा न हो बल्कि अल्लाह तआला ही नफ़ा नुकसान का मालिक है। दिन से समझाइये और मरीज़ को बताइये हर मरीज़ से यूं कहना ज़रूरी है कि नमाज़ों का एहतमाम करे नमाज़ों के ज़रिये अल्लाह तआला से मदद मांगिये। इलाज के दर्मियान सदक़ा करे। इसलिए कि सदक़ा बलाओं को टालता है और बलाओं के सत्तर दरवाज़ों को बन्द करता है। सदक़ा से सेहत मिलती है। मरीज़ों को नफ़ा पहुंचता है। इसीलिए एक हदीस शरीफ़ मे आया है कि सदक़े ज़रिये अपने मरीज़ों का इलाज किया करो।

एक नसीहत वाला वाक़िआ

एक मुसलमान शख़्स का हाल अजीब था कि जब वह कभी बीमार होते थे हकीम व तबीब के पास जाते थे और मर्ज़ की तशख़ीस कराने के बाद दवा लिखवाते थे और फिर ये मालूम करते कि ये दवा कितनी रक़म की है, इतनी ही रक़ल निकाल कर सदक़ा कर देते थे और दवा का पर्चा फाड़कर फेंक देते थे। इसी से अल्लाह तआला इनको शिफ़ा अता फ़रमाते थे और वह सदक़े के ज़रिये से अपना इलाज ख़ुद कर लिया करते थे लिहाज़ा हर मरीज़ के लिए ज़रूरी है कि एक चिल्ला कम अज़ कम निकाले।

सदक़ा निकालने का तरीक़ा

सदक़ा निकालने का तरीक़ा ये है कि रोज़ाना कुछ न कुछ जो औक़ात हो रुपये पैसा निकाल कर एक डिब्बे में जमा करके और बिला नाग़ा और मुसलसल जमा करे और फिर चालीस दिन के बाद किसी मुस्तहिक़ को देदे।

हर आमिल पर ज़रूरी है कि हर मुसलमान को ये बातें बतायें

अगर मरीज़ मुसलमान है तो नमाज़ों का एहतमाम करे और अपनी घर की औरतों को ये बताये कि शाम को और दोपहर को मकान का दरवाज़ा बन्द रखें और रात को सोने से पहले दरवाज़े और खिड़की बिस्मिल्लाह पढ़कर बन्द करें और झूठा बर्तन धोकर रखें या फिर उल्टा करके रखें और पानी का बर्तन और खाने पीने वाली चीज़ें ढांक कर रखें क्योंकि रात को आसेब व जिन्नात व शयातीन का हमला होता है। इस अमल से शैतानी हमले से बच जाता है। मरीज़ को ये भी बता सकते हैं कि हर खाने पीने की चीज़ पर ये पढ़ें– إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ और दिल ही दिल में अल्लाह तआला से दुआ करें कि ऐ अल्लाह मेरी परेशानियों को दूर कर दे और सहत अता फ़रमा।

नक़्श हज़रत अली रजि0

ये नक़्श हज़रत अली रजि0 के नाम से जाना जाता है ये नक़्श हर तरह के जादू और आसेब और जिन्नात और नज़रे बद और बीमारी के लिए मुजर्रब है। नक़्श ये है कि पहले बिस्मिल्लाह लिखें–

नक़्श

اللّٰہ اللّٰہ ربی لاشرک بك شئیا اعوذ بکلمات اللّٰہ التامات من غضبه وعقابه وشر عباده ومن همزات الشیاطین وان یحفرون اللّٰہ شافی اللّٰہ کافی برحمتك یا ارحم الراحمین ط

बहुत ज़रूरी हिदायत

इस नक़्श अली रज़ि० में इतनी इबारत लिखकर फिर आख़िर में इस तरह खींचेंगे /// जैसे आप ऊपर देख रहे हैं जहां पर हम ने ××× बनाया है तो इस नक़्श में ये /// लकीरें मुकम्मल तावीज़ लिखने के बाद लिखेंगे अगर शुरू में ये /// तीन लकीरें बना दीं तो तावीज़ बेकार हो जायेगा। काम नहीं करेगा।

हर आमिल के लिए ज़रूरी काम की बातें

अगर मरीज़ सहर ज़दा यानी जादू किया हुआ है तो इस नक़्शे अली रज़ि० के साथ पानी और तेल भी मरीज़ को इस्तेमाल करना है चालीस दिन तक मन्ज़िल पढ़कर पानी और सरसों के तेल पर दम करें और तेल को रोज़ाना एक मुतय्यन वक़्त टांगें छोड़कर कमर और कमर से ऊपर लगायें और ये पढ़ा हुआ मन्ज़िल का पानी सुबह व शाम पिया करें।

नोटः– मन्ज़िल किताब का तआर्रुफ़ आगे चलकर बयान करेंगे। ये कुराने करीम की मुख़्तलिफ़ आयात व सूरतें हैं। जो ख़्वाब में बशारत हुई हैं। जिस की तफ़सील आने वाली है इन्शा अल्लाह तआला। अगर मर्ज़ ज़्यादा पुराना है तो ये इलाज फिर तीन चिल्ले करना चाहिए और इसी के साथ साथ मरीज़ इस तावीज़ के पानी से हर छठे दिन गुस्ल करे। गुस्ल का तावीज़ ये है। गुस्ल का नक़्श–

786	786	786
786	786	786
786	786	786

ƲƲƲƲƲƲƲƲƲƲƲƲƲƲƲƲ

ححححححححححححححححححح

ببببببب

غغغغغغغ

ثثثثثثث

ححححححح

ياناصر ياناصر ياناصر

ये नक़्श हर सहर ज़दा व आसेब ज़दा जिन व नज़रे बद वग़ैरह के इलाज में मुजर्रब है और पुरानी बीमारियों के इलाज में भी आज़मौदा है। इस ग़ुस्ल के नक़्श को लिखकर नहाने वाले पानी में मिला दें। और ज़िक्र किया हुआ तेल लगाकर इस नक़ा के पानी से ग़ुस्ल कर लें। अल्लाह तआला शिफ़ा अता फ़रमाने वाले हैं।

अलामाते सहर यानी जादू क़ी शनाख़्त

सहर यानी जादू की पहचान ये है कि मरीज़ दिन बदिन सूखता जाता है कहते हैं कि खाता है बकरी की तरह, सूखता है लकड़ी की तरह और जादू वाले का चेहरा रोज़ बरोज़ पीला पड़ता रहता है और जो तेल हम ने ऊपर ज़िक्र किया है यानी मन्ज़िल का दम किया हुआ इस तेल की मालिश करने से बदन में अक्सर कांच, बाल, चूना, रेता और कूड़ा कचरा निकलते हैं। ऐसा भी होता है कि बहुत दिनों से बीमार है और इसका इलाज मुश्किल पड़ता है कोई दवा से फ़ायदा नहीं होता है और ये भी अलामत है कि जादू वाले मरीज़ के बदन में सुईयां और कांटे से चुभते हैं और ये भी अलामत कि इसके बदन के किसी हिस्से में या पूरे बदन में दर्द होता है और जादू की ये भी अलामत है कि मरीज़ के दायें हाथ में इस नक़्श नम्बर 1 को देकर पांच मिनट तक पकड़वाये रखें। इस तरीक़े पर कि हाथ किसी चीज़ पर न टिके बिल्कुल सामने की जानिब पूरा हाथ उठाये रखें। इस नम्बर 1 नक़्श से हाथ में वज़न हो जायेगा और भारीपन मालूम

होगा जैसे कि अठारह (18) किलो का पत्थर होता है तो समझ लेना चाहिए कि सहर जादू है और अगर वज़न मालूम न हो तो मरीज़ को बीमारी है। नम्बर 1 का हाथ में देने वाला नक़्श ये है–

नम्बर 1 :– بسم الله الرحمن الرحيم

324	327	330	317
329	318	323	328
319	332	325	322
326	321	320	331

मर्ज़ का इलाज

अगर ये ऊपर वाला नम्बर 1 का तावीज़ हाथ में वज़न मालूम न हो मर्ज़ व बामारी है। इसके लिए ये बीमारी वाला नक़्श ज़ाफ़रान से लिखकर चालीस दिन तक मरीज़ को सुबह ख़ाली पेट पिलायें।

अलामाते जिन्नात

जिन्नात की अलामात ये हैं कि अगर मरीज़ ज़्यादा अंगड़ाइयां लेता है और जिमाइयां लेता है तो ये अलामत जिन्नात की है और एक अलामत जिन्नात वाले मरीज़ की ये है कि इसकी आंख सुर्ख़ गुलाबी होगी जैसे कि लाल आखें शराबी की होती हैं और एक अलामत ये है कि इसका मुंह होंठ ख़ुश्क होंगे। जिसकी वजह से पानी भी ज़्यादा इस्तेमाल करेगा। ज़िन्नात वाले मरीज़ की शनाख़्त के लिए ये भी करके देखें कि नम्बर 1 जो ऊपर लिखा गया है। सीधे हाथ में दें पांच मिनट तक पांच मिनट के अन्दर अन्दर जिन हाज़िर हो जायेगा और अगर पांच मिनट के बाद भी जिन हाज़िर न हो तो पांच मिनट के बाद नम्बर 2 कि इसकी तासीर ज़्यादा है नम्बर से बअज़ मर्तबा नम्बर 2 के नक़्श से भी जिन हाज़िर नहीं होता सिर्फ़ हाथ में लर्ज़ा व कपकपी होती है तो भी समझ लेना चाहिए कि जिन

का असर है।

नम्बर 2 नक़्श ये है–

326	329	333	319
331	320	325	330
321	335	328	324
329	323	322	334

जिन्नात वाले मरीज़ का इलाज

अगर मरीज़ पर जिन का असर है तो इस मरीज़ को पानी और तेल जो कि मन्ज़िल का दम किया हुआ हो देवें मज़कूरा सहर ज़दा के इलाज के तरीके पर इस्तेमाल करायें और ग़ुस्ल के नक़्श के अलावा चालीस दिन के लिए फ़लीता देवें और नक़्श अली रजि० जो पहले गुज़र चुका है मोम जामा करके या तांबे के खोल में डालकर काले रंग के धागे से गले में डाल दें।

हक़ीक़ते आसेब

आसेब जिसे हमज़ाद भी कहते हैं इन्सान के मर जाने के बाद जब उसे क़ब्र में दफ़न करते हैं और दफ़न करते वक़्त आयते क़ुरानी مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ तो हमज़ाद दफ़न होने से रह जाता है और फिर वह ऐसे लोगों के बदन में घुसता है जिनका ख़ून उन के मवाफ़िक़ होता है और घुस कर परेशान करता है और इन्सान के ऊपर अपना तसल्लुत जमा लेता है। फिर इन्सान वही बोलता है जो वह चाहता है। बअ़ज़ मर्तबा ग़ैबी ख़बरें भी बयान करता है, और झूठ बोलना इसका मख़्सूस वज़ीफ़ा होता है, और ग़लत सलत ख़बरें बयान करते हैं, और बअ़ज़ मर्तबा लोग आसेब ज़दा से अपने और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन के हालात मालूम करते हैं कि किस का क्या है और क्या मर्ज़ व बीमारी है। वह आसेब ज़दा

इन्सान झूठ मूट बहुत कुछ बताता है।

आसेब की अलामात

आसेब ज़दा मरीज़ की आंखें नीचे रहेंगी। कि वह नज़र से नज़र मिलाकर नहीं देखेगा बल्कि आंखें नीचे रखेगा जैसे कि कोई मुजरिम अदालत में हाकिम के सामने शर्मिन्दा होता है। आसेब की अलामत ये भी है कि कोई दवा असर नहीं करती और मर्ज़ की शक्ल इख़्तियार कर लेगा।

बहुत ज़रूरी हिदायत

बहुत ज़रूरी हिदायत ये है कि आसेब ज़दा और सहर ज़दा और जिन्नात वाले मरीज़ों के लिए कम से कम एक हफ़्ता नमक बिल्कुल बन्द करा दें नमकीन चीज़ कोई इस्तेमाल न करें। जब तक इलाज चलता रहे तो बेहतर है कि नमक बन्द ही रखें। वरना तो एक हफ़्ता ज़रूर बन्द रखें। ये ख़ास तौर पर ख़्याल रखने की बात है और मरीज़ को इलाज के दिनों में रोज़ाना सुबह नहार मुंह एक मर्तबा दुरूदे इब्राहीमी एक मर्तबा सूरे फ़लक़ एक मर्तबा सूरे नास पढ़कर पानी पर दम करके पिया करें। यही पानी सुबह को सबसे पहली गिज़ा होगी।

बग़ैर हाज़िर किये जिन्नात को जलाना

मेरे उस्तादे मोहतरम ने बताया कि इस फ़लीते से बग़ैर हाज़िर किये जिन्नात जल जाते हैं और आसेब भी जल जाते हैं। इस फ़लीते को नये मिट्टी के चिराग़ मे तिल के तेल के साथ भिगोकर जलायें। यानी सुलगायें। 21 दिन तक नक़्शे मुकर्रम ये है–

13	3	2	16
8	10	11	5
12	6	7	٩
1	15	4	١٤

ज़रूरी नोटः– नक़्श के नीचे ये इबारत ज़रूर लिखनी चाहिए। "अगर न

जावे तो जल जावे"।

फ़लीते के इस्तेमाल का तरीक़ा

फ़लीते के इस्तेमाल का तरीक़ा ये है कि फ़लीते को रूई से लपेट कर ऊपर से काला धागा लपेट दें फिर मिट्टी के बर्तन में तेल लेकर और इस फ़लीते को तेल में भिगोकर सुलगायें और मरीज़ को दिखायें।

ज़रूरी हिदायत

हमेशा ये बात याद रखें कि फ़लीता सूरज छुपने के बाद रोशन किया जाता है। फ़लीते कई क़िस्म के हैं – नं.1 का फ़लीता आम तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। नं.2 का फ़लीता ज़्यादा असर रखता है। नं.3 का फ़लीता सबसे ज़्यादा तेज़ असर रखता है। तरतीब वार लिखते हैं ग़ौर से देखें–

नं.1 का फ़लीता:– یامہلائیل یاثمنائیل یامیکائیل یاجبرئیل.

नं.2 का फ़लीता:– یامہلائیل یاثمنائیل یامیکائیل یاجبرئیل شیطان فرعون ہامان شداد.

नं. 3 का फ़लीता:– یامہلائیل یاثمنائیل یامیکائیل یاجبرئیل شیطان یاثمنائیل یامیکائیل یاجبرائیل. ہامان ابلیس یامہلائیل فرعون

एक बहुत तेज़ असर फ़लीता

ये फ़लीता उन सब फ़लीतों में से भी ज़्यादा असर रखता है। कभी इसको भी ज़रूरत के वक़्त इस्तेमाल में लायें। इस फ़लीते को ऊपर किये हुए तरीक़े के मुताबिक़ 21 दिन मुतवातिर मुसलसल इस्तेमाल करायें।

دجال	6	1	8
نمرود	7	5	3
ابلیس	2	9	4
شداد	قارون	ہامان	فرعون

अगर न जावे तो जल जावे

नं.1, नं.2, नं.3 के फ़लीते सहर जादू व आसेब और जिन्नात वाले मरीज़ के लिए आम हैं और उन फ़लीतों को सरसों के तेल में रोशन करें। 40 दिन तक रोज़ाना रात मरीज़ को सामने बिठाकर ताकि मरीज़ इस चिराग़ को देखता रहे। जब तक वह चिराग़ धुआं देता रहे इन्शा अल्लाह तआला मरीज़ का हमेशा के लिए जिन्नात व आसेब से छुटकारा व निजात मिल जायेगी। अल्लाह तआला ही नफ़ा नुक़सान के मालिक हैं और सब कुद उन्हीं के क़ब्ज़े में है।

मरीज़ के लिए इलाज के दर्मियान की हिदायत

मरीज़ इलाज के दर्मियान अपने शहर या गांव, क़रये से बाहर न जाये बल्कि बेहतर है कि इलाज के दर्मियान अपने घर से ही न निकले और मरीज़ इस घर में तो बिल्कुल ही न जाये जिसमें बच्चे के पैदाइश हुई हो। एक हफ़्ते तक कम से कम दूसरी हिदायत ये है कि मरीज़ अपने गले के तावीज़ को इस क़दर छोटा और तंग करके बांधे कि अगर मरीज़ इसको तोड़ना चाहे तो तोड़ न सके यानी धागा भी मज़बूत हो तीसरे ये कि जिन्नात व जादू व आसेब वाले मरीज़ किसी वक़्त भी अपने गले से तावीज़ न निकालें इन बातों पर अमल करना बहुत ज़रूरी है। आमिल के लिए बताना ज़रूरी है और मरीज़ के लिए अमल करना बहुत ज़रूरी है।

तमाम क़िस्म के नज़रे बद और आसेब और जादू वग़ैरह से हिफ़ाज़त के लिए

ये तावीज़ एक ज़बरदस्त पाये के आलिम व आमिल कि जिनके नाम से जिन्नात ख़ौफ़ खाते थे इनकी जानिब से अल्लाह तआला की मख़्लूक़ के लिए हदिया है और इस तावीज़ में असहाबे कहफ़ के नाम हैं। तावीज़ के साथ साथ नक़्श को लिख जाये और मोम जामा करके काले धागे से गले में डाल दें। इन्शा अल्लाह बे इन्तहा मुफ़ीद पायेंगे वह तावीज़ और नक़्श ये है—

بِسْمِ اللّٰہِ الرحمن الرحيم. الٰهي بحرمة يمليخا مكسلمينا كشفوطط طيونس كشافطيولس اذا فطيونس يوانس بوس وكلبهم قطيمرد على الله قصد السبيل ومنها جائر ولو شاء لهدكم اجمعين وصلى الله تعالىٰ على سيدنا محمد واله واصحابه وبارك وسلم ان الله خير حافظا وهو ارحم الراحمين ولا يؤده حفظهما وهو العلى العظيم.

8	6	4	2
2	4	6	8
6	8	2	4
4	2	8	6

बहुत ज़रूरी नोट व याद्दाश्त

ये बात हमेशा याद रहनी चाहिए कि नक़्श भरने के लिए सबसे अव्वल छोटे अदद को पहले लिखा जाये फिर इसके बाद जो इससे बड़ा हो फिर उसके बाद जो उस अदद से बड़ा हो इसी तरह पूरा मुकम्मल नक़्श भरना चाहिए। ये क़ायदा हर क़िस्म के नक़्श को पुर करने का है। ये उसूल हरगिज़ न भूलें ग़ौर करके देख लें।

जिन्नात व शयातीन के हमलों से महफ़ूज़ रहने का बेमिसाल क़िला

हज़रत अब्दुर्रहमान इब्न ख़लीश रज़ि० से मालूम किया गया (जबकि ये वहुत बूढ़े उमर रसीदा हो चुके थे) कि आप ने रसूल अल्लाह स०अ०व० को देखा था। इन सहाबी रज़ि० ने जवाब दिया कि हां देखा था। फिर उन से मालूम किया गयसा उस रात में जिसमें शयातीन रसूल अल्लाह स०अ०व० के साथ फ़रेब करना चाहते थे तो आप स०अ०व० ने क्या किया? अब्दुर्रहमान बिन ख़लीश रज़ि० ने जवाब दिया कि शयातीन पहाड़ों के दरों और नालों से निकल निकल कर आप स०अ०व० के पास आये। उन शयातीन में एक

शैतान था जिसके पास आग का एक शोला था। जिससे वह बदबख़्त आप स0अ0व0 के मुबारक बाल जलाना चाहता था। इसी दर्मियान में जिब्रील अलै0 तशरीफ़ लाये और कहा ऐ मुहम्मद स0अ0व0 पढ़िये आप स0अ0व0 ने फ़रमाया क्या पढ़ूं? जिब्राइल अलै0 ने कहा ये दुआ पढ़िये–

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَاَ وَ ذَرَاَوَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنَ الْاَرْضِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ فِيْهَا وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّارَحْمٰنُ!

आप स0अ0व0 ने ये दुआ पढ़ी पढ़ते ही शैतानों की आग बुझ गयी और अल्लाह तआ़ला ने इन सब जिन्नातों और शयातीनों को शिकस्त दी और नाकाम बना दिया। (असदुल गाया स.90 जि.4)

शैतानों और जिन्नातों के घिराव में आकर बचने का क़िला

अगर किसी को रास्तों और जंगलों या किसी भी जगह शयातीन औ जिन्नात और आसेब वग़ैरह घेर लें और चारों तरफ़ से हमला करने के लिए आमादा हो जायें तो इसको चाहिए कि बुलन्द आवाज़ से अज़ान देवे और बुलन्द आवाज़ से आयतुल कुर्सी पढ़े इस अमल से एक भी जिन और शैतान नहीं आयेगा। सबके सब बग़ैर तकलीफ़ दिये भाग जायेंगे। ये अमल अजीब और मुजर्रब है।

जब जिन्नात व शयातीन की सरकशी से परेशान हो जाये

ख़साइस कुबरा में बहीक़ी से बरिवायत हज़रत अबू दजाना रजि0 मन्कूल है। वह फ़रमाते हैं कि मैंने रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ख़िदमत में शिकायत की और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह स0अ0व0 जिस वक़्त में बिस्तर पर लेटता हूं तो अपने घर में अचानक चक्की

की सी और शहद की मक्खी की सी भिनभिनाहट सुनता हूं और बिजली की सी चमक देखता हूं मैंने रात को जब घबराकर अपना सर डरते हुए उठाया तो अचानक मुझ को एक काला साया ऊंचा लटकता हुआ नज़र आया वह मेरे घर के सेहन में लम्बा होता जाता था। मैंने उसको पकड़ने का इरादा किया और इसकी खाल का हाथ लगाया। इसमें मेरे मुंह पर आग का शोला फेंका जिससे मुझे गुमान हुआ कि इसने मुझे फूंक दिया। रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया एक अबू दजाना तेरे घर का रहने वाला जिन बुरा है। फिर रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने हज़रत अली रजि0 को हुक्म दिया क़लम दवात कागज़ मेरे पास लाओ और फ़रमाया कि लिखो ये दुआ–

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هٰذَا كِتَابٌ مِنْ مُحَمَّدٍ رَسُوْلِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ اِلٰى مَنْ طَرَقَ الدَّارَ مِنَ الْعُمَّارِ وَالزُّوَّارِ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ وَالسَّانِحِيْنَ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَارَحْمٰنُ اَمَّا بَعْدُ فَاِنَّ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْحَقِّ سَعَةً فَاِنْ تَكُ عَاشِقًا مُوْلِعًا اَوْ فَاجِرًا مَقْتَحِمًا اَوْ دَاعِيًا حَقًّا بَاطِلًا هٰذَا كِتَابُ اللّٰهِ يَنْطِقُ عَلَيْنَا وَعَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ اُتْرُكُوْا صَاحِبَ كِتَابِيْ هٰذَا وَانْطَلِقُوْا اِلٰى عَبَدَةِ الْاَوْثَانِ وَالْاَصْنَامِ وَاِلٰى مَنْ يَّزْعَمُ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ تُغْلَبُوْنَ حٰمٓ عٓسٓقٓ تَفَرَّقَ اَعْدَآءُ اللّٰهِ وَبَلَغَتْ حُجَّةُ اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ط

हज़रत अबू दजाजा फ़रमाते हैं कि इस मुबारक ख़त को अपने घर ले गया और मैं इसको अपने सर की नीचे रखकर सो गया, और जब मैं नींद से बैदार हुआ तो एक चिल्लाने वाले की आवाज़ सुनी और वह यूं कह रहा था ऐ अबू दजाजा क़सम है लात व उज़्ज़ा की (बुतों के नाम) हम को इन कलिमात ने फूंक दिया। अगर इस तावीज़ वाले की तुफ़ैल से तो हम पर से ये तावीज़ हटाले तो हम तेरे घर में कभी न आयें और न तेरे पड़ोस में और न इस जगह जहां ये नक़्श होगा। अबू दजाजा रजि0 फ़रमाते हैं सुबह हुई मैंने फ़ज्र की नमाज़

रसूल अल्लाह स0अ0व0 के साथ पढ़ी और जो कुछ मैंने जिन्नात से सुना था इसकी आप का इत्तलाअ़ दी। आप स0अ0व0 ने फ़रमाया! ऐ अबू दजाजा रजि0 हटाले अज़ाब को इन लोगों पर से क़सम इस ज़ात की जिसने मुझे हक़ पर भेजा है कि वह इस का रंज व अज़ाब क़यामत तक पायेंगे (अगर न हटायेगा तो)।

नोटः– इस नक़्श को तावीज़ बनाकर इस इन्सान के गले में डालना चाहिए जो जिन्नात के सताने से तंग आ गया हो और इस नक़्श को घर में भी लगाना चाहिए जिस घर में जिन्नात ने अपना घर बना लिया हो और परेशान करते हों निकलते न हों।

जिन्नात व आसेब व जादू और मूज़ी जानवरों से हिफ़ाज़त के लिए

जुमला क़िस्म के आफ़ात व बलयात जादू, जिन, आसेब व तकलीफ़ वह जानवरों से हिफ़ाज़त के लिए मुस्तनद व मुदल्लल व मुजर्रब अमल है कि सुबह व शाम एक मर्तबा मन्ज़िल का पढ़ना बहुत ज़्यादा मुफ़ीद है। ये मन्ज़िल कुराने करीम की तैंतीस आयतें हैं जो एक किताब की शक्ल मे कुतुब ख़ानों में मिलती हैं। मन्ज़िल के नाम से ही मिलती हैं। फ़ायदा उठायें और हर आमिल को इसका पास रखना बहुत ज़रूरी है।

जिस मकान में आसेब व जिन्नात का ख़तरा हो इसकी हिफ़ाज़त के लिए

जिस मकान या दुकान वग़ैरह वग़ैरह में जिन्नात व आसेब का ख़तरा हो या पत्थर, ईटें, बाल, ख़ून गोश्त की हंडियां वग़ैरह गिरती हों तो इसकी रोकथाम के लिए इस नक़्श को लिखकर लटका दें। इस नक़्श को कई बार आज़माया है। मुफ़ीद ही साबित हुआ और इन्शा अल्लाह मुफ़ीद ही पायेंगे। नक़्शे मुअ़ज़्ज़म ये है–

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

9916	9919	9922	9909
9921	9910	9915	9920
9911	9924	9917	9914
9918	9913	9912	9923

जिन्नात व आसेब व नज़रे बद से हिफ़ाज़त के लिए

ये नक़्श आयतुल कुर्सी का है इसको भी ज़रूरत के वक़्त इस्तेमाल फ़रमायें और फ़ायदा उठायें आयतुल कुर्सी की ख़ासियत आगे देखें।

بسم الله الرحمن الرحيم

1523	1530	1545
1544	1542	1540
1529	1546	1541

जिस इन्सान को जिन्नात व शयातीन ने उल्लू बना दिया हो

जिस इन्सान को जिन्नात व शयातीन व आसेब ने सताते सताते उल्लू बना दिया हो इसके उल्टे बायें कान में ये आयत सात मर्तबा पढ़ें और सात मर्तबा ही अज़ान दें, और सात मर्तबा फ़ातिहा चारों कुल आयतुल कुर्सी सूरे तारिक़ सूरे हश्र की आख़िरी तीन आयतें और सूरे वस्साफ़्फ़ात पूरे पढ़ें ऊपर वाली आयत ये है– وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ इन्शा अल्लाह तआला इस अमल से फ़ौरन शैतान पीछा छोड़ देता है वरना जलकर राख हो जाता है। मुजर्रबात में से है।

अपनी और घर की हिफ़ाज़त के लिए हिसार

रात को सोते वक़्त बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के साथ सात

मर्तबा आयतुल कुर्सी पढ़कर शहादत की उंगली पर दम करके मकान के चारों तरफ़ उंगली के इशारे से हिसार कर लिया जाता है। इस अमल से हर तरह के होने वाले टोने टोटके जान व माल वग़ैरह की हिफ़ाज़त रहती है। (बिइज़निल्लाहि तआला व औनहू)

अगर किसी मकान या दुकान व महल फ़ैक्ट्री कारख़ाने में आसेब का असर हो या जिन्नातों और शैतानों ने इसको अपना डेरा बना लिया हो तो

इसके कुचलने का अमल

अगर किसी मकान, दुकान या किसी भी मक़ाम पर जिन्नातें वग़ैरह ने अपना क़ब्ज़ा कर लिया हो और साहबे मकान वग़ैरह को तंग व परेशान करते हों या इसमे रहने वाले को जान से मार डालते हों या इस मकान में जादू कर दिया गया हो कि ख़ून की हंडियां आती हों या इस मकान में बालों की चुटियां गिरती हों या ईंट पत्थर उस मकान वग़ैरह में गिरते हों या गोश्त वग़ैरह आते हों तो चाहिए ऐसे मकान व दुकान व क़िले वग़ैरह को कील दें और हिसार कर दें इस अमल के ज़रिये से। ये अमल वह अमल है जिस पर मेरे उस्ताज़े मोहतरम मालदारों से पांच पांच हज़ार रुपये लेते हैं। इस बिना पर ये अमल मैं अपनी अल्लाह तआला की जानिब से मिलने वाली नेअमत पर पूरी सख़ावत करते हुए तहरीर कर रहा हूं, लोगों को चाहिए कि इस अमल से फ़ायदा उठायें और इस किताब वालों को इस अमल की और मज़ीद इजाज़त देता हूं और दुआ भी करता हूं।

ख़ुशख़बरीः— ये अमल साहबे किताब ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी कर सकते हैं। सभी को इससे फ़ायदा होगा। इन्शा अल्लाह तआला यक़ीन के साथ करें। अल्लाह तआला फ़ायदा ज़रूर अता फ़रमायेंगे। लेकिन इस अमल की क़दर व अहमियत बिठाने के लिए आमिल को चाहिए कि जिसके लिए ये अमल करे इससे कुछ न कुछ अपने

अमल और मेहनत का सिला ज़रूर लेवे। अब इस अमल का तरीक़ा देखें।

नक़्श हिफ़ाज़त

जो आगे देखेंगे चार अदद लिखकर मिट्टी की चार कुलियों में रख दें और मिट्टी की ही चार ढक्कनों से इन कुलियों को बन्द कर दें। इन मिट्टी की ढक्कनों को उड़द (माश) की दाल में पीस कर यानी इसके आटे से लेप कर दें और मकान वग़ैरह के चारों कोनों में एक हाथ बराबर गढ़ा खोद कर दफ़न कर दें। जैसे मकान का नक़्शा ये है।
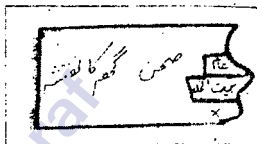
इस नक़्शे में छ कोने हैं सिर्फ़ चार कोनों में इन कुलियों को दफ़न करना है। या तो बैयतुल ख़ला के बराबर वाले कोने में कुलिया दफ़न करें या हमाम की बराबर में दफ़न करें। जैसा कि इस नक़्शे में चार चिड़ियें बनी हुई हैं। इन्हीं चिड़ियों की जगह पर कुलिया दफ़न करेंगे अगर मकान दुकान वग़ैरह में फ़र्श संगे मरमर का होगा तो वह भी तोड़ना पड़ेगा। कुलियों में रखने वाला नक़्शे हिफ़ाज़त ये है। इस नक़्श में चारों खुलफ़ा के नाम हैं। ग़ौर से देख लें।

नक़्श
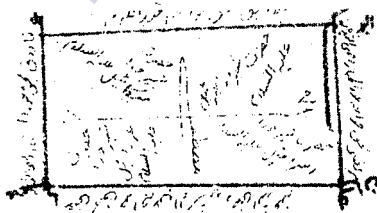
और चार अदद लौहे की कीलें लेकर और हर एक कील पर 25–25 मर्तबा اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ط فَمَهِّلِ الْكَافِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ط पढ़कर दम करके मकान वग़ैरह के ऊपर कोने में जहां पर कि कुलियां नीचे दफ़न की हैं बिल्कुल इसकी सीध में ऊपर ठोक दें और

मन्ज़िल पढ़कर पानी पर दम करके बोतल में रख लें, और इस पानी को रोज़ाना मग़रिब की नमाज़ के बाद (सूरज छुपने के बाद) किसी बर्तन में लेकर नाखुनों के ज़रिये मकान की दीवारों पर छिड़क दें। अमल पूरा हो गया अगर आसानी हो तो मकान की छत पर सात दिन तक बराबर रात को मग़रिब के बाद अज़ान इतनी आवाज़ से कि सिर्फ़ घर घर में ही आवाज़ रहे। नीज़ रात को आयतुल कुर्सी एक मर्तबा ज़ोर से पढ़कर हाथों पर दम करके पूरे बदन पर फेर लें इस अमल से शयातीन व जिन्नात दफ़ा हो जाते हैं।

जिन्नात व शैतानों से हिफ़ाज़त के लिए

मेरे पीर व मुर्शिद तबीबे रूहानी व जिस्मानी मेरे मुरब्बी हज़रत शेख़ मदज़िल्लहु आली व ज़ाद फ़यूज़हुम आली ने फ़रमाया कि जब बैयतुल ख़ला में जाओ तो सर को ढांक कर जाओ। क्योंकि जिन्नातों ने खुद बताया है कि हम इस पर सवार होते हैं और ईज़ा तकलीफ़ पहुंचाते हैं। जो नंगे सर बैयतुल ख़ला में जाता है और फ़रमाया कि इस दुआ को ज़रूर पढ़ें। कभी भी तर्क न करे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ.

"ऐ अल्लाह में आप की पनाह चाहता हूं ख़बीस जिन्नात मर्दों और ख़बीस जिन्नात औरतों से।"

आयतुल कुर्सी की तासीरों में से एक तासीर

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० रसूल अल्लाह स०अ०व० ने सदक़तुल फ़ित्र के गल्ले की निगरानी के लिए मुक़र्रर फ़रमाया। एक दिन रात को एक शख़्स आया और इस गल्ले में से चुरा कर ले जाने लगा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने इसको पकड़ लिया और कहा कि तुझ को रसूल अल्लाह स०अ०व० के पास ले कर जाऊंगा। इस शख़्स ने कहा कि मैं बहुत ज़्यादा ग़रीब हूं और बे इन्तहा तंग दस्त हूं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने इसकी मअज़रत

पर रहम करते हुए छोड़ दिया। सुबह को मैंने ये वाक़िआ हुज़ूरे पाक स0अ0व0 को जाकर सुनाया। हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि इस चोर ने क्या कहा? मैंने जवाब सुनाया कि इसने अपने बाल बच्चों के पालने की और अपनी शदीद हाजत की शिकायत की ये जवाब सुनने के बाद रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया कि वह चोर झूठा है और फ़रमाया कि वह चोर फिर आयेगा तो फिर मैं रात को इसके इन्तज़ार में बैठ गया। क्योंकि मुझे यक़ीन हो गया कि जब आप स0अ0व0 की मासूम ज़ात फ़रमा रही तो ज़रूर आयेगा। फिर वही चोर रात को आया और इस ने ग़ल्ला चुराया मैंने फिर इसको पकड़ लिया और कहा कि मैं तुझे रसूल अल्लाह स0अ0व0 के पास लेकर जाऊंगा। फिर इस चोर ने सख़्त उज़्र पेश किया और कहा कि मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं, बहुत ग़रीब व नातवां हूं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि फिर मैंने इसके हाल पर रहम खाते हुए छोड़ दिया और इस चोर ने ये भी कहा कि अब फिर नहीं आऊंगा। जब सुबह हुई तो मैं ने दरबार रसालत स0अ0व0 में जाकर रात का वाक़िआ बयान किया। बल्कि हुज़ूर स0अ0व0 ने खुद मालूम किया कि रात में आने वाले चोर का क्या हाल है। मैंने तमाम क़िस्सा बयान किया फिर हुज़ूर स0अ0व0 ने फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा रज़ि0 इस चोर ने झूठ कहा और वह फिर आयेगा। अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि फिर तीसरी रात को मैं इस चोर की ताक में बैठ गया। वह फिर आया और इसने ग़ल्ला चुराया। अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने फिर इसको पकड़ लिया और मैंने कहा कि तुझे अभी रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ख़िदमत में लेकर जाऊंगा तू झूठ बोलता है और वादा करता है कि फिर नहीं आऊंगा। इसने कहा कि बस अब और छोड़ दो। मैं आप को क़ीमती बात बतलाता हूं कि जिससे अल्लाह तआ़ला आप को बहुत फ़ायदा देंगे। मैंने पूछा कि वह क्या है। इसने बतलाया

कि जब आप सोने के लिए बिस्तर पर जावें तो आयतुल कुर्सी पढ़िये अल्लाह तआला आप के लिए अपने फ़रिश्तों को जो हिफ़ाज़त करने के लिए मुक़र्रर हैं। ड्यूटी लगा देंगे और तमाम रात शैतान आप के पास नहीं आयेगा। अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने इस चोर को छोड़ दिया फिर सुबह को रसूल अल्लाह स०अ०व० ने खुद पूछा कि रात को आने वाले शख़्स का क्या हाल है? मैंने कहा या रसूल अल्लाह स०अ०व० उसने कहा कि मैं तुझे कुछ कलिमात बतलाता हूं। मैंने कहा या रसूल अल्लाह स०अ०व० बहुत फ़ायदा देंगे। मैंने मालूम क्या वह क्या कलिमात हैं तो इसने बताया कि जिस वक़्त तू अपने आराम के बिछोने व बिस्तर पर सोने के लिए आये तो आयतुल कुर्सी पढ़ और पूरी गुफ़तगू सुनाई। अबू हुरैरा रज़ि० की गुफ़तगू सुनने के बाद रसूल अल्लाह स०अ०व० ने फ़रमाया कि वह शख़्स है तो झूठा मगर बात इसने सच कही है हुज़ूर स०अ०व० ने फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा रज़ि० जानते हो ये तीन रोज़ से आने वाला कौन शख़्स था? मैंने अर्ज़ किया मैं नहीं जानता। हुज़ूर पाक स०अ०व० ने जवाब दिया कि वह शैतान था। ये हदीस बुख़ारी शरीफ़ में है।

आयतुल कुर्सी से शैतान व जिन्नात जल जाते हैं

एक साहब खजूर फ़रोख़्त करने के लिए बसरा गये। बसरा में कोई मकान ठहरने के क़ाबिल नहीं पाया। हां एक मकान था जिसमें मकड़ियों ने जाला लगा रखा था। लोगों से इस मकान के मुतअल्लिक़ मालूम किया कि ये क्यों उजड़ा पड़ा है। लोगों ने बताया कि ये मकान ख़ाली पड़ा रहता है और इसमें जिन्नात और शयातीन का असर है। मालिक मकान से कहा कि आप हमें ये मकान किराया पर देदें मालिक मकान बोला कि आप क्यों अपनी जान को मौत का लुक़मा बनाते हो इस मकान को लेकर क्योंकि इस मकान में एक बहुत बड़ा जिन रहता है कि इस ख़बीस जिन ने इस मेरे मकान को

अपना घर बना लिया है और अपना क़ब्ज़ा जमा लिया है और जो कोई इन्सान इसमें रहता है इसको हलाक कर देता है ये खजूर वाले साहब फ़रमाते हैं कि मैंने मालिक मकान से इसरार करते हुए मकान किराये पर ले लिया और कहा देखा जायेगा। अल्लाह तआला मेरे मदद फ़रमायेगा मालिक मकान ने कहा आप की मर्ज़ी साहबे खजूर फ़रमाते हैं कि मैं इस मकान में ठहरा रात को एक बहुत बड़े डील डौल का शख़्स मेरे क़रीब आया कि जिसके दोनों आंखें आग बरसा रही थीं और सर से पैर तक इसका पूरा बदन काला सियाह फ़ाम था। मैंने आयतुल कुर्सी पढ़नी शुरू की तो इस जिन ने भी आयतुल कुर्सी पढ़नी शुरू की जो मैं पढ़ता था वही वह जिन भी पढ़ता था। जब मैंने وَلَا يَؤُدُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ के कलिमात पढ़े तो इस जिन से ये कलिमात नहीं पढ़े जा सके। मैंने उन्हें कलिमात को कई मर्तबा पढ़ा कर जिस जगह पर वह ख़बीस जिन खड़ा था आग सी लगी और वह जल गया। फिर मैं इसी मकान में एक तरफ़ किनारे मे सो गया। सुबह को जो मैं उठा तो जहां पर इस जिन को खड़े हुए देखा था इस जगह पर कुछ राख पड़ी हुई देखी और ये आवाज़ सुनी कि ऐ फ़लां तुम ने हमारे आदमी को जला दिया, आवाज़ लगाने वाले का पता नहीं चला कि कौन कह रहा है। मैंने ज़ोर से आवाज़ लगा कर मालूम किया कि किस चीज़ से जला दिया। फिर आवाज़ आयी وَلَا يَؤُدُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ के कलिमात के ज़रिये से जला दिया।

एक अज़ीम फ़ायदा

अगर आयतुल कुर्सी ऐसे ख़तरनाक हालात में पढ़ी जाये तो आयतुल कुर्सी कम से कम तीन मर्तबा पढ़ें और एक मर्तबा आयतुल कुर्सी पढ़ने के बाद तीन मर्तबा وَلَا يَؤُدُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ के कलिमात पढ़ें इसी तरह ये अमल तजुर्बे में आया हुआ है। ख़ुलासा ये है कि आयतुल कुर्सी तीन मर्तबा और وَلَا يَؤُدُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

के कलिमात नौ मर्तबा पढ़े जायें। सोते वक़्त अगर गन्दे ख़्वाब देखते हों तब भी इसी तरह पढ़ें और ये अमल हमारे बुज़ुर्गों के तजुर्बात में से है। अल्लाह तआ़ला फ़ायदा बख़्शें हम सब को।

एक मज़ीद फ़ायदा

हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सोते वक़्त आयतुल कुर्सी पढ़ ले तो रात भर शैतान इसके पास भी न आये।

जिन्नात को अल्लाह के कलिमात के ज़रिये जलाना

अगर किसी पर जिन्नात व शयातीन का असर हो और इसके जलाना हो तो चाहिए कि अल्लाह तआ़ला के कलिमात को ज़रिया बनाते हुए काम करे इस तरह पर कि इसके सीधे कान में सात मर्तबा अज़ान देवे और फिर इसी कान में सूरे फ़ातिहा और सूरे फ़लक़ व नास और आयतुल कुर्सी और सूरे मूमिनून की आख़िर की तीन आयतें और सूरे हश्र की आख़िरी तीन आयतें और सूरे वस्साफ़्फ़ात की अव्वल की आठ आयतें पढ़ कर कान में ज़ोर से फूंक मारे। इस अमल से वह जिन हक़ीक़त में जल जायेगा। ये अमल आज़मौदा है और सही है। (मुजर्रबात सही)

आयतुल कुर्सी की एक और तासीर

जो शख़्स आयतुल कुर्सी को हर नमाज़ की बाद पढ़ा करे। शैतान के वसवसों से और ख़बीस जिन्नात के मकर व फ़रेब से अमन में रहेगा। हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ने से रिज़्क़ में बरकत होती है। एक शख़्स ने हुज़ूर पाक स0अ0व0 से अर्ज़ किया कि मेरे घर में ख़ैर व बरकत नहीं होती। हुज़ूरे पाक स0अ0व0 ने इलाज बताया कि तुम आयतुल कुर्सी क्यों नहीं पढ़ते (यानी पढ़नी चाहिए)।

आयतुल कुर्सी का नक़्श ये है—

بسم الله الرحمن الرحيم

1543	1530	1545
1544	1542	1540
1529	1546	1541

अगर जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद 313 मर्तबा आयतुल कुर्सी पढ़ेगा तो इसके रिज़्क़ में ऐसी बरकत होगी कि वह इसके ख़्याल व गुमान में भी न आये होगी। मुजर्रबात में से सही मुजर्रब है।

आयतुल कुर्सी के बाद दुआ भी क़बूल होती है

अगर तीन सौ तेरह मर्तबा आयतुल कुर्सी पढ़े और यही तादाद रसूलों की भी है और यही तादाद असहाब बदर की भी है पढ़े फिर इसके बाद दुआ करे तो वह दुआ क़बूल होती है।

बलग़म के मर्ज़ में भी आयतुल कुर्सी मुफ़ीद है

अगर सफ़ेद नमक की सात डलियां (कंकरियां) लेवें और इस हर एक डली यानी कंकरियां पर सात मर्तबा आयतुल कुर्सी पढ़कर दम करें और एक एक डली रोज़ाना सुबह को चूसें तो बलग़म के मर्ज़ से निजात हासिल होती है। ये अमल कसीरुल इस्तेमाल है। (मुजर्रबाते अकाबिर)

ग़ल्ले की हिफ़ाज़त में भी आयतुल कुर्सी मुफ़ीद है

अगर ग़ल्ले की हिफ़ाज़त के वास्ते एक काग़ज़ पर आयतुल कुर्सी लिखकर और नीचे मदीनतुल मनव्वरा के सात फुक़हा के नाम लिखकर नाम ग़ल्ले में रख दें तो ग़ल्ले में कीड़ों से हिफ़ाज़त रहेगी। सात फुक़हा के नाम हिफ़ाज़त के बयान में देखें। (मुजर्रबाते सही)

आयतुल कुर्सी हिफ़ाज़त का बहतरीन क़िला

जिस माल या औलाद पर आयतुल कुर्सी पढ़कर दम कर दें या लिखकर माल में रख दें या बच्चे के गले में डाल दें तो शैतान इस

माल और औलाद के क़रीब भी नहीं आयेगा ये बात मुस्तनद और मुदल्लल है। (मुजर्रबाते उस्ताज़)

हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी की फ़ज़ीलत

हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी ज़रूर पढ़नी चाहिए। हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ लेता है तो इसके जन्नत में दाख़िल होने का परदा और आड़ मौत है यानी मरते ही जन्नत में जायेगा। एक हदीस में है कि एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक अल्लाह पाक की हिफ़ाज़त में रहता है। अगर सुबह के वक़्त आयतुल कुर्सी पढ़ ले तो शाम तक और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक हर तरह के शैतान व जिन्नात व आसेब से हिफ़ाज़त में रहेगा।

हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ने की अजीब फ़ज़ीलत

एक वह शख़्स आलिम जिसका ऐतमाद व ऐतबार है उस ने बयान किया है और नीज़ अपनी बयाज़ मख़्सूस में तहरीर किया है कि जब रसूल करीम स0अ0व0 का इन्तकाल का वक़्त क़रीब था तो हज़रत मलकुल मौत अलै0 रूह निकालने लगे इस वक़्त हुज़ूर स0अ0व0 को ऐसा मालूम हुआ कि जैसे आप के सीने मुबारक पर पत्थर की भारी चट्टान गिरी हो। हुज़ूरे पाक स0अ0व0 ने हज़रत मलकुल मौत अलै0 से फ़रमाया कि ऐ मलकुल मौत क्या सब इन्सानों को रूह निकलने की इस क़दर तकलीफ़ होती है मलकुल मौत ने जवाब दिया जी हां। हुज़ूरे पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत तो बहुत कमज़ोर व ज़ईफ़ होगी, इतनी तकलीफ़ कैसे बर्दाश्त करेगी लिहाज़ा ऐ मलकुल मौत मेरी तमाम उम्मत की रूह निकलने की तकलीफ़ मुझ दे दीजिए ताकि मेरी उम्मत को रूह निकलने की तकलीफ़ न हो हज़रत मलकुल मौत अलै0 ने फ़रमाया कि या रसूल

अल्लाह स०अ०व० जो शख़्स आप की उम्मत में से हो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एक मर्तबा आयतुल कुर्सी पढ़ेगा तो इसकी रूह निकलने में इस क़दर आसानी व सहूलत होगी जैसे बच्चा अपनी मां का दूध पीते पीते सो जाये और मां इस सोते हुए बच्चे को अपने दूध से अलेहदा कर दे और बच्चे की नींद में कोई फ़र्क़ नहीं आता है। बिल्कुल इसी तरह से हर इस मोमिन की रूह निकलेगी जो फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ेगा।

ज़रूरी नोटः— इस हदीस का हवाला मेरे पास नहीं लेकिन मोतबर ज़राये से इस का इल्म हुआ है और लगता है कि कहीं ऐसा न हो مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّداً فَلْيَتَبَوَّءْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ इसी बिना पर अगर सही है तो अल्हमदु लिल्लाह और अगर ग़लत है तो मेरी जानिब से है। अहले इल्म हज़रात इसकी तहक़ीक़ फ़रमायेंगे और मुझे भी इससे मुत्तलेअ फ़रमायेंगे हवाले के साथ।

आयतुल कुर्सी की अज़मत

हदीस शरीफ़ में है कि आयतुल कुर्सी अर्श के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है। जब आयतुल कुर्सी नाज़िल हुई तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इसको लेकर आये और हदीस शरीफ़ में है कि कुराने करीम की तमाम आयतों में से सबसे अज़ीम आयतुल कुर्सी है।

ज़रूरी हिदायतः— बअज़ अच्छे पढ़े लिखे लोगों का ऐतक़ाद है कि आयतुल कुर्सी خَالِدُوْنَ रुकूअ तक है। हालांकि ऐसी बात नहीं है। बल्कि आयतुल कुर्सी एक आयत है और वह اَلْعَلِيُّ الْعَظِيْم तक है। इस का ख़्याल रहे।

मन्ज़िल के बारे में कुछ तआर्रुफ़

पीछे ज़िक्र किया जा चुका है कि मन्ज़िल हर आमिल को अपने पास रखनी चाहिए और हर मरीज़ को रोज़ाना इसका विर्द रखना ज़रूरी और बहुत ज़रूरी है। अल्लामा मुहम्मदेन सीरीन रह० ताबेअ हैं

वह फ़रमाते हैं कि एक सफ़र में चन्द आदमी मुल्क शाम के एक गांव में पहुंचे। इन मुसाफ़िर चन्द आदमियों के पास एक क़ौम के लोग आये और बताया कि जो कोई इस गांव में ठहरता है वह मारा जाता है (क़त्ल कर दिया जाता है) और इसका माल व जान सब ख़त्म कर दिया जाता है और लूट लिया जाता है। ये बात सुनकर हमारे सफ़र के सब साथी ख़ौफ़ और डर की वजह से चले गये मगर मैंने वहीं पर क़याम किया। इसलिए कि मैंने ये चन्द आयतें इब्ने उमर रज़ि० से सुनी थीं कि हुज़ूरे पाक स०अ०व० ने फ़रमाया कि कलामुल्लाह शरीफ़ की तैंतीस आयतें ऐसी हैं कि जो कोई इनको पढ़ेगा तो इस रात में कोई दरिन्दा और कोई चोर और जिन व शैतान इसको तकलीफ़ नहीं पहुंचा सकेगा। इन तैंतीस 33 आयतों को तिलावत करने वाला रात से लेकर सुबह तक अपनी जान व माल औलाद और सब साज़ो सामान की तरफ़ से हिफ़ाज़त में रहेगा। अल्लामा मुहम्मद इब्न सीरीन रह० फ़रमाते हैं कि मुझे इस मक़ाम पर रात हो गयी तो मैंने इन तैंतीस आयतों को तिलावत किया। अभी में जाग ही रहा था कि अचानक कुछ लोगों को देखा कि वह सब के सब तलवारें पकड़े हुए मेरे पास आ गये और बिल्कुल मेरे क़रीब हो गये मगर मुझे कुछ न कह सके और न कर सके जब सुबह हुई तो मैंने इस मक़ाम से आगे को सफ़र का इरादा किया। चलते वक़्त एक बूढ़ा शख़्स मेरे क़रीब आया और वह घोड़े पर सवार था। इसके पास उमदा क़िस्म की तीन कमान थी, और वह मुझ से ये कहने लगा ऐ शख़्स तो इन्सान है या जिन। मैंने जवाब दिया कि मैं इन्सान हूं तो इस बूढ़े घोड़े सवार ने कहा कि तेरा अजीब हाल है। हम लोग तेरे पास रात में सौ मर्तबा से भी ज़्यादा आये ताकि तुझे हलाक कर दें, और तेरा सब माल व दौलत सब छीन लेवें मगर जब हम तेरे पास तक आये तो तेरे और हमारे दर्मियान लौहे की दीवार आड़ हो जाती

थी। इससे हमें बड़ा तअज्जुब है। अल्लामा मुहम्मद इब्न सीरीन रह० फ़रमाते हैं कि मैंने जवाब दिया कि मैंने हज़रत इब्न उमर रज़ि० से एक रिवायत सुनी कि रसूल अल्लाह स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया है कि जो शख़्स कुराने करीम की तैंतीस 33 आयतें रात को पढ़ लेवे तो इसको इस रात कोई तकलीफ़ देने वाला जानवर और कोई चोर व ज़ालिम तकलीफ़ नहीं दे सकता और सुबह तक महफ़ूज़ रहेगा। ये बात सुनते ही इस डाकू बूढ़े घोड़े सवार ने अपने तीन कमान फेंक दिये और मेरे सर का बोसा लिया और उसी वक़्त इसने अहद कर लिया कि अब कभी चोरी डाका ज़नी लूट मार नहीं करूंगा। इन तैंतीस आयतों में सौ बड़ी बीमारियों से निजात व शिफ़ा है, जैसे जज़ाम, बरस, जिनों, फ़ालिज वग़ैरह जो शख़्स इन आयतों को किसी ज़ालिम शख़्स के सामने पढ़ेगा तो इसके ज़ुल्म व सितम से महफ़ूज़ रहेगा। ये तैंतीस आयतें ऐसी हैं कि इनके पढ़ने से आसेब, जिन, दरिन्दा, चोर और हर किस्म की बला व आफ़त ख़त्म हो जाती है। अगर किसी शख़्स पर जिन्नात व आसेब वग़ैरह का असर हो तो इसे सामने बिठा कर ये तैंतीस आयतें और तीन सूरतें पढ़ कर दम कर दें। उन्हें तैंतीस आयतों को मन्ज़िल के नाम से कहते हैं और मुफ़ीद व मुअस्सर हैं। ख़ुद हमारे घरों की औरतों सुबह व शाम इस मन्ज़िल को पढ़ कर अपने बच्चों पर दम करती हैं और अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में देती हैं। बच्चों के भी हर शिकायत में ख़ूब हैं।

(रूमी मिनल असार)

अगर किसी पर जिन्नात व शयातीन आशिक़ हो गये हों

अगर किसी शख़्स पर जिन्नात व आसेब आशिक़ व दीवाना हो गये हों और इस की ज़िन्दगी को बेकार बना दिया हो तो इस हालत में सबसे पहले मरीज़ का नमक बिल्कुल बन्द करा दें और गले में नक़्शे अली रज़ि० डालें और सुबह व शाम मन्ज़िल पढ़कर दम कर

दिया करें और पीने के लिए—

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ (السَّمَاءِ) وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ. اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰکُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّکُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ فَتَعَالَی اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْکَرِیْمِ وَ مَنْ یَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الْکَافِرُوْنَ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرَّاحِمِیْنَ. (پ۱۸)

इन्शा अल्लाह तआला ज़रूर नफ़ा पायेंगे। ऐसे हालात में इस नुस्ख़े का ज़रूर इस्तेमाल करें। अललाह तआला फ़ायदा देने वाले हैं और गले मे तावीज़ हर वक़्त गले में पड़ा रहना ज़रूरी है और गुस्ल का तावीज़ दें और एक चिल्ला इलाज करें और इलाज के दर्मियान शहर में से बाहर न जायें इन्शा अल्लाह बिल्कुल छुटकारा हो जायेगा। (सही मुजर्रबात)

अगर किसी घर में जिन्नात व शयातीन का असर हो

अगर किसी घर मकान वग़ैरह मे जिन्नात व शयातीन का असर हो तो इस घर में चालीस दिन सूरे बक़रा मुसलसल इतनी आवाज़ से पढ़ी जाये कि घर घर में ही आवाज़ रहे। इन्शा अल्लाह इस अमल से सब दफ़ा हो जायेगा ये इलाज हदीस के मुताबिक़ भी है और बहतर है कि मन्ज़िल का दम किया हुआ पानी घर की चारों तरफ़ दीवारों पर छिड़क दें। मुजर्रब व आज़मौदा है।

अगर किसी पर आसेब का असर हो

अगर किसी पर आसेब का असर हो जो कि मुस्तक़िल रहता हो तो चाहिए कि एक सफ़ेद कागज़ पर ये अल्फ़ाज़ लिखें और मोम जामा करके गले में डाल दें। इन्शा अल्लाह हमेशा के लिए निजात मिल जायेगी। मुजर्रब व आज़मौदा हैं। अल्फ़ाज़ ये हैं—

بسم اللہ الذی لا یضر مع اسمه شئ فی الارض ولا فی السماء وهو السمیع العلیم الٓمٓ صٓ الٓمٓر طٰهٰ طٰسٓمٓ یٰسٓ والقران الحکیم حٰمٓ عٓسٓقٓ حٰمٓ حٰمٓ

حٰمٓ حٰمٓ حٰمٓ حٰمٓ قٓ نٓ والتعلم وما يسطرون.

शदीद क़िस्म के आसेब के लिए

अगर किसी पर शदीद क़िस्म का पुराना आसेब का असर है जिसकी वजह से इसकी ज़िन्दगी तबाह हो रही हो तो चाहिए इन आयतों को पढ़कर 3–3 मर्तबा कानों में भी दम करें और इसी को पढ़कर पानी पर दम करके पिलायें इन्शा अल्लाह सख़्त से सख़्त क़िस्म का आसेब फ़ौरन पीछा छोड़ देगा और ये अमल बहुत मर्तबा तजुर्बे में आया हुआ है। आयात ये हैं–

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثاً وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ فَتَعَالَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقِ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْم. وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهاً اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُوْنَ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَداً ثُمَّ اَنَابَ.

अब ज़्यादा अच्छा होगा कि फ़लीता भी इस्तेमाल करें इस अमल से ये शिकायत बिल्कुल ख़त्म हो जायेगी। इन्शा अल्लाह मुफ़ीद पायेंगे।

हर आमिल के लिए ख़ास ज़रूरी बात

जिन्नात व आसेब के मरीज़ के लिए जो भी नक़्श व तावीज़ या फ़लीता आमिल बनाये तो ग़ायबाना बनाये मरीज़ के सामने न बनाये। इससे नुक़सान उठा सकता है। हर आमिल को ये बात ख़ास तौर पर ख़्याल रखनी चाहिए। (मुजर्रबात सही)

तमाम क़िस्म की बीमारियों और आसेब और नज़रे बद के लिए ख़ास तौर पर जादू के दफ़ा के लिए

ये अमल हर क़िस्म की बीमारियों के लिए मुजर्रब है मगर जादू तोड़ने के लिए इसको ख़ास दख़ल हासिल है और इसकी सनद बहुत ऊंची है। जादू किये हुए शख़्स पर अगर ये अमल इस्तेमाल

किया जाये तो इन्शा अल्लाह तआला बे इन्तेहा मुफ़ीद पायेंगे। मरीज़ को शिफ़ा हासिल होगी। ये अमल बहुत से तरीक़ों से हासिल हुआ है। ख़ास तौर पर शाह अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस जलील मुदज़िल्लहु आली से मिला हैं और ये अमल एक अ़जीब व ग़रीब करिश्मे का अमल है। लोगों को चाहिए कि इस अमल से ज़रूर फ़ैज़ उठायें और ये अमल बहुत सी मर्तबा का मुजर्रब व आज़मौदा भी है। अमल ये है कि सात बेरी के हरे पत्ते लेकर पीस डालें। यानी किसी पत्थर ईंट वग़ैरह से ज़रा चोट मार दें और चोट मारते वक़्त सात मर्तबा आयतुल कुर्सी पढ़कर इन पत्तों पर दम कर दें और फिर इन सातो पत्तों को नहाने वाले पानी में डालें और मुअ़व्वज़तीं यानी कुल अऊजु बिरब्बिल फ़लक़ और कुल अऊजु बिरब्बिन नास आख़िर तक सात सात मर्तबा पढ़कर दम करें और पानी हाथ से हिलाते रहें फिर इस पानी से मरीज़ ग़ुस्ल करे सात दिन तक इन्शा अल्लाह ज़रूर कामयाब होगी। बिइज़्निही वतआला (मुजर्रबात शेख़)

जादू ख़त्म करने के लिए मुजर्रब व आज़मौदा अमल

ये अमल हमारे तमाम अकाबिरीन व उलमा कराम का तजुर्बा शुदा है और इस अमल से ज़बरदस्त से ज़बरदस्त क़िस्म का जादू ख़त्म हो जाता है और अहले इल्म हज़रात ने इस अमल को अपनी मख़्सूस बयाज़ में तहरीर फ़रमाया है। जादू किये हुए हज़रात इस अमल को इख़्तियार करके फ़ायदा उठायें। अल्लाह शिफ़ा बख़्शने वाला है और वही सब का मुरब्बी है। अमल ये है बहती दरिया या नहर का या फिर सात कुंवों का पानी तीन किलो लेवें और सब पर ग्यारह ग्यारह मर्तबा मअव्वज़तीन (फ़लक़ व नास) पढ़कर दम करें, और ग्यारह मर्तबा आयाते जादू पढ़कर दम करें इस तरह पर कि थूक की छींटें इसमें पड़ जावें आयाते जादू ये हैं–

فَلَمَّا اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرِ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صَاغِرِيْنَ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِيْنَ قَالُوْا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ رَبِّ مُوْسٰى وَهَارُوْنَ اِنَّ مَا صَنَعُوْا كَيْدُ سَاحِرٍ وَّلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ط

इस पानी से ढाई सौ 250 ग्राम पानी सुबह से शाम तक पी लें और बाक़ी पौने तीन किलो सर पर डाल कर ग़ुस्ल करें। 40 दिन तक और ये अमल इतवार के दिन से शुरू करें। इन्शा अल्लाह इस अमल से जादू वाले मरीज़ का जादू बिल्कुल ही मिट जायेगा। मुजर्रब है।

जादू के ख़त्म करने का एक अनौखा अकसीर अमल

ये अमल अजीब करिश्मा का अमल है। अल्लाह के हुक्म से इस अमल के ज़रिये फ़ौरन शिफ़ा हासिल होती है। देर और वक़्त कुछ नहीं है। हाथ के हाथ इसी दम इसका जादू इस अमल के जरिये मिट जाता है। ये अमल गोया कि एक क़िस्म का छुपा हुआ राज़ और भेद है। जिस इन्सान पर जादू हो इसको ही चाहिए कि इतवार के दिन सूरज निकलने के वक़्त नंगे पैर कच्ची ज़मीन पर खड़ा हो जाये और सात मर्तबा मुअव्वज़तीन (फ़लक़ व नास) पढ़ें। अव्वल व आख़िर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लें। इस तरह करने से मरीज़ का जादू इसके पैरों में आ जायेगा फिर मरीज़ अपने दोनों पैरों की मिट्टी यानी ज़मीन के मिट्टी उखेड़ कर एक दहकती हुई कोयलों की अंगीठी में फ़ौरन इसी वक़्त डाल दे। इन्शा अल्लाह फ़ौश्रन इसी लम्हे जादू का असर ख़त्म हो जायेगा लेकिन शर्त ये है कि अमल मुकम्मल सूरत निकलने से पहले ख़त्म हो जाये, और ये दो तावीज़ किसी अच्छे मुत्तक़ी आलिम से लिखवा कर मोम जामा करके गले में डाल लें।

بسم الله الرحمن الرحيم

1323	1327	1330	1316
1329	1317	1322	1328
1318	1332	1325	1331
1326	1323	1319	1331

بسم الله الرحمن الرحيم

2169	2172	2175	2161
2174	2162	2168	2173
2163	2177	2170	2167
2171	2166	2164	2176

इलाज मुकम्मल हो गया। एहतियात के तौर पर फ़ज्र व मग़रिब के बाद मुअ़व्वज़तीन 3–3 मर्तबा पढ़कर पूरे बदन पर दम कर लिया करें। अल्लाह ही के हाथ में हर क़िस्म की ख़ैर है।

जादू वाले मरीज़ का एक और इलाज

ज़िस इन्सान पर जादू किया गया हो ख़्वाह वह मर्द हो या औरत मुस्लिम हो या गै़र मुस्लिम तो इसके लिए चाहिए कि अजवा खजूरें ग्यारह अदद लेवें और हर खजूर पर सात सात मर्तबा मुअव्वज़तीन (फ़लक़ व नास) पढ़कर दम करें और एक एक ख़जूर सुबह ख़ाली पेट नहार मुंह खा लिया करें। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस अमल से हर क़िस्म का पुराने से पुराना जादू फ़ना हो जाता है और सख़्त से सख़्त क़िस्म का जादू ज़ाइल हो जाता है। ये अमल मुस्तनद और मुजर्रब है। (मुजर्रबात अकाबिर)

जादू तोड़ का एक और इलाज

जादू और शयातीन व जिन्नात और चोरों और दरिन्दों और मूज़ी जानवरों से हिफ़ाज़त के लिए ख़ास तौर पर जुमला क़िस्म के जादू और आम तौर पर आफ़ात बलयात से हिफ़ाज़त के लिए सुबह व शाम फ़ज्र व मग़रिब के बाद एक मर्तबा मन्ज़िल (जिस का तफ़सीली तज़करा पीछे गुज़र चुका है) का पढ़ना बहुत ही ज़्यादा मुफ़ीद है। यक़ीन के साथ इन तैंतीस आयतों से ज़रूर फ़ायदा उठायें। अल्लाह ही शिफ़ा बख़्शने वाला है और वही तमाम कामों का कारसाज़ है। (मुजर्रबत सही)

जिस शख़्स पर जादू कर दिया गया हो और वह इलाज से मायूस हो

हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रह० फ़रमाते हैं कि जिस पर जादू का असर हो और वह मरीज़ इन्सान जिसको हकीम व तबीबों ने इलाज करने से मायूस व ना उम्मीद कर दिया हो तो इसको चाहिए कि चीनी के सफ़ेद बर्तन मे ये कलिमात लिखे ياحی حین لاحی فی ویھومة ملکه وقائه یا حی یاحی یاحی इन कलिमात के साथ अलहम्द शरीफ़ और ज़्यादा मिला ले तो और अच्छा होगा और सुबह को चालीस दिन लिख कर चालीस दिन पीवे मुजर्रबात में से है। (मुजर्रबाते अकाबिर)

जादू की वजह से किसी औरत की कोंख बन्धवा दी गयी हो जिसकी वजह से औलाद से महरूमी हो

अगर यही शिकायत मर्द को हो तब भी या औरत को हो तब भी या दोनों को हो तब भी यानी जमा हमबिस्तरी पर क़ादिर न हों तो ऐसी सूरत में एक चाकू लेवे और इस पर ज़ाफ़रान या रोशनाई से ये अल्फ़ाज़ लिखे بکم لا لا رم ما ما لا لا لا ہ ہ ہ ہوھوھو फिर इस चाकू से काली मुर्गी वरना तो लाल मुर्ग़ी का अण्डा उबाल कर दर्मियान में से

काटे आधा अण्डा शोहर आधा अण्डा औरत खाये और सात दिन इस अमल को करें। इन्शा अल्लाह तआला कोंख बन्दी ख़त्म हो जायेगी, और कुदरत हासिल होगी। बिइज़निल्लाह तआला।

जादू उतारने का एक मुजर्रब इलाज

जिस पर जादू का असर हो इसके लिए इस तावीज़ को दो अदद एक पीने के लिए एक गले में डालें। पीने के लिए तावीज़ को ज़ाफ़रान से लिखकर रोज़ाना सुबह नहार मुंह पानी से धोकर 21 दिन मरीज़ को पिलायें, और नमक बिल्कुल ही बन्द कर दें, और गले में भी इसी तावीज़ को लिखकर मोम जामा करके डाल दें। इन्शा अल्लाह तआला ये इलाज मुफ़ीद पायेंगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

21567	21562	21569
21568	21566	21564
21563	21570	21568

जादू से शिफ़ा के लिए मुस्तनद इलाज

रिवायत किया है इब्ने हातिम ने और अबू शेख़ ने लेस बिन अबी सलीम से, वह फ़रमाते हैं कि मुझे मोतबर ज़राये से ये बात मालूम हुई कि कुरान करीम की ये आयतें अल्लाह तआला के हुक्म से जादू से शिफ़ा हैं कि इन आयतों को पढ़कर पानी पर दम करके मअ लुआब के वह पानी जादू किये हुए शख़्स के सर पर डालें मगर ये बात याद रहे कि ये पानी बदन पर ही रहे ज़मीन पर नीचे न गिरे और अगर इन्हीं आयतों को लिख कर और पानी में हल करकेयानी घोलकर जादू किये हुए शख़्स को पिलाया जाये तो बहुत जल्द शिफ़ा हासिल होती है। अल्लाह के हुक्म से आयतें ये हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. فَلَمَّا اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَاجِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ فَغُلِبُوْا هنالك والقلبوا صاغرين والقى السحرة ساجدين قالوا امنا برب العالمين رب موسىٰ وهارون ان ما صنعوا كيل ساحر ولا يفلح الساحر حيث اتى شرح كتاب التوحيد فتح المجيد. ص ٢٦١

जादू के तोड़ का एक और अमल

इब्न वताल से (हब बन मन्बा) किताब का नाम है इस मे लिखा है कि सात बेरी की हरी पत्ती लेवे और उन्हें कुछ थोड़े कुचल लेवे। फिर इनको पानी में मिला लिया जाये और आयतुल कुर्सी और चारों कुल शरीफ़ 7–7 मर्तबा पढ़कर दम करें इस पानी में से बर्तन घूंट पी लेवें और बचे हुए पानी से ग़ुसल कर लेवें इस अमल से वह तमाम जो इसके बदन में होगा। जादू, आसेब, जिन्नात का असर और बीमारियां सब ख़त्म हो जायेंगी।

ख़ुशख़बरी:– और ये अमल इस मर्द के लिए भी बहुत उम्दा है जो अपनी बीवी पर क़ादिर होने से मजबूर हो या ये कि ख़्वाहिश ज़ौजियत इसके मिट गयी हो। फ़तहुल मजीद शरह किताबुत तौसीद स.461।

हर क़िस्म के जादू से निजात हासिल करने के लिए सब से अज़ीमो शान अमल

किसी भी क़िस्म का जादू हो और कितना भी पुराना हो हर तरह के जादू तोड़ के लिए मुअव्वज़तीन यानी फ़लक़ व नास सूरतों से बढ़कर नहीं है, क्योंकि यही दो सूरतें जनाब रसूल अल्लाह स0अ0व0 पर रब्बुल आलमीन ने आसमान से उतारी थीं जबकि ज़ालिमों ने रहमतुल लिलआलमीन स0अ0व0 पर जादू किया था। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर जादू मुसलसल कई महीने रहा,

और आप स0अ0व0 को शदीद किस्म की तकलीफ़ रही मर्ज़ समझ में नहीं आ सका तो छ महीनें के बाद आप स0अ0व0 को ये दो सूरतें ख़्वाब में बशारत की गयीं। आप स0अ0व0 ने अपने जादू के तोड़ के लिए इन दो सूरतों का इस्तेमाल फ़रमाया (इसकी तफ़सीर कुराने करीम में देखें) रहमतुल लिल आलमीन को रब्बुल आलमीन ने इन दो सूरतों के ज़रिया शिफ़ा बख़्शी। इसका तरीक़ा ये कि फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ के बाद 7–7 सात सात मर्तबा पढ़कर अपने पूरे बदन पर दम कर लिया करें। यही दो सूरतें हिफ़ाज़त का क़िला भी हैं। हिफ़ाज़त के तौर पर भी इनका इस्तेमाल बहुत मुफ़ीद है बल्कि उलमा कराम ने ये लिखा है कि अगर इन दो सूरतों को सात सात मर्तबा फ़ज्र व मग़रिब के बाद दम करके इस्तेमाल करें तो जादू करने वाले शख़्स पर ख़ुद उलट जायेगा। इन दो सूरतों को इस्तेमाल करने वाले शख़्स पर जादू असर नहीं करता। (मुजर्रबाते उस्ताज़)

एक अजीब ग़ौर व फ़िक्र

हमारी इस किताब में भी और बहुत से मक़ामात पर आप देखेंगे कि सात सात अदद की बहुत रिआयत की है कि 7 अदद का इस्तेमाल बहुत है। मेरा अक़ीदा है कि सात के अदद में ख़ैर बहुत है। दलील इसकी ये है कि अल्लाह तआला ने भी सात अदद को बहुत इस्तेमाल फ़रमाया है। जैसे अल्लाह पाक ने दिन भी सात बनाये उलुल अज़्म पैग़म्बर भी सात हैं। आसमान भी सात हैं। ज़मीनें भी सात हैं। कुराने करीम की मन्ज़िलें भी सात हैं। अलहम्द शरीफ़ जो कि उम्मुल कुरान यानी कुरान की मां है, इसकी आयतें भी सात हैं। मशहूर दरिया सात हैं। मशहूर सितारे भी सात हैं। ख़ाने काबा के तवाफ़ के चक्कर भी सात हैं। रमी शैतान के फेंक कर मारे जाने वाली कंकरियां भी सात हैं। मदीने के मशहूर फुकहा भी सात हैं। जिनका नाम लिखकर ग़ल्ले में रखने से ग़ल्ले की हिफ़ाज़त होती है।

जिन का तज़करा आयेगा। असहाबे कहफ़ भी सात हैं। जिनका नाम भी हिफ़ाज़त के लिए इस्तेमाल करें। लिहाज़ा सात के अदद का इस्तेमाल बहुत अच्छा है। सफ़ा व मरवा के दर्मियान दौड़ भी सात हैं। इन्सान के अशरफ़ुल अज़ा चेहरे में भी सात सुराख़ हैं। दो कान के, दो नाक के, दो आंखों के एक मुंह। सजदे भी सात हैं। सात आज़ा के साथ किया जाता है। रोज़े के भी सात आदाब हैं। अर्श के साये में जगह जिन लोगों के मिलेगी वह भी सात अशख़ास होंगे। हज़रत अय्यूब अलै0 अल्लाह की हिकमत व मसलहत से सात साल तक बीमारी मे रहे। जहन्नम के भी सात नाम हैं। जहन्नम के तबक़े भी सात हैं। शरीअ़त में बच्चे को भी सात साल की उम्र में नमाज़ पढ़वाने का हुक्म दिया गया है। शैतान की पैरवी करने वाले भी सात क़िस्म के हैं। हज़रत यूसुफ़ अलै0 भी अल्लाह की हिकमत व मसलेहत से सात साल जैलख़ाने में रहे। सूरे यासीन में मुबीन भी सात हैं। जिनकी ख़ूबियां आप आगे चल कर देखेंगे, इन्शा अल्लाह तआ़ला।

अल्लाह तआ़ला जहन्नम पर भी सात पुल बिछायेंगे। जिनको पुल सिरात कहते हैं। हज़रत मूसा अलै0 की लाठी में भी सात ख़ुसूसियते थीं। (1) जब हज़रत मूसा अलै0 सफ़र में होते तो आप का असा (लाठी) मूसा अलै0 से गुफ़्तगू करते हुए चलती थी। (2) जब हज़रत मूसा अलै0 को भूख लगती और खाने के लिए कोई चीज़ न होती तो मूसा अलै0 असा को ज़मीन पर मारते थे इससे एक दिन की ख़ुराक निकल आती थी। (3) जब हज़रत मूसा अलै0 को प्यास लगती थी तो लाठी को ज़मीन में गाड़ते थे कि इससे पानी निकलना शुरू हो जाता था, और जब लाठी को निकाल लेते थे तो रूक जाता था। (4) जब फल खाने की चाहत होती तो अपने असा को ज़मीन में गाड़ देते थे कि फ़ौरन ही इसमे पत्ते लग जाते थे और फल भी

आ जाते थे। (5) जब कुंऐ से पानी निकालने की ज़रूरत पेश आती तो आप का असा डौल का काम देता था और कुंऐ की लम्बाई के बराबर लम्बा हो जाता था और डौल की शक्ल के दो बर्तन हो जाते थे। (6) रात के अंधेरे में इस असा से रोशनी निकलती थी। (7) जब कोई मुख़ालिफ़ मुक़ाबिल आता था तो ये असा ख़ुद से लड़कर दुशमन से मुकाबला करता था और सूरे यासीन शरीफ़ में भी सात मुबीनीन हैं जिनकी तासीर रिज़्क़ की बरकत के बाब में आप मुतालेआ फ़रमायेंगे। हज़रत मूसा अलै0 को तौरेत किताब अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई थी। वह भी ज़हर जद की सात तख़्तियों पर तहरीर थी। मैराज की शब में रसूल अल्लाह स0अ0व0 के बैयतुल मुक़द्दस में इमामत करने की हालत में मुक़तदी होने की हालत में नबियों और रसूलों की सफ़ों की तादाद भी सात थीं (जलालैन) हज़रत आदम अलै0 के इन्तक़ाल पर ज़मीन और आसमान और बाक़ी मख़्लूक़ ने भी सात दिन तक अफ़सोस किया था। (अल बदाया वन नहाया)

हर क़िस्म के पुराने अमराज़ से शिफ़ा के लिए

ये अमल अल्लामा दैरेबी रह0 ने अपनी किताब में तहरीर फ़रमाया है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया जो कोई बारिश का पानी लेकर इस पर सत्तर मर्तबा अलहम्द शरीफ़ सत्तर आयतुल कुर्सी. सत्तर मर्तबा सूरे अख़्लास सत्तर मर्तबा मुअव्वज़तीन (फ़लक़ व नास) पढ़कर दम करे क़सम है इस बुज़ुर्ग ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है। हमेशा जिब्राइल अलै0 मेरे पास आये और मुझे ख़बर दी इस बात की कि जो मरीज़ इस दम किये हुए पानी कोसात दिन सुबह नहार मुंह पी लिया करेगा तो हक़ तआला जल शानहु इस मरीज़ से जितने मर्ज़ व बीमारियां होंगे इसके बदन में वह सब दूर कर देगा और इसको तंदुरुस्ती अता फ़रमायेगा और सारी बीमारियों को इसकी रगों से और गोश्त से और हड्डियों से और इसके तमाम

आज़ा से निकाल देंगे। ये ऊपर वाला अमले मख़्सूस मख़्सूस अमल है।

अज़ीमुश शान अमल हर क़िस्म के मर्ज़ का कि वह किसी भी तरह का हो

फ़रमाया रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने जो शख़्स बीमार हो तो पाक व साफ़ पानी पर सूरे फ़ातिहा पढ़ी जाये और आयतुल कुर्सी और मुअव्वज़तीन (फ़लक़ व नास) इन सब को इकहत्तर मर्तबा पढ़े और दम कर दे और वह पानी मरीज़ को नहार मुंह पिलाया जाये तो अल्लाह तआला हर बला से आफ़ियत में रखेगा। (मुजर्रबात दैरनी)

एक बेश बहा क़ीमती नक़्श मुबारक कि जिसके मुक़ाबला मे कोई दूसरा नक़्श नहीं आ सकता

मुहद्दिस हाफ़िज़ तलमीसाई किताबुल मुताहाल फ़ी मदह ख़ैरुल नआल में फ़रमाते हैं कि इस नक़्श मुबारक के मुनाफ़े ऐसे खुल्लम खुल्ला हैं कि बयान की ज़रूरत नहीं, इन फ़ायदों में से एक ये है। अबू जाफ़र रह0 कहते हैं कि मैंने एक तालिब इल्म के लिए ये नक़्श बनवा दिया था। वह मेरे पास आकर कहने लगा कि मैंने गुज़िश्ता रात में इसकी अजीब बरकत देखी कि मेरी बीवी के इत्तफ़ाक़न ऐसा सख़्त दर्द हुआ कि क़रीब हलाकत के पहुंच गयी। मैंने ये नक़्श शरीफ़ दर्द की जगह पर रख कर अर्ज़ किया कि या इलाही मुझ को साहब फ़अल की बरकत से दिखाइये। अल्लाह तआला ने इसी वक़्त शिफ़ा इनायत फ़रमायी। क़ासिम बिन मुहम्मद का क़ौल है कि इसकी आज़माई हुई बरकत ये है कि जो शख़्स तबर्रुकन इसको अपने पास रखेगा। ज़ालिमों के ज़ुल्म से दुशमनों के ग़ल्बे से शैतान सरकश से हासिद की नज़रे बद से अमन व अमान मे रहेगा और अगर हामला औरत बच्चे की पैदाइश के दर्द की शिद्दत में इसको अपने दाहिने हाथ में रखे बफ़ज़लिही तआला इसकी मुश्किल आसान हो। शेख़

इब्न हबीबुन नबी रिवायत करते हैं कि इनके एक दुमबल निकला कि किसी की समझ में नहीं आता था। निहायत सख़्त दर्द हुआ। किसी तबीब की समझ में इसकी दवा न आयी। उन्होंने ये नक़्श शरीफ़ दर्द की जगह रख लिया फ़ौरन ऐसा सुकून हो गया कि गोया कभी दर्द ही न था एक असर ख़ुद मेरा यारी साहब फ़तहुल मुतआल का मशाहदा है कि एक बार सफ़र दरियाए शोर का इत्तफ़ाक़ हुआ। एक दफ़ा ऐसी हालत हुई कि सब हलाकत के क़रीब हो गये। किसी को बचने की उम्मीद न थी। मैंने ये नक़्श कश्ती चलाने वाले के पास भेज दिया कि इससे तवस्सल करे। इसी वक़्त अल्लाह तआला ने आफ़ियत अता फ़रमायी। मुहम्मद इब्न जबनररी से मन्क़ूल है कि जो शख़्स इस नक़्श शरीफ़ को अपने पास रखे मख़्लूक़ में मक़बूल रहे और पैग़म्बर स0अ0व0 की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हो और ये नक़्श शरीफ़ जिस लशकर में हो इसको शिकस्त न हो और जिस क़ाफ़ला में हो लूट मार महफ़ूज़ रहे। जिस असबाब में हो चोरों का इस पर क़ाबू न चले जिस कश्ती में हो ग़र्क़ होने से बचे। जिस हाजत में इससे वसीले पकड़े वह पूरी हो।

नोटः– इस नक़्शे शरीफ़ को अदब व एहतियात से रखें। मगर ऐसा ग़लू न करें कि ख़िलाफ़े शरअ कोई बात हो जाये और इसको वसीला बरकत व मुहब्बत समझें या न हो कि तमाम एहकाम दीन व आमाल ख़ैर को
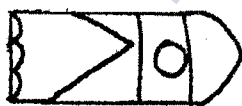
रूख़सत करके इस पर इकतफ़ा करें। याद रे कि ये नक़्श शरीफ़ जनाब मुहम्मद रसूल अल्लाह स0अ0व0 का है। जिसकी ख़ूबियां ये ऊपर बयान हुईं। (बहवाला ज़ादुल मसलीब)

शदीद बीमारियों के वास्ते

जो लोग अपनी बीमारियों में इलाज व दवा दारू से मायूस हो

गये हों तो इनके वास्ते ये अमल मुफ़ीद साबित हुआ है कि किसी कागज़ या पलेट पर जो कि सफ़ेद हो मुकम्मल सूरे फ़ातिहा बिस्मिल्लाह के साथ लिखें और आख़िर में ये लिखें ياحي حين لاحي في ديمومة ملكه وَبقائه ياحي ياحي ياحي अगर मर्ज़ ज़्यादा पुराना हो तो इक्कीस दिन वरना अगर मर्ज़ पुराना हो तो इकतालीस दिन सुबह नहार मुंह ज़मज़म या बारिश के पानी से धोकर पिलायें। इस अमल को पूरे ऐतक़ाद के साथ इख़्तियार करें और करायें। इन्शा अल्लाह तआला ज़रूर फ़ायदा होगा। (मुजर्रबात शेख़)

तमाम क़िस्म की बीमारियों के दफ़ा के लिए

फ़ज्र की सुन्नत व फ़र्ज़ों के दर्मियान ग्यारह मर्तबा सूरे फ़ातिहा बारिश के पानी पर दम करके मरीज़ को पिलाया जाये और मज़ीद इस पानी को शहद से मीठा कर लिया जाये। चालीस दिन ऐसा ही करें यानी पिलायें मुसलसल इन्शा अल्लाह क़वी ज़रूर सुकून व सलामती मिलेगी।

बराए इमसाक

इमसाक के वास्ते ये तावीज़ कमर में बांधें इन्शा अल्लाह अल फ़ताह फ़ायदा होगा।

नक़्श

د	ص	ط	لی	د	37	42	35	۹ع اك د	۱۸۳	۹۹۸۸	۲۱۱۱۱۱۱
ح	ر	ضلح	هو	د	36	38	40	القوی	القوی	القوی	القوی
ےھ	ر	ر	ء	لو	ول	۵ل	م	المتین	المتین	المتین	المتین
ر	ط	ر	ےح	ح	41	34	39	القوی	القوی	القوی	القوی

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهٖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا.

अजीब व ग़रीब फ़वाइद

हदीस शरीफ़ में है कि छींक आने पर अलहम्द लिल्लाह अली कुल हाल पढ़ेगा तो वह दर्दे कान दर्दे दाढ़ से महफ़ूज़ रहेगा। (अलहसन वल हुसैन)

जो कोई हर छींक बा डकार ले या डकार सुने फिर कहे अल्हम्दु लिल्लाह अली का हाल तो अल्लाह तआ़ला इस से सत्तर मर्ज़ दूर फ़रमा देंगे। जिन में सब से छोटा मर्ज़ जज़ाम है (ख़तीब) जो शख़्स छींकने वाले के अल्हम्दु लिल्लाह कहने से पहले अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला इसको दर्द कोख से महफ़ूज़ फ़रमायेंगे और वह कोई रंज न देखेगा। दुनिया से आख़िरत तक जाने तक (तिबरानी) जो शख़्स कोई बात कहे और छींक आ जाये तो इस बात हक़ होने की अलामत है (बहवाला बहीक़ी)

(बहवाला बहीक़ी, तिबरानी, हकीम तिर्मिज़ी, रक़या अहमदी वग़ैरह)

जो मुसलमान छींकने पस अलहम्दु लिल्लाह पढ़े तो अल्लाह तआ़ला इसकी बरकत से एक फ़रिश्ता पैदा कर देगा। जो क़यामत तक अल्लाह तआ़ला की हम्द बयान करेगा। (हाज़ा हदीस मतरूक अख़रजुल इमाम शुकानी)

जो कोई हर छींक सुनने के बाद अल्हम्द लिल्लाह अली कुल हाल पढ़ेगा तो वह शख़्स दर्दे कान व दाढ़ से महफ़ूज़ रहेगा। (बहवाला रबी इब्न अबी शीबा) (रक़या अहमदिया)

एक राज़ की बात

अगर कोई दुशमन हमेशा कुराने करीम की तिलावत करता रहे अगरचे क़लील पढ़ना अपनी आदत बना ले मगर पढ़े पाबन्दी के साथ तो वह शख़्स तो वह शख़्स बुढ़ापे की हालत में नहीं सटयायेगा बल्कि अक़्ल व शऊर व दानिशमंदी बढ़ती रहेगी। ये बात मुस्तनद व मुदल्लल है और मुजर्रब है।

हर बीमारी से शिफ़ा के लिए

रसूल अल्लाह स०अ०व० ने फ़रमाया कि कलौंजी में हर बीमारी

से शिफ़ा है। मौत के अलावा इसके इस्तेमाल का तरीक़ा ये है कि कलौंजी के इक्कीस दाने लेवें, और इस पर सात मर्तबा सूरे फ़ातिहा पढ़कर दम करके शहद में मिलाकर नहार मुंह इस्तेमाल करें। कलौंजी को पीसें नहीं एक चम्चा शहद हो चाट लें इन्शा अल्लाह ज़रूर कामयाबी मिलेगी। ये अमल हदीस शरीफ़ मुताबिक़ है और मुझे इस अमल की इजाज़त शेख़ अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिसे आज़म गढ़ी से हासिल है और मैं इस अमल की इजाज़त इस साहब किताब को दे रहा हूं।

नोटः– अगर किसी मक़ाम पर कलौंजी न मिले तो मुहम्मद अशरफ़ कहता है कि अजवायन ऊपर वाले तरीक़ा के मुताबिक़ इस्तेमाल में लायें इस अजवायत के बारे में रसूल अल्लाह स0अ0व0 का फ़रमाने साबित नहीं है। ऊपर वाले नुस्ख़े में तीन चीज़ें शिफ़ा की जमा हो गयी हैं। शहद से शिफ़ा का मिलना कुरान करीम से साबित है। कलौंजी से शिफ़ा का मिलना हदीस शरीफ़ से साबित है और सूरे फ़ातिहा का शिफ़ा वाला होता हदीस शरीफ़ से साबित है। इन्शा अल्लाह क़वी ज़रूर फ़ायदा होगा।

सख़्त क़िस्म की बीमारियों से शिफ़ा के लिए आयाते कुरानी

हज़रत शेख़ इमामे तरीक़त अबू क़ासिम क़शीरी रह0 फ़रमाते हैं कि मेरा एक बच्चा था जो बीमार हो गया था। बीमारी इस क़दर सख़्त हो गयी कि वह मरने के क़रीब हो गया। मैंने रसूल अल्लाह स0अ0व0 को ख़्वाब में देखा और हुज़ूरे स0अ0व0 से बच्चे का हाल कहा। आप स0अ0व0 ने जवाब से नवाज़ा कि तुम आयाते शिफ़ा से क्यों दूर रहते हो। क्यों इनसे फ़ायदा हासिल नहीं करते हज़रत अबू क़ासिम रह0 फ़रमाते हैं कि मैं नींद से बैदार हुआ और आयाते शिफ़ा से मुतअल्लिक़ ग़ौर व फ़िक्र करने लगा तो मैंने उन आयाते शिफ़ा

को कुराने करीम से छ जगह पाया और मैंने इन आयाते शिफ़ा को लिखा और पानी में घोलकर बच्चे को पिलाया। वह बच्चे पीते ही इसी वक़्त शिफ़ा पा गया जैसे कि इसके पांव से गिरे खोलदी गयी हो। वह आयाते शिफ़ा ये हैं–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم وَيَشْفِ صُدُوْرِ قومٍ مُّؤْمِنِيْن وشفاء لمافی الصدور يخرج من بطونها شراب مختلف الوانه فيه شفاء الناس واذا مرضت فهو يشفين قل هو للذين امنوا هدًى وَّ شفاء وَتنَزِّلَ مِنَ الْقُرْاٰنُ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرحمة لِّلْمُؤمِنين

(مجربات اکابر)

ज़बान की लुकनत दूर करने के लिए

जिसकी ज़बान में लुकनत और हकलापन हो तो इसके लिए 3 मर्तबा ये कलिमात किसी बर्तन में लिखकर उसे घोलकर पीने से बिइज़निल्लाह शिफ़ा हासिल होती है।

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِیْ وَيَسِّرْلِیْ اَمْرِیْ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ يَفْقَهُوْا قَوْلِیْ ياحی حين لا حی فی ديمومة ملكه وبقائه ياحی واجعل لی لسان صدق فی الاخرين.

इसको लिखकर शहद से मीठा करके 21 दिन पियें। बहुत मुजर्रब व आज़मौदा है अल्लाह शिफ़ा देने वाले हैं। (मुजर्रबात सही व मुजर्रबात उस्ताज़)

जिस औरत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों

जिस औरत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों तो इसके लिए चाहिए कि अजवायन और काली मिर्च कुछ मिक़दार में लेवें और पीर के दिन दोपहर के वक़्त चालीस मर्तबा सूरे वश शम्स पढ़ें इस तौर पर कि अव्वल आख़िर 11–11 मर्तबा दुरूद शरीफ़ हो और हर मर्तबा सूरत शुरू करने से पहले यानी दर्मियान मे दुरूद शरीफ़ भी एक मर्तबा पढ़ते जावें और इस अजवायन और काली मिर्चों पर दम भी

करते जावें फिर हमल की इब्तेदा से लेकर बच्चे के पैदा होने के बाद तक यानी बच्चे का दूध छुड़ाने तक हर दिन सुबह को औरत 3 दाने काली मिर्च और सात दोन अजवायन के खा लिया करें। अल्लाह ज़रूर फ़ज़ल फ़रमायेंगे। (मुजर्रबात अकाबिर)

इसी से मुतअ़ल्लिक़ दूसरा मुजर्रब तावीज़

इसी ऊपर शिकायत में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम इकसठ 61 मर्तबा लिख कर तावीज़ बना कर औरत अपने पास रखे बच्चे की पैदाइश के बाद बच्चे के गले में डाल दें। इन्शा अल्लाह बच्चे हिफ़ाज़त ऐज़दी में रहेंगे। मुजर्रब है।

जिसका दिमाग़ व हाफ़ज़ा कमज़ोर हो और इल्म की बात दिलजमी न होती हो

जिस शख़्स को कुरान करीम या हदीस शरीफ़ या कोई इल्मी बात महफ़ूज़ नहीं रह पाती कि इसके ज़ेहन व दिमाग़ से ओझल और भूल भुलैया हो जाती हो तो इसको चाहिए कि सोते वक़्त सीने पर सीधा हाथ रखकर इकयावन 51 मर्तबा ياعليم पढ़ा करे इन्शा अल्लाह अल अलीम हालत सुधर जायेगी और बहुत फ़ायदा पहुंचेगा। मुजर्रबात में से है। (मुजर्रबात उस्ताज़)

अजीब ख़ज़ाना

बहीक़ी और इब्न सनी और अबू उबैद रजि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रजि० से रिवायत की है कि उन्होंने एक मरीज़ के कान में कुछ कुरान पढ़ा पस वह सही और अच्छा हो गया तो रसूल अल्लाह स०अ०व० ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रजि० से फ़रमाया कि तुम ने इस मरीज़ के कान में क्या पढ़ा था। उन्होंने कहा कि ये आयतें पढ़ीं थीं।

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثاً وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لا تُرْجَعُوْنَ فَتَعَالَ اللّٰهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهاً اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ

فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُوْنَ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ. پ ١٨

पस फ़रमाया रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने कि अगर कोई मर्द यक़ीन के साथ यानी अच्छे मज़बूत ऐतक़ाद के साथ इन आयतों को पढ़े पहाड़ पर तो वह भी ज़रूर अपनी जगह से हट जाये। हदीस पूरी हुई।

फ़ायदा:– तासीर के यक़ीनी होने बतलाने का मक़सूद है यानी मुश्किल से मुश्किल काम इस की बरकत से हल हो जायेगा। (मुजर्रबात रक़्या अहमदी)

दिल की सख़्ती के वास्ते इलाज

मुस्तदरक में हज़रत अबू जाफ़र रजि0 मुहम्मद बिन अली रजि0 से रिवायत करते हैं कि जो इन्सान अपने दिल में सख़्ती पाये तो इसको चाहिए कि सूरे यासीन शरीफ़ ज़ाफ़रान से प्याले में लिखकर पी ले इन्शा अल्लाह ज़रूर दिल की सख़्ती दूर हो जायेगी और नर्मी पैदा होगी। दिल की सख़्ती निहायत ही बुरी चीज़ है इसका इलाज किसी वलीयुल्लाह शेख़ कामिल मअ़ तबीब रूहानी से उम्दा तौर पर करना चाहिए जैसे कि मर्ज़ जिस्मानी का इलाज अक्सर लोग डाक्टर व तबीब से कराते हैं।

अगर पांव सुन हो जाये तो क्या करे

जब किसी का पांव सुन हो जाये यानी सो जाये तो इसे चाहिए कि लोगों में से अपने सब से ज़्यादा प्यारे को याद करे इस रिवायत को इब्न सनी से रिवायत किया है और सब से ज़्यादा प्यारे व महबूब मुहम्मद रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ज़ाते गरामी है। हर मुसलमान के नज़दीक मतलब ये हुआ कि ऐसी हालत में आप स0अ0व0 पर दुरूद पढ़े पांव के सुन हो जाने पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने का हमेशा से तजुर्बा हासिल किया गया है कि बहुत जल्दी सुन ख़त्म हो जाती है।

अगर कान भिनभिनाये यानी आवाज़ करे तो क्या करे

अगर किसी का कान भिनभिनाये तो चाहिए कि हुज़ूरे पाक स0अ0व0 पर दुरूद शरीफ़ पढ़े और यूं कहे कि अल्लाह तआला याद करे भुलायी से इसको जिस ने मुझे याद किया इस रिवायत को भी इब्ने सनी से रिवायत किया है।

जब थकन हो जाये तो क्या करे

जब किसी को किसी काम करने से थकन हो जाये और काम करने की वजह से थक कर चूरम चूर हो जाये जैसे कि आम तौर पर मज़दूर मेहनत करने वाले हो जाते हैं। तो साते वक़्त अव्वल अल्लाह अक्बर 34 मर्तबा फिर सुबहानल्लाह 33 मर्तबा फिर अलहम्दु लिल्लाह 34 मर्तबा पढ़े। इस अमल को मुल्ला अली क़ारी रह0 ने मुजर्रब व आज़मौदा बताया है और ये अमल हदीस शरीफ़ से भी साबित है।

जिस शख़्स का पैशाब बन्द हो गया हो या पथरी के मर्ज़ में गिरफ़तार हो

जिस शख़्स का पैशाब बन्द हो गया हो या पथरी की वजह से तकलीफ़ में गिरफ़तार हो तो इसके लिए चाहिए कि एक प्याला या कागज़ पर ज़ाफ़रान से इन कलिमात मुबारक को लिखे, और सुबह के वक़्त नहार मुंह पी लेवे इन्शा अल्लाह पथरी भी रेज़ा रेज़ा होकर निकल जायेगी। और पैशाब की बन्दिश ख़त्म हो जायेगी और इक्कीस दिन मुसलसल इस्तेमाल करने से पथरी के मर्ज़ से इफ़ाक़ा हासिल होगा।

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم ط فَفَتَحْنَا اَبْوَابَ السَّمَآءَ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ وَّ فَجَّرْنَا الْاَرْض عيونا فالتقى الْمَاء على اَمْرٍ قَدْ قَدْ رَبنا اللّٰه الذى فى السمآء تقدس اسمك امرك فى السماء والارض كما رحمتك فى السما فاجعل رحمتك فى الارض واغفرلنا حوبنا خطايانا انت رب الطيبين فانزشفاء ك ورحمتك على هذا الوجع بحرمة السلام.

जब पागल कुत्ता काट ले तो क्या करे

शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस दहलवी रह० फ़रमाते हैं कि जिस के पागल कुत्ता काट लेवे जिसकी वजह से इस शख़्स के भी पागल होने का ख़ौफ़ हो तो इस हालत में इस आयत करीमा को रोटी के टुकड़े पर लिखकर इस मरीज़ का खिला दे और चालीस दिन खिलाये। रोज़ाना लिखे रोज़ाना खिलाये। आयत ये है पहले बिस्मिल्लाह लिखें फिर आयते करीमा–

إِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْداً وَّاَكِيْدُ كَيْداً فَمَهِّلِ الْكَافِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْداً ط

जो औरत बांझ यानी बच्चा पैदा करने की सलाहियत न रखे

जो औरत बच्चा पैदा करने की उम्र रखे मगर सलाहियत न रखती हो तो इस सूरत में चाहिए कि चालीस लौंगें ली जायें और इस पर सात मर्तबा इस आयत को पढ़ कर दम करे और एक एक लौंग हर दिन खाये। जिस दिन हैज़ से फ़ारिग़ होकर ग़ुस्ल कर लेवे इस दिन से खाना शुरू करे और इन चालीस दिन में इस का शोहर कुरबत भी इख़्तियार करता रहे। इस लौंग को रात के वक़्त लेवे और बाद को पानी न पीवे। लौंग के बाद पानी फ़ौरन न पीना ये ज़रूरी अम्र है। आयत शरीफ़ा ये है।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشَاهُ موجٌ مِّنْ فوقِهٖ موج من فوقه سحابٌ ظلمات بعضها فوق بعض اذا اخرج يده لم يكد يراها ومن لم يجعل الله له نورا فما له من نور . (مجربات صحيح)

जिस की आंखों की रोशनी कम हो गयी हो

मुजर्रबात सही में से ये एक मुजर्रब है कि जिस इन्सान की आंखों की रोशनी में कमी आ गयी हो तो इसको चाहिए कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सात मर्तबा ये ये आयत पढ़कर आंखों पर दम करे इन्शा अल्लाह अल बसीर हो गयी रोशनी इस अमल से वापिस हो

जायेगी। आयत ये है–

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ. (پ۲۶ سورہ ق)

गंदी हवाओं की वजह से लोग बीमार होते हों तो क्या करें

घर, मकान, कारख़ाना अगर किसी जगह शहर वग़ैरह में ताऊन या कोई गंदी हवा चल रही हो कि जिसकी वजह से लोग बीमार पड़ रहे हों तो ऐसी सूरत में चाहिए कि सूरत तग़ाबुन जो अठाइसवें पारे में है। सुबह व शाम बाद नमाज़ फ़ज्र व मग़रिब एक मर्तबा पढ़ लिया करें, और अपने ऊपर और तमाम घर वालों पर दम कर दिया करें और जो चीज़ खाया करें या पीवें तो पहले इस पर सात मर्तबा सूरे इन्ना अनज़ल्ना पढ़कर दम कर दिया करें और ये तावीज़ लिखकर सब के गले या बाज़ू में बांध दें। तावीज़ में लिखे जाने वाले अल्फ़ाज़ ये हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। इलाही बहुरमत शेख़ मुजदद अलिफ़ सानी रह० व हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद सादिक़ रह० अज़ शर व आफ़ात बद बाद व ताऊन निगाह वार सल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़लक़िही मुहम्मद व आलिही व असहाबिही अजमईन। अगर मुम्किन हो तो इस तावीज़ को लिखकर पीने वाले पानी में भी घोल दें। फ़कत (अल इमदादिया)

तमाम क़िस्म की रूहानी व जिस्मानी बीमारियों के लिए

अक्सर बुज़ुर्गाने दीन व अहलुल्लाह के मामूलात में ये अमल शामिल रहा है कि फ़ज्र की सुन्नत और फ़र्ज़ों के दर्मियान बिस्मिल्लाह के साथ सूरे फ़ातिहा इकतालीस मर्तबा पढ़ें अव्वल व आख़िर 11–11 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें फिर दोनों हाथों पर दम करके सीने पर फेर लें और पानी पर दम करके मरीज़ों को पिला दें जो भी बीमार हो हमेशा इस अमल को अपने अमल और वज़ीफ़े में

रखें। बड़ी ख़ैर व ख़ूबी का अमल है।

इसी अमल का दूसरा फ़ायदाः– अगर कोई मरीज़ हो तो ये अमल ऊपर वाला पढ़ कर पानी पर दम करके इसको पिलायें और चेहरे व मीने पर छिड़क दें। इसके अलावा हर क़िस्म के जादू व सिफ़ल अमल और आसेब वग़ैरह के असरात के दूर करने के लिए मुजर्रब है। (मुजर्रबात सही)

जिस शख़्स को बिल्कुल नींद नहीं आती हो वह क्या करे

जो शख़्स रात भर नींद न आने की वजह से तारे शमार करता हो और नींद न होने की वजह से परेशान रहता हो तो इसको चाहिए कि वज़ू करके लेटे ख़्वाह सर्दी या गर्मी या बरसात का मौसम हो और लेटने के बाद कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा क़रे। बहुत जल्द नींद आ जायेगी इन्शा अल्लाह अल हफ़ीज़ और लेटने से पहले अगर रोग़ने राहत इस्तेमाल करे तो भी नींद बहुत जल्द आयेगी। मुजर्रब व आज़मौदा है।

अल्लाह तआला के निन्नानवे (99) नाम मुबारक

हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नाम जिन के साथ दुआ मांगने का हमें हुक्म दिया गया है निन्नानवे नाम हैं। जो शख़्स इन नाम मुबारक को हिफ़ज़ याद कर लेगा और बराबर पढ़ता रहेगा वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। यादी हदीस शरीफ़ में इसके लिए जन्नत में दाख़िल होने का वादा किया गया है। फ़ज़ाईल तो इसके बहुत ही ज़्यादा हैं जिस के लिए काफ़ी वक़्त चाहिए और दूसरी किताबों में इसकी ख़ासियात व तासुरात देखेंगे। हां जो जिस मक़सद के लिए चाहे इन नामों से इसको इसकी तादाद इख़्तियार करके पढ़े।

मुराद हासिल करने का बेहतरीन तरीक़ा

तफ़सीर की किताबों में लिखा है कि जो हाजत अल्लाह तआला

से मांगनी हो इसके मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर व फ़िक्र कर लो कि इस हाजत व ज़रूरत से मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला का कौन सा नाम मुवाफ़िक़ है फिर इस अल्लाह तआ़ला के नाम को इस अदद के मुताबिक़ पढ़ो इन्शा अल्लाह अर्रहमान बहुत जल्द इसकी हाजत पूरी होगी। जैसे कोई इन्सान इल्म के तलब में है तो इसके मुवाफ़िक़ अल्लाह तआ़ला का मुबारक नाम अलीम है और अलीम के अदद एक सौ पचास हैं तो इस नाम को तन्हाई में एक सौ पचास मर्तबा पढ़ते रहें। ऐसे ही एक शख़्स अपने दुशमन व ज़ालिम की शरई तौर पर हलाकत चाहता है तो इसके लिए अल्लाह तआ़ला का मुबारक नाम क़हहार है इसके अदद तीन सौ छ 306 हैं या अल जब्बार है इसके अदद दो सौ छ 206 हैं। बहरहाल जो भी इसके मक़सद के और हाजत के मुताबिक़ नाम मुबारक हो इसका पता तर्जुमे से देख लें हम ने हर नाम मुबारक के साथ इसका तर्जुमा भी लिख दिया है और इसके अदद भी लिख दिये हैं। निकाल कर तन्हाई में बा वज़ू पढ़ें। वैसे तमाम नाम रोज़ाना बरकत, ख़ैर व आफ़ियत हासिल करने के लिए पढ़ते रहें। बे शुमार फ़वाईद हासिल होंगे। अब हम इन मुबारक नामों के साथ इनके अदद निकाल कर पेश करते हैं मुलाहेज़ा फ़रमायें।

بسم الله الرحمن الرحيم

गफ़्फ़ार	अलक़हहार	अलवहहाब	अलमुहमिन	अज़ीम	अलबासित
बड़ा गुनाह बख़्शने वाला	मख़्लूक़ पर ग़ालिब	बिला अवज़ देने वाला	हिफ़ाज़त करने वाला	बहुत बड़ी शान वाला	फैलाने वाला
1281	306	14	125	1020	72

अलबसीर	अलहकम	अलअदल	क़ाबिज़	अज़ीम	अलग़फ़ूर
बहुत देखने वाला	फ़ैसले करने वाला	बहुत इन्साफ करने वाला	समेटने वाला	गल्बे वाला	बहुत गुनाह बख़्शने वाला
	68	104	903	94	1286
अलजब्बार	अननाफ़िअ	अर्राफ़िअ	अस्सलाम	अलजलील	अलमुज़िल
सख़्त गिरफ़्त वाला	नफ़अ देने वाला	बुलन्द करने वाला	हर आफ़त से सालिम	बुज़ुर्गी वाला	ज़िल्लत देने वाला
206	201	351	131	73	770
अलख़ाफ़िज़	अज़्ज़ार	अलग़नी	अलफ़त्ताह	अलमतीन	अलहफ़ीज़
पस्त करने वाला	ज़रर पैदा करने वाला	ख़ुद ग़नी	रहमत के दरवाज़े खोलने वाला	मज़बूत	बहुत हिफ़ाज़त करने वाला
1481	1001	1060	489	500	998
अलमशकूर	अर्रऊफ़	अलअली	अलख़बीर	अस्समद	मुसव्विर
क़दर दार	बहुत मेहरबान	सबसे बरतर	ख़ैर रखने वाला	सबका मकसूद	सूरत बनाने वाला
226	287	110	812	134	336
अत्तव्वाब	अलहादी	अलबाइस	अलमोमिन	अलकरीम	अस्समीअ

रहमत से मुतवज्जा होने वाला	हिदायत करने वाला	मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला	अमन देने वाला	करम वाला	बहुत सुनने वाला
409	20	573	136	270	180
अलमानिअ़	अलहय्यु	अलमुग़नी	अलहलीम	अलक़ादिर	अलमुक़ीत
किसी मसलेहत से देने वाला	ज़िन्दा	दूसरों को ग़नी करने वाला	बर्दबार	कुदरत वाला	रोज़ी पहुंचाने वाला
161	18	1100	88	731	550
अलग़फ़ूर	अलबातिन	अलक़ुद्दूस	अलहसीब	ख़ालिक़	अलहकीम
बहुत माफ़ करने वाला	ज़ात से छुपा हुआ	सब ऐबों से पाक	हिसाब लेने वाला	पैदा करने वाला	हिकमत वाला
156	62	170	80	117	124
अन्नूर	अलजारिह	अर्रज़्ज़ाक़	अलक़वी	अलमुइज़	अलमुईद
ज़हूर वाला	इकट्ठा करने वाला	रिज़्क़ देने वाला	कुव्वत वाला	इज़्ज़त देने वाला	दोबारा पैदा करने वाला
256	114	308	116	117	124
मुंतक़िम	मुतकब्बिर	अललतीफ़	अलवाहिद	अलकबीर	अलअव्वल

बदला लेने वाला	बड़ाई वाला	पोशीदा चीज़ का बताने वाला	यकता सिफ़ात वाला	सबसे बड़ा	सबसे पहला
630	662	129	19	232	37
अलबारी	अलवदूद	अलमुहियु	अलहमीद	मुअख़्ख़िर	अलमाजिद
ठीक बनाने वाला	मुहब्बत वाला	ज़िन्दा करने वाला	तारीफ़ करने वाला	हटाने वाला	बुज़ुर्गी वाला
213	20	68	62	846	48
अर्रशीद	अलआख़िर	मुक़तदिर	शहीद	अल बर	ज़ुलजलालि वल इकराम
मसलेहत बनाने वाला	सबसे पिछला	कुदरत ज़ाहिर करने वाला	हाज़िर मौजूद	एहसान करने वाला	जलाल व इकराम वाला
514	801	744	319	202	1111
अलमजीद	अलमुजीब	अलक़य्यूम	मुक़सित	मालिकुल मुल्क	अल मुसय्यत
बुज़ुर्गी वाला	दुआ कबूल करने वाला	कायम रखने वाला	इन्साफ़ करने वाला	मालिक बादशाह	मौत देने वाला
57	55	156	209	1212	490
अलमुहसी	अलवाली	अलहक़	अस्सबूर	अलबाक़ी	अलज़ाहिर

अहाता करने वाला	मालिक	सच्चा	तहम्मुल वाला	सबके बाद रहने वाला	सिफ़ात से खुला हुआ
148	47	108	298		1106
अलमुक़द्दम	अलवाजिद	अलबदीअ़	अलवारिस	अलवासिअ़	अर्रक़ीब
बढ़ाने वाला	तवांगर करने वाला	ईजाद करने वाला	सबका वारिस	गुंजाईश वाला	निगहबान
184	14	86	707	137	212
अलमुबदी	मुतआली	अलवकील	अलवली	अलअ़लीम	अलहलीम
इब्तेदा पैदा करने वाला	बहुत बरतर	कारसाज़	मदद करने वाला	बहुत इल्म वाला	बर्दबार
56	551	66	46	150	88

अगर किसी का शौहर नाराज़ हो तो क्या करे

जिस औरत का शौहर नाराज़ हो तो इसके लिये मन्दर्जा ज़ैल नक़्श पर मोम जामा करके औरत के गले में डालें काले डोरे से गर्दन में लटकायें। नक़्श ये है–

بسم الله الرحمن الرحيم

13	16	19	6
18	7	12	17
8	22	14	11
15	10	9	20

दिल की धड़कन के लिए मुजर्रब नक़्श

अगर किसी का दिल धक धक करता हो तो मुन्दर्जा ज़ैल नक़्श गले में इस तरीके पर डालें कि तावीज़ दिल के पास लटका रहे मुजर्रब है और नीचे ये इबारत भी लिखें।

بسم الله الرحمن الرحيم

8	11	14	1
13	2	7	12
3	16	9	6
10	5	4	15

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ وَتَطْمَئِنُّ الْقُلُوْب. اعوذ بكلمات الله التامات من غضبه وعقابه وشر عباده من همزات الشياطين وان يحضرون اللّٰهِ شافى الله كافى برحمتك يا ارحم الراحمين. (مجرب صحيح)

आफ़ात व बलयात से बचने का बेहतरीन नक़्श ताऊन हैज़ा के लिए

इस नक़्श को बड़े अदब व एहतराम के साथ मोम जामा करके बाज़ू पर बांधें इसके फ़वाईद का मआयना खुद फ़रमा लेंगे। इन्शा अल्लाह और मोटे अल्फ़ाज़ में लिखकर घर मे भी लगा दें। इन्शा अल्लाह हिफ़ाज़त हासिल होगी और इस नक़्श मुबारक के फ़वाईद इस्तेमाल करने वाले खुद अपनी आंखों से देखेंगे घर की हर तरह हिफ़ाज़त के लिए भी ये नक़्श बेहतरीन क़िला है। ज़रूर फ़ायदा उठाना चाहिए।

بسم الله الرحمن الرحيم بسم الله الرحمن الرحيم بسم الله الرحمن الرحيم

كهيعص طه طسم الم المص الم الموطس يسن

سلام قولا من رب الرحيم

هو الرحمن امنا به وعليه توكلنا

الوكيل	نعم	الله	حسبنا
حسبنا	الله	ونعم	الوكيل
ونعم	الوكيل	حسبنا	الله
الله	حسبنا	الوكيل	ونعم

سلام قولا من رب الرحيم هو الرحمن امنا به وعليه توكلنا

سلام قولا من رب الرحيم هو الرحمن امنا به وعليه توكلنا

يس والقران الحكيم ص والقران ذى الذكر

وما يسطرون اعوذ بك من همزات الشيطان

[illegible]

दिल की धड़कन के लिए मुजर्रब व आज़मौदा तावीज़

अगर किसी का दिल दहक दहक करता हो ये तावीज़ मअ़ नक़्श के गले में इस तरह डालें कि तावीज़ दिल पर लटका रहे मुजर्रब है, और नक़्श की साथ वाली इबारत भी लिखें और नक़्श में आदाद छोटे बड़े के ऐतबार से तरतीब से लिखें। हर नक़्श के लिखने का यही फ़ायदा है ये ज़रूरी याद रखने की बात है इस नक़्श के साथ इबारत ये लिखेंगे।

بسم الله الرحمن الرحيم. الذين امنوا وتطمئن قلوبهم بذكر الله الا بذكر الله وتطمئن القلوب اعوذ بكلمات الله التامات من غضبه وعقابه وشر عباده ومن همزات الشياطين وان يحضرون الله شافى الله كافى برحمتك يا ارحم الراحمين.

(مجربات صحیح)

कुव्वते हाफ़िज़ा के लिए मुजर्रब अमल

दिमाग़ की कमज़ोरी और याददाश्त के ज़ईफ़ होने की शिकायत में कम से कम 21 मर्तबा वरना इकतालीस मर्तबा अल्हम्द शरीफ़ मअ़ बिस्मिल्लाह के पढ़कर असर की नमाज़ के बाद रोज़ाना सीने पर दम कर लिया करें और पानी पर दम करके भी पी लिया करें ये अमल एक बहुत बड़े वलीयुल्लाह का बताया हुआ है जो कि मुजर्रब है। (मुजर्रबात रशीद)

जिस शख़्स को हैज़े की शिकायत हो

जिस शख़्स को हैज़े की बीमारी हो तो इसके लिए चाहिए कि इस नक़्श को लिखकर मोम जामा करके गले में डालें। इन्शा अल्लाह तआला कामयाबी हासिल होगी और मर्ज़ की फ़ौरन रोकथाम बिइज़निल्लाह होगी। अगर सब घर वाले हैज़े की बीमारी में मुब्तला हों तो सबके गले में इसी तावीज़ को डालें।

بسم الله الرحمن الرحيم

حٰمٓ حٰمٓ حٰمٓ	حٰمٓ حٰمٓ حٰمٓ حٰمٓ	كٓهٰيٰعٓصٓ	حٰمٓ عٓسٓقٓ
يامؤمن	ياسلام	ياحافظ	ياحفيظ
ياسلام	الله هو هو هو	انت انت انت	ياحفيظ
يامؤمن	ياسلام	ياحافظ	ياحفيظ
ياحفيظ	ياحافظ	ياحفيظ	ياحافظ
كامؤمن	يامؤمن	ياسلام	ياسلام
ياحافظ	ياحفيظ	ياحافظ	ياحفيظ

और घर की हिफ़ाज़त के लिए जो हम ने नक़्श आगे लिखा है हिफ़ाज़त के बयान में इसको अपने घर में चस्पां कर दें और सुबह को सूरे मुहम्मद स0अ0व0 पढ़कर अल्लाह से दुआ करें इन्शा अल्लाह तआ़ला मुकम्मल हिफ़ाज़त हासिल होगी मुजर्रब है। (मुजर्रबात सही)

जिस शख़्स के पेट में दर्द मुसलसल रहता है

जिस शख़्स को हमेशा पेट के दर्द का आरज़ा रहता हो इसके लिये ख़लीफ़ा–ए–रसूल स0अ0व0 हज़रत अली कर्रमुल्लाहु वजहहू ने ये अमल इरशाद फ़रमाया है कि बारिश का पानी लेवें और अपनी बीवी से मेहर की रक़म में से कुछ रुपये लेवें और उन रुपये से शहद (असली) ख़रीदें। इस शहद को बारिश के पानी में मिलाकर सुबह को पी लिया करें। इन्शा अल्लाह तआ़ला सात दिन ऐसे ही करें पेट का दर्द ख़त्म हो जायेगा। (हदीस शरीफ़)

नोटः– ज़्यादा अफ़ज़ल ये होगा कि इस पानी पर सात मर्तबा अलहम्द शरीफ़ पढ़कर दम कर लिया करें। (मुजर्रबाते अहमदिया)

जिसका हाफ़ज़ा कमज़ोर हो इसके लिए मुजर्रब अमल

ऐसे शख़्स को जिसका हाफ़ज़ा कमज़ोर हो चाहिए कि हर फ़र्ज़

नमाज़ के बाद 11 मर्तबा "يــاقوی" सर पर सीधा हाथ रख पढ़ा करें मुस्तक़िल तौर पर बे इन्तेहा मुफ़ीद अमल है। मुजर्रब व आज़मौदा है। (मुजर्रबात उस्ताज़)

जिसकी आंखों की रोशनी कम हो गयी हो

जिसकी आंखों की रोशनी में फ़र्क़ आ गया हो इसको चाहिए कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 11 मर्तबा "يــانور" पढ़कर हाथों के पोरों पर दम करके आंखों पर फेर लिया करें। इन्शा अल्लाह तआ़ला आंखों की रोशनी गयी हुई वापस आ जायेगी और जाते रहने से महफ़ूज़ रहेगी। (मुजर्रबात सही)

भूलने का मर्ज़ हो तो क्या करे

अगर किसी शख़्स को भूलने का मर्ज़ लाहक़ हो तो इसके लिए चाहिए कि सूरे फ़ातिहा बिस्मिल्लाह ज़ाफ़रान से लिखकर सुबह नहार मुंह पी लिया करें। इन्शा अल्लाह अज़ीज़ भूलने का मर्ज़ ख़त्म हो जायेगा मगर ये अमल कम अज़ कम 21 दिन करे वरना चालीस दिन करे। (मुजर्रबात सही)

एक अजीब करिश्मा

अ़गर फ़जर की सुन्नतों और फ़रजों के दर्मियान इकतालीस मर्तबा अलहम्द शरीफ़ बिस्मिल्लाह के साथ पढ़ा जाये फिर अपने मुंह के थूक पर दम करके अपनी आंखों में लगाये तो आंखों की बीमारी से निजात मिलती है मगर शर्त ये है कि सोकर उठने के बाद से कुद भी खाया पिया न हो बिल्कुल नहार मुंह ऐसा करे ये अमल हमारे बुज़ुर्गों के इस्तेमाल शुदा अमल व तजुर्बात में से है। मुजर्रब व आज़मौदा है।

नोटः– अगर पेट में क़ब्ज़ व ख़राबी हो तो हरगिज़ ऐसा न करे। (मुजर्रबात अकाबिर)

एक राज़ की बात

ये बात मुस्तनद व मुदल्लल है कि अगर जूता पहनने में सीधा पांव का और जूता निकालने में बायें पांव का ख़्याल रखे ये हमेशा के लिए और सूरत मुम्तहिना ज़ाफ़रान से लिखकर और इसको पानी मे घोल कर तिल्ली वाले मरीज़ को पिलाया जाये तो तिल्ली वाले मरीज़ को मर्ज़ तिल्ली से कुली तौर पर छुटकारा हासिल होता है। (फ़िलआसार)

तिल्ली के मर्ज़ से हमेशा के लिए निजात

अगर शिफ़ा तमाल पर 7 मर्तबा يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا. पढ़कर दम करके तिल्ली वाले मरीज़ को सुबह नहार मुंह पिलायें 7 दिन तक तो इन्शा अल्लाह मौत तक तिल्ली के मर्ज़ से निजात मिल जायेगी। मुजर्रब व आज़मौदा है।

पैशाब के बन्द को तोड़ने का अमल

अगर किसी शख़्स का पैशाब बन्द हो गया हो तो सूरे अलम नशरह पूरी ज़ाफ़रान से मअ बिस्मिल्लाह के लिखे और सुबह को नहार मुंह पी लेवे। तो ये अमल पैशाब की बन्दिश को तोड़ देता है और दिल की सख़्ती को ख़त्म करता है और हाफ़ज़ा और याददाश्त को कुव्वत देता है। मुजर्रबात में से है चालीस दिन इस्तेमाल फ़रमायें। (मुजर्रबात सही)

जो शख़्स रास्ता चलने में थक जाता हो इसके लिए तावीज़

जो शख़्स थोड़ा ही रास्ता चलने मे थक जाता हो तो इसके लिए चाहिए कि इस नक़्श को लिखकर गले में डाल दें। इन्शा अल्लाह तआला कभी भी न थकेगा। इस नक़्श के साथ साथ आयाते कुरानी को भी लिखेंगे। (मुजर्रबात अकाबिर)

بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم

14	11	8	1
7	2	13	12
9	16	3	6
4	5	10	15

بسم اللّٰہ القوی العزیز الذی خلقنی فھو یھدین والذی ھو یطعمنی ویسقین واذا مرضت فھو یشفین والذی یمیتنی ثم یحیین والذی اطمع ان یغفرلی حظیئتی یوم الدین رب ھبلی حکما والحقنی بالصالحین واجعل لی لسان صدق فی الاخرین. واجعلنی من ورثۃ جنۃ النعیم واغفرلی ابی انہ کان من الضالین ولا تخزنی یوم یُبعثون یوم لا ینفع مال ولا بنون الا من اتی اللّٰہ بقلب سلیم. (۱۹)

जानवरों की बीमारी से शिफ़ा के लिए

अगर जानवरों ख़ास तौर पर घोड़ा, बैल, भैंस, गाय, यानी जितने भी दूध देने वाले और मेहनतकश उठाने वाले जानवर हैं इनकी बीमारी से शिफ़ा के लिए ख़्वाह वह किसी भी क़िस्म की हो इसके लिए एक कागज़ पर ये कलिमात लिखकर जानवरों के गले में डालें और ये याद रहे कि तावीज़ का कपड़ा काले रंग का हो कलिमात ये हैं।

بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم. طلعواستۃ وستین ملکا الی جبال المقدس لقواثلاث شجوات الواحدۃ قطعت والثانیۃ یلبست والثالثۃ احترقت القطع ایھاالخلد ببرکۃ سیھوم ویھوم دھوم بالف لاحول ولا قوۃ الا باللّٰہ العلیٰ العظیم ج و ج و ج وارتفع ارتفع ا ہ ا ہ ل ط ا س ل ط ا س ل ط ا س ل ط ا س ل ط ا س اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ حٰم حٰم حٰم حٰم حٰم حٰم حٰم توکلت ل اد ھی ع ل اا علی اللّٰہ اللّٰھم لحفظ حاملہ وابتۃ بحرمۃ رب العظیم والقران العظیم ولا حول ولا قوۃ الا باللّٰہ العلی العظیم. اَعُوْذُ

بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ. (مجربات صحيح)

जिस को किसी असर की वजह से औलाद से महरूमी हो

अगर ज़ौजेन को औलाद से महरूमी हो तो एक काग़ज़ पर कुरान करीम की इस आयत को लिखकर तावीज़ बनाकर दोनों यानी मियां बीवी के गले में डाला जाये। इन्शा अल्लाह फ़ायदा होगा। आयत ये है–

بسم الله الرحمن الرحيم. وفتحنا ابواب السماء بماء منهمر وفجرنا الارض عيونا فالتقى المآء على امر قد قدر وحملناه على ذات الواح ودسر تجرى باَعْيُنِنَا جزاء لمن كان كفر. (مجربات شيخ)

जिसको भूक और प्यास ज़्यादा लगती हो इसके लिए अमल

अगर किसी को भूक और प्यास ज़्यादा लगती हो और वह इसकी वजह से परेशान हो और वह भूक और प्यास पर क़ाबू पाना चाहता हो तो इसको चाहिए कि सूरे लिईलाफ़ि कुरैश हर नमाज़ के बाद 21 मर्तबा पाबन्दी के साथ पढ़ा करे ये नुस्ख़ा आज़मौदा व मुजर्रब है। (मुजर्रबात सही)

बीमार के अयादत की फ़ज़ीलत

रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया कि जब मुसलमान अपने भाई मुसलमान की अयादत करता है तो वापस आने तक वह गोया कि जन्नत के बाग़ में होता है और जब कोई बीमार के लिए दुआ के अल्फ़ाज़ कहता है तो फ़रिश्ते इस की दुआ पर आमीन कहते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि अगर कोई मुसलमान किसी मुसलमान बीमार की अयादत सुबह के वक़्त कर ले तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस अयादत करने वाले मुसलमान के लिए दुआ मग़फ़िरत करते हैं और अगर शाम के वक़्त अयादत कर ले तो सुबह तक सत्तर हज़ार

फ़रिश्ते इस मुसलमान अयादत करने वाले के लिए दुआ–ए–मग़फ़िरत करते हैं।

चार बीमारियों से हिफ़ाज़त के कलिमात

हज़रत क़बीसा रजि0 ने हुज़ूर स0अ0व0 की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह स0अ0व0 मुझे ऐसे कलिमात सिखा दीजिए कि अल्लाह तआला मुझे इन कलिमात के ज़रिये नफ़ा देवें इसलिए कि मेरी उम्र ज़्यादा हो गयी है बूढ़ा हो गया हूं कि (पहले) बहुत से अमल करता था। अब मैं इनको करने से थक गया हूं। जनाब रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने जवाब अता फ़रमाया कि दुनिया के लिए तो ये है कि जब आप सुबह फ़ज्र की नमाज़ पढ़ चुकें तो तीन मर्तबा कहो।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ الْعَظِيْمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ط

कि जब तुम इनको पढ़ लोगे तो रंज व ग़म और जज़ाम की बीमारी औंश्र बर्स की बीमारी और फालिज की बीमारी से अमन व सलामती में रहोगे और हुज़ूर स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि अपनी आख़िरत के लिए ये पढ़ा करे।

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِي مِنْ عِنْدِكَ وَافِضْ عَلَيَّ مِنْ فَضْلِكَ وَانْشُرْ عَلَيَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ

फिर हुज़ूर स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि जो बन्दा इन कलिमात को बराबर पढ़ेगा कि नाग़ा न करे तो इसके लिए जन्नत के चार दरवाज़े खोल दिये जायेंगे। जिन में से चाहे अन्दर चला जाये। (बहवाला अजया)

हज़रत ख़िज़र अलै0 और हज़रत इलयास अलै0 की दुआ

जो जलने डूबने और चोरी से हिफ़ाज़त के लिए

हज़रत ख़िज़र अलै0 और हज़रत इलयास अलै0 जब ये दोनों हज के दिनों में हर साल मिलते तो जुदा इस वक़्त होते जब ये दुआ

पढ़ लिया करते थे। दुआ ये है–

بِسْمِ اللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ خَيْرٍ كُلِّهِ بِيَدِاللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا يَصْرِفُ السُّوْءِ اِلَّا اللّٰهُ ط

इस दुआ को पढ़ने का तरीक़ा ये है कि इस दुआ को सुबह को तीन मर्तबा पढ़ लिया करें तो वह पढ़ने वाला आग में जलने से पानी में डूबने से और चोरी से महफ़ूज़ रहेगा। इन्शा अल्लाह तआ़ला। अहया (स.456 जि.12)

उम्मुल सबयां से निजात से निजात के वास्ते

सात तारों का काले रंग का धागा लेवें और इस धागे पर इकतालीस मर्तबा सूरे फ़ातिहा बिस्मिल्लाह के साथ साथ पढ़कर दम करते जावें हर गिरह पर जब इकतालीस गिरहें हो जायें तो बच्चे के गले में डाल दें। इन्शा अल्लाह मर्ज़ से निजात मिल जायेगी और ये अमल मुजर्रबात में से है।

जिस मुसलमान इन्सान का पैशाब बन्द हो जाये तो वह क्या करे

जिस मुसलमान का ख़्वाह वह मर्द हो या औरत अगर पैशाब बन्द हो जाये तो इसको चाहिए कि कसरत से ये दुरूद शरीफ़ पढ़ा करे। ये दुरूद शरीफ़ ख़्वाब में बशारत शुदा दुरूद शरीफ़ है और मुजर्रब व आज़मौदा है इन्शा अल्लाह तआ़ला पैशाब की बन्दिश का मर्ज़ जड़ से ही ख़त्म हो जायेगा। वह दुरूद शरीफ़ ये है–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ وَصَلِّ عَلٰى قَلْبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ۔

नोटः– इस दुरूद शरीफ़ की एक तासीर ये है कि या तो इसकी बरकत से मर्ज़ ही ख़त्म हो जायेगा वरना ख़्वाब में रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ज़ियारत होकर इलाज व दवा का इल्म हो जायेगा।

पैशाब की बन्दिश का फ़ौरी मुजर्रब इलाज

अगर किसी भी इन्सान का अगरचे वह काफ़िर ग़ैर मुस्लिम हो या किसी भी मज़हब का मानने वाला हो चाहे मर्द हो या औरत हो कि इसको पैशाब की बन्दिश हो जाये। अगरचे मसाने में पथरी की वजह से बन्दिश हो और बन्दिश की वजह से हाल ये हो जाये कि इसको मरना ज़िन्दा रहने से महबूब व प्यारा बन जाये। यहां तक कि वह इसी वक़्त ख़ुद कशी करने को तैयार व आमादा हो जाये तो चाहिए कि ककड़ी बअ़ज़ जगह मक्का भी कहते हैं और आम तौर पर बरसात के मौसम में होती है और इसको आम तौर पर आग के अंगारों पर भून कर दाने खाते हैं तो इस मक्का के बाल लेवे जितनी ज़्यादा पुरानी होगी अच्छा होगी। इन बालों को एक पाव पानी में उबाल कर बक़दरे ज़ायक़ा नमक डाल कर अच्छी तरह से उबालें फिर इस पानी पर ग्यारह मर्तबा अलहम्द शरीफ़ और आयाते शिफ़ा पढ़कर दम करके पी लेवें बेहतर होगा कि सात मर्तबा अलम नशरह वाली सूरत भी ज़्यादा करें। इन्शा अल्लाह पहली ही ख़ुराक में मर्ज़ से छुटकारा हासिल होगा और ये नुस्ख़ा इस्तेमाल शुदा है बहुत मुफ़ीद पाया गया है। अपनी मअ़रफ़त के वास्ते अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ के सामने पेश कर दिया है। लोगों को चाहिए कि बवक़्ते ज़रूरत फ़ायदा उठायें और दूसरो को भी इससे मुत्तला फ़रमायें। आयाते शिफ़ा ये हैं–

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَاء وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَاهُوَ شِفَاءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ. (مجربات صحيح)

ख़ास तौर पर बर्स पागल दीवाना और जज़ाम वग़ैरह जैसी हलाक करने वाली बीमारियों से पनाह में रहने की

दुआ

इन्सान को रोज़ बरोज़ नयी नयी किस्म की बीमारियां लाहक़ हो रही हैं कि इस दौर में वह बीमारियां समझ में नहीं आती हैं। इसीलिए हर क़िस्म की छोटी बड़ी हलाक करने वाली तमाम बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिए जनाब रसूल अल्लाह स०अ०व० की ये दुआ बतायी हुई है। इस दुआ में ख़ास तौर पर शदीद क़िस्म की तीन बीमारियों से हिफ़ाज़त व पनाह चाही गयी है। इसलिए हर मुसलमान को इस दुआ के ज़रिये अल्लाह तआला से पनाह लेनी चाहिए। दुआ ये है—

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَسَیِّئِ الْاَسْقَامِ

"ऐ अल्लाह मैं आप की पनाह चाहता हूं (सफ़ेद कोढ़) बर्स से और दीवाने पन से और जज़ाम से और तमाम शदीद क़िस्म की बीमारियों से पनाह लेता हूं।"

ग़ुस्सा दूर करने का मुजर्रब इलाज व अमल

अगर किसी शख़्स को सख़्त ग़ुस्से का मर्ज़ लाहक़ हो जिसकी वजह से वह अपनों और ग़ैरों को तकलीफ़ में मुब्तला कर देता हो और ग़ुस्से की वजह की मरीज़ को चाहिए कि लौटे में या बर्तन में वज़ू का बचा हुआ पानी बिस्मिल्लाह पढ़कर खड़े होकर पी लिया करे ये इलाज ग़ुस्से के मर्ज़ को कम करने के लिए बेहतरीन है। मुजर्रब है।.और मुफ़ीद पाया गया है, और मुस्तनद है और सही है।

आम बीमारियों का इलाज

ये हमारे बुज़ुर्गों के तजुर्बात में से है कि वज़ू का बर्तन में बचा हुआ पानी खड़े होकर बिस्मिल्लाह पढ़कर पीने से हर क़िस्म की बीमारी से निजात मिलती है। शर्त ये है कि तमाम वज़ू का बचा हुआ पानी हो और खड़े होकर इस पानी का पीना सुन्नत है। (मुजर्रबात शामी)

एक मख़्सूस बीमारी और रूहानी इलाज

हदीस शरीफ़ में है कि वज़ू में हाथ धोने से हाथ के गुनाह धुलते हैं। मुंह धोने से मुंह के गुनाह धुलते हैं, चेहरा धोने से चेहरे के गुनाह पांव धोने से पांव के गुनाह धुलते हैं। हर वज़ू के आज़ा धोने से इस अअज़ा के गुनाह धुलते हैं और बाद वज़ू के इस वज़ू के बचे हुए पानी को खड़े होकर पी लेना बीमारी से निजात बख़्शता है। ये बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से है और हदीस शरीफ़ में है कि इस वज़ू के बचे हुए पानी को शर्मगाह के मक़ाम पर यानी रूमाली पा छिड़कने से नमाज़ के अन्दर वसवसों की बीमारी से निजात मिलती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

ग़ुस्सा के कम करने का एक मुस्तनद इलाज

सही रिवायत में है कि जिस शख़्स को ग़ुस्से का भूत सवार हो तो इसको चाहिए कि वज़ू कर लेवे और पानी पीवे इसलिए कि ग़ुस्सा शैतान की तरफ़ से है और शैतान की पैदाईश आग से है और आग को पानी ही ठंडा करता है। ये इलाज मुफ़ीद और मुस्तनद है।

जमाही का मुफ़ीद व मुजर्रब इलाज

अगर किसी इन्सान का जमाहियां बहुत आती हों तो इलाजों में से एक मुफ़ीद इलाज ये है कि जमाही के वक़्त ये दिल में ख़्याल लाये कि किसी नबी व रसूल को जमाही नहीं आयी है। इस ख़्याल के लाने से जमाही का आना बन्द हो जायेगा। मुजर्रब व मुस्तनद है।

कुव्वते मर्दानगी के ज़अफ़ का इलाज

जिसको कुव्वत मर्दानगी की कमी हो तो इसको चाहिए कि जब भी ग़ुस्ल करे और जब भी हमबिस्तरी से फ़ारिग़ हो तो किसी मीठी चीज़ पर सात मर्तबा ये आयत पढ़कर दम करके हमेशा खा लिया करे इन्शा अल्लाह ये शिकायत ख़त्म हो जायेगी। आयत ये है–

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبْ. (مجربات صحیح)

जब शदीद क़िस्म की बीमारियों जैसे ताऊन हैज़ा वग़ैरह फैल रही हों

अगर किसी मक़ाम या घर व शहर में हलाककुन बीमारियां फैल रही हों जैसे ताऊन हैज़ा वग़ैरह तो ऐसे हालात मे रसूल अल्लाह स0अ0व0 की सीरत की रोकथाम हो जायेगी। ये अमल पुराने बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से है और मुजर्रब व आज़मौदा है। (मुजर्रबात अकाबिर)

रसूल अल्लाह स0अ0व0 फ़र्ज़ नमाज़ के बाद क्या पढ़ते थे

हदीस शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सीधा हाथ सर पर रखकर ये दुआ पढ़ा करते थे।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ اَللّٰهُمَّ اذْهَبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ ط

तर्जुमाः— मैंने इस अल्लाह का नाम लेकर नमाज़ मुकम्मल की जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और वह बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है। ऐ अल्लाह आप मुझ से रंज व ग़म व फ़िक्र को दूर कर दीजिए। (हदीसे नबवी स0अ0व0)

बच्चे की पैदाईश के बाद दूध ज़्यादा होने की वजह से तकलीफ़ हो

अगर विलादत के बाद दूध ज़्यादती की वजह से तकलीफ़ हो तो एक सफ़ेद कागज़ पर कुराने करीम की ये आयत शरीफ़ा लिखें और तावीज़ बनाकर सीने पर बांध दें। इन्शा अल्लाह आसानी व सहूलत होगी, और तकलीफ़ मे तख़्फ़ीफ़ होगी। आयत ये है—

يٰاَرْضُ ابْلَعِیْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِیْ وَغِيْضَ الْمَآءُ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا.

(مجربات اکابر)

सांप व अजदहा का फ़ौरी तौर पर ज़ेहर उतारने का मुजर्रब अमल

अगर किसी के भी सांप या अजदहे ने डस लिया हो तो ये अमल मख़्सूस तरीक़े पर तोहफ़ा है। इस अमल से डसा हुआ शख़्स अगरचे ग़ैर मुस्लिम ही क्यों न हो और वह सांप व अजदहे के ज़ेहर की वजह से मौत की हालत में हो। यानी ज़ेहन की वजह से इसकी जान होंठों पर आ गयी हो तो इस अमल के इख़्तियार करने से बिइज़निल्लाह तआला इस इन्सान से ज़ेहन का असर ख़त्म हो जायेगा। हमेशा का मुजर्रब व आज़मौदा है और ये अमल रमज़ानुल मुबारक की सताईसवीं को करेंगे। इसी तरह हर साल करेंगे एक दिन सिर्फ़ और जब आमिल बन जायेंगे तो अगर मालूम हो जाये आप को कि फ़लां के सांप या अजदहे ने काट लिया है तो आप को फ़ौरन् इस का ज़हर उतारने के लिए जाना पड़ेगा। अगरचे आप को किसी क़दर भी परेशानियां और तकलीफ़ हो। दूसरे ये कि इसका ज़हर उतारने पर कुछ रुपये वग़ैरह तय नहीं करेंगे। चाहे वह ख़ुद अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से कुछ भी देदे तो इसको क़बूल कर लेंगे। मगर अपनी ज़बान से कह कर नहीं लेंगे। (मुजर्रबात सही)

नोटः– अमल सिर्फ़ सताईसवीं रमज़ानुल मुबारक की रात में ही किया जायेगा। ज़रूरी शर्त है।

जुनून और मिर्गी की बीमारी से शिफ़ा के लिए

हज़रत ईसा अलै0 कनजों और पागलों व दीवानों और अंधों को ये दुआ पढ़कर तन्दुरूस्त व सही व सालिम बिज़निल्लाह करते थे। लिहाज़ा इस दुआ को ज़ाफ़रान से लिखकर ज़मज़म के पानी से हल करके पिलाना मर्ज़ से शिफ़ा का ज़रिया बनता है। दुआए ईसा ये है–

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ لَهُ مَنْ فِي السَّمَآءِ وَلَهُ مَنْ فِي الْاَرْضِ لَا اِلٰهَ فِيْهِمَا غَيْرُكَ وَاَنْتَ
مٰلِكُ مَنْ فِي السَّمَآءِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ لَا مِلْكُ فِيْهِمَا غَيْرُكَ وَتَدَرَّتُكَ فِي الْاَرْضِ

وَقُدْرَتِكَ فِى السَّمَآءِ سُلْطَانِكَ فِى الْاَرْضِ سُلْطَانِكَ فِى السَّمَآءِ وَاسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الْكَرِيْمِ وَوَجْهِكَ الْمُنِيْرُ وَمَلَكَ الْقَدِيْمْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٌ قَدِيْرٍ ه

हज़रत वहब बिन मन्बह रह0 इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा अलै0 के पास हज़ार हा मरीज़ व हमयार आते थे और जो आने के लायक़ न होता था इसके पास हज़रत ईसा अलै0 ख़ुद तशरीफ़ ले जाते थे। हज़ारों अंधे, लंगड़ों और कोढ़ियों को इनकी दुआ से शिफ़ा होती थी। ईसा अलै0 ये दुआ पढ़ते थे। हज़रत वहब फ़रमाते हैं कि ये दुआ दिल की घबराहट और पागलपन जुनून के मरीज़ों के लिए जो ऊपर गुज़री है पढ़ने और ज़ाफ़रान से लिखकर पानी में घोलकर पिलाने से इन्शा अल्लाह मुकम्मल फ़ायदा होगा और मरीज़ व बीमार शिफ़ा पायेंगे। (बहवाला तफ़सीय कशफ़ुर्रहमान)

बराऐ इमसाक

ये इलाज अल्लामा देरबी रह0 ने अपनी माया नाज़ तसनीफ़ किताब में तहरीर फ़रमाया है कि अंगूर के पत्ते पर ये नीचे वाले अल्फ़ाज़ लिखें। फिर उलटी बायें रात में बांध लें।

اَبْجدُهوزحطی کلمن سعفض قرشت تخذ ضظغ قبل یاارض ابلعی ماءك ویاسماء اقلعی وغیض الماء النازل من صلب فلان...... بن فلان...... لاحول ولا قوة الا باللّٰه العلی العظیم وصلی اللّٰه علی سیدنا محمد واٰلهٖ واصحابهٖ سلم.

इस इबारत के अन्दर फ़लां के जगह मर्द का नाम और बन फ़लां की जगह पर मर्द के बाप का नाम लिखेंगे इन्शा अल्लाह तआला अन्ज़ाल न होगा। मुसतनद है।

یاسلام की तासीरः– अल्लाह तआला के निन्नानवे नामों में से एक नाम सलाम भी है। इसके साथ या लगाकर یاسلام 31 मर्तबा सोते वक़्त और फ़ज्र की नमाज़ के बाद पाबन्दी के साथ पढ़ने से हर क़िस्म के मर्ज़ व बीमारी की तकलीफ़ से निजात मिलती है, और मर्ज़ का अज़ाला होता है। ये बात बुज़ुर्गाने दीन सल्फ़ ने बयान फ़रमाई।

(मुजर्रबात अकाबिर)

हर क़िस्म के मर्ज़ व बीमारी से छुटकारा के लिए

हर क़िस्म के शदीद से शदीद मर्ज़ के जिसका इलाज करने से हकीम व डाक्टरों ने मना कर दिया हो और बीमारी समझ में नहीं आ रही हो तो इसके लिए अल्हम्द शरीफ़ बिस्मिल्लाह के साथ लिखकर पानी में घोलकर मरीज़ को पिलायें जिसको ख़ुद पढ़ना नहीं आता हो जैसे छोटे बच्चे वगै़रह और ये अल्फ़ाज़ भी ज़्यादा कर लें يــاحــى فى ديـمـوتة مـلـكه وبقائه ياحى ياحى ياحى चालीस दिन मुसलसल पिलायें। ये इलाज मुस्तनद है। (मुजर्रबाते अकाबिर)

तमाम पेट की बीमारियों के लिए

अगर सूरे लुक़मान ज़ाफ़रान से लिखकर और ज़मज़म के पानी से मल करके सुबह नहार मुंह 21 दिन पिलायें वरना चालीस दिन और नमक और नमकीन चीज़ों से बिलकुल्लिया परहेज़ करें तो इन्शा अल्लाह पेट का शिकायतें ख़त्म हो जायेंगे।

दिमाग़ की कमज़ोरी के ख़त्म करने का एक अजीब व नादिर नुस्ख़ा व अमल

साबुत गोला (नारियल) 1 अदद, किशमिश अफ़ग़ानिस्तानी 100 ग्राम, सफ़ेद मिर्च 50 ग्राम, बादाम 100 ग्राम।

तरकीबः— किशमिश और सफ़ेद मिर्च नारियल में सुराख़ करके भर दें फिर सुराख़ का मुंह आटे वगै़रह से बन्द कर दें और आग के क़रीब गर्म राख में दबा दें। जब गोला (नारियल) भुन जादे आग से निकालकर बादाम मिलाकर सब को चारों को कूट लें और किये हुए पर (सूरे आला पा.30) वाली सूरत 21 मर्तबा कि अव्वल व आख़िर 7–7 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर दम कर दें। दम करने के बाद सबकी इकतालीस गोलियां बना लें, और ये सब तमाम काम एक ही रात में करना ज़रूरी है और फिर एक गोली रोज़ाना तमाम काम एक ही रात में करना ज़रूरी है और फिर एक गोली रोज़ाना सुबह या सोते वक़्त दूध या पानी से इस्तेमाल करें। इन्शा अल्लाह कैसा भी

कमज़ोर दिमाग़ हो या किसी भी तरह की दिमाग़ी शिकायत हो सब ख़त्म हो जायेगी और दिमाग़ आला तरीक़ा से ख़ूब ख़ूब काम करेगा। नुस्ख़ा मुजर्रब व आज़मौदा है और बेहद मुफ़ीद है बस अल्लाह ही शिफ़ा अता फ़रमाने वाले हैं। (मुजर्रबात सही)

दिमाग़ की कमज़ोरी के दफ़ा के लिए अमल मुजर्रब

ये अमल बहुत इस्तेमाल में आया हुआ है कि जिस शख़्स को भूलने का मर्ज़ हो या सबक़ याद नहीं रहता हो तो इसको चाहिए कि सोते वक़्त रात को या फ़ज्र की नमाज़ के सूरे अलम नशरह 7 मर्तबा और अव्वल आख़िर 3–3 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर पानी पर दम करके पी लिया करें पाबन्दी के साथ इन्शा अल्लाह काफ़ी फ़ायदा हासिल होगा। (मुजर्रबात उस्ताज़)

अगर किसी फलदार दरख़्त में फल आने बन्द हो गये हों

जिस फल वाले दरख़्त में फल आने बन्द हो गये हों तो इसके लिए चाहिए कि एक काग़ज़ पर अलहम्द शरीफत्र लिखें और दर्मियान में मालिकि यौमिद्दीन को सात मर्तबा लिखें। फिर आमीन लिखने के बाद दुरूदे इब्राहीमी लिख दें इस काग़ज़ को बारिश के पानी से धोकर उन दरख़्तों की जड़ों में डाल दें जिस में फल आने बन्द हो गये हो इन्शा अल्लाह तआला इसी साल फल आने लगेंगे। हां ये एक काग़ज़ का अमल एक दरख़्त के लिए है याद रखें।

(मुजर्रबात अकाबिर)

बद नज़री ख़त्म करने के लिए

जिस किसी का नज़र का ख़लल होता है तो ये तावीज़ निहायत मुजर्रब है। ख़्वाह वह आदमी से मुतअ़ल्लिक़ हो या जानवर से सबके लिए आम है। तावीज़ की इबारत के अल्फ़ाज़ ये हैं–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ كُلِّ
شَيْطَانٍ وَّهَامة وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَا مَة تحصَنت بحصن الف لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا

بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ. (مجربات اکابر)

बद नज़री के ख़त्म करने के लिए तेज़ असर अमल व दुआ

ख़रासां में एक नज़र लगाने वाला था वह एक दिन कुछ लोगों के साथ बैठा हुआ था कि इसी दर्मियान एक शख़्स ऊँट वाला अपने ऊँटों को हुंका कर ले जा रहा था। ये नज़र लगाने वाला शख़्स अपने दोस्तों से कहा कि इन जाने वाले ऊँटों में से कौन से ऊँट का गोश्त खाओगे दोस्तों ने एक उम्दा ख़ूबसूरत ऊँट की तरफ़ इशारा करके बताया। इस नज़र लगाने वाले शख़्स ने इसी ऊँट की तरफ़ नज़र भर के देखा वह ख़ूबसूरत ऊँट इसी वक़्त ज़मीन पर गिर गया। मगर ऊँट का मालिक बड़ा समझदार था और आलम भी था। मालिक ने कहा कि जिसने मेरे ऊँट को नज़र लगायी है इसको चाहिए कि नज़र को जल्दी ख़त्म करे और ये कलिमात पढ़ने चाहियें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ عَظِيْمُ الشَّانْ شَدِيْدِ الْبُرْهَانْ مَاشَاءَ اللّٰه كَانَ حَبَسَ حَابِسٍ مِنْ حَجَرٍ يَّابِسٍ وَّشِهَابٍ قَابِسٍ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ رَدَدْتُّ عَيْنَ الْعَائِن عَلَيْهِ وَعَلٰى اَحَبِّ النَّاسِ اِلَيْهِ وَفِىْ كَبِدِهٖ وَكُلْيَتِهٖ لَحْمٌ رَقِيْقٌ وَّقِيْقٌ فِيْمَا لَهٗ يليق فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ. ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ.

ये दुआ पढ़ते ही वह ऊँट फ़ौरन सही व सालिम खड़ा हो गया। जैसे कि इस पर नज़र लगी ही नहीं थी। लिहाज़ा इस दुआ को लिखकर इस शख़्स के गले में डालना जिसको हमेशा नज़रें लगती रहती हैं। बहुत मुफ़ीद है और इन कलिमात को पढ़कर दम करना भी मुफ़ीद है। बहुत मजर्रब है। (मुजर्रबात सही मुजर्रबात देरबी)

नज़रे बद के ख़त्म करने के लिए बेहतरीन तावीज़

जिस शख़्स का नज़र हो जाये इसके लिये एक कागज़ पर वह तीन सूरतें लिखकर इसके सर पर बांध दें। जिन तीन सूरतों में हर्फ़ काफ़ नहीं है, 1.वलअस्र, 2.लिईलाफ़ि, 3.कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़,

बिस्मिल्लाह के साथ साथ। इन्शा अल्लाह फ़ौरन् निजात हासिल होगी। (मुजर्रबात)

आंख के ज़ख़्म के लिए और हर जानवर के बदनज़री मिटाने के लिए

अगर किसी जानवर की आंख में ज़ख़्म हो जाये या घोड़े, गाय, भैंस, बकरा वग़ैरह वग़ैरह तमाम जानवरों की बद नज़री के शिफ़ा के लिए इस नक़्श को लिखकर गले में बांध दें। इन्शा अल्लाह तआला बहुत मुफ़ीद पायेंगे। नक़्श ये है–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. بسم اللّٰه الرحمن الرحيم.

١٤١و١٤١و١٦١ اللّٰه هو هو هو	١٦١٩١و١٤١و١٤١و١١١٨ ١١١ ع١٥و١١ اللّٰه هو هو هو	١١١١١١١١١١٨١١١٤١١١ اللّٰه هو هو هو
	ان ز س ف و اش م ن و ع ف ى س ر ا ى اللّٰه هو هو هو	
	ل م ع و ل س ه د لا ل م ك س م ح م س ه اللّٰه هو هو هو	
	روان خ ذ ك ف ج ش ت ظ خ ز ا ه ط اللّٰه هو هو هو	
	م ى ش ذ ر ه ط ح ا م ر خ ع ط ك ل اللّٰه هو هو هو	
	ن ب ع س ى ل م ر ض ع م ب ر ل اللّٰه هو هو هو	
	[illegible]	

नज़रे बद से हिफ़ाज़त का नक़्श

इस नक़्श को लिखकर इस इन्सान के गले में डाल दें। जिसको नज़र लग चुकी है या नज़र लग जाने का ख़ौफ़ हो मुफ़ीद पायेंगे। मुजर्रब है। नक़्श ये है–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم

حسبنا	اللّٰه	ونعم	الوكيل
عزيز	صابق	محيط	مغنى
مانع	واحد	مهلك	عالم
محى	مميت	معبود	باقى

एक अजीब नुकता

नज़र का लगना हक़ है। नज़र इन्सान को क़बर में दाख़िल कर देती है और खाये जाने वाले जानवरों को हांडी और देग में दाख़िल कर देती है यानी इस जानवर के गोश्त पकने की नौबत आ जाती है। सही रिवायत में है कि अगर किसी को कोई चीज़ भली और तअज्जुब खेज़ मालूम हो और वह तअज्जुब में पड़ने वाला शख़्स इस चीज़ को देख कर ماشاء الله لاحول ولا قوة الا بالله कह दे तो नज़र लगने से हिफ़ाज़त हो जाती है।

बद नज़री से निजात पाने के लिए मुजर्रब है

अगर किसी को नज़रे बद हो गयी हो तो इसके लिए चाहिए कि सात मिर्च मुट्ठी में लेकर मरीज़ का कुल बदन के चारो तरफ़ घुमाये 7 मर्तबा और हर फेरे में ये पढ़ता रहे।

اَلْاِسْلَامُ حَقٌّ وَّالْكُفْرُ بَاطِلٌ وَبِحَقِّ اللّٰهِ الْحَقُّ بِكَلِمَاتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ.

फिर इन मिर्चों को आग में डाल दें। अगर नज़र लगी होगी तो फ़ौरन् इन्शा अल्लाह इसी वक़्त ख़त्म हो जायेगी और इसी वक़्त मरीज़ को फ़ायदा व सुकून मिल जायेगा। मुजर्रब है और सही है वक़्त ज़रूरत पे फ़ायदा उठायें।

जिसको नज़रे बद लगने का अन्देशा हो

जिसको ये ख़ौफ़ हो कि मुझे किसी की नज़र लग जायेगी या इसको आम तौर पर नज़रे लगती रहती हों तो इसको चाहिए कि वह ऐसे मौक़े पर इस दुआ को पढ़ लिया करे इन्शा अल्लाह बद नज़री से महफ़ूज़ रहेगा। दुआ ये है–

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ لَا شَيْئَ اَعْظَمُ مِنْهُ بِكَلِمَاتِهِ التَّامَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بِرٌّ وَلَا فَاجِرٌ وَاَسْمَآءُ اللّٰهِ الْحُسْنٰى وَمَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ وَذَرَا وَبَرَاَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ ذِىْ شَرٍّ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَا صِيَتِهَا اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ. (مجربات صحيح)

नज़रे बद से हिफ़ाज़त की एक और दुआ

जिसने सुबह व शाम पढ़ा होगा वह ख़ुद तजुर्बा करेगा और जान लेगा कि इसके असरात और ख़ासयात और फ़वाइद किस क़दर भरे हुए हैं और इनका क्या मक़ाम व अहमियत है और इन कलिमात अल्लाह के ज़रिये किस क़दर नज़रे बद से हिफ़ाज़त है। क्योंकि ये दुआऐं हथियार हैं और हथियार चलाने वाले के फ़ायदे ही के लिए होता है। एक ऊपर गुज़र चुकी है और ये है—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَلَیْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ یَشَاءْ لَمْ یَكُنْ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَعْلَمُ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ وَاِنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا وَاَحْصٰی كُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ الشَّیْطٰنِ وَشِرْكِهٖ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بنا صِیَتِهَا اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ.

नज़रे बद से बचने की आम जामेअ़ मुस्तनद दुआ

जब नज़र लगने वाले को अपनी ही नज़र लगने का ख़ौफ़ व अन्देशा हो तो उसे ये दुआ पढ़कर इस शर को दूर करना चाहिए जिसको जनाब मुहम्मद स0अ0व0 ने हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ि0 से फ़रमाया– जब सुहैल बिन हनीफ़ रज़ि0 की उन्हें नज़र लगी कि क्या तुम ने दुआ बरकत नहीं की। यानी اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَیْهِ नहीं पढ़ा مَاشَآءَ اللّٰهُ لَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़ लेते और इसी से मुतअ़ल्लिक़ हज़रत जिब्राइल अलै0 का दम करना जो उन्होंने जनाब हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह स0अ0व0 पर किया था। वह ये है–

بِاسْمِ اللّٰهِ اُرْقِیْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ یُوْذِیْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسِیْ اَوْعَیْنٍ حَاسِدٍ یُشْفِیْكَ بِاسْمِ اللّٰهِ اُرْقِیْكَ.

नोटः– जो दुआ हज़रत जिब्राईल अलै0 ने आंहज़रत स0अ0व0 को पढ़कर दम की हो वह गोया बराहे रास्त आप स0अ0व0 नाज़िल हुई इसके फ़ायदे मन्द होने में कौन ईमान वाला शक व शुबा कर

सकता है। ज़रूरत सिर्फ़ इसकी है कि इन दुआओं को यक़ीन कामिल के साथ पढ़ा जाये। फिर इसका असर मशाहदा फ़रमायें। झाड़ फूंक और दम करना भी हक़ीक़त में एक तरह की दुआ है और इसका असर हैरत अंगेज़ तरीक़े पर ज़ाहिर होता है। जैसे नज़र का ही लगना ये एक ऐसी हक़ीक़त है कि जिसके इन्कार की कोई गुन्जाईश नहीं होती और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी में हर इन्सान को इसका मशाहदा और तजुर्बा होता है।

नज़र लगे हुए शख़्स के लिए मुजर्रब अमल

सूरे अलहम्द शरीफ़ और चारों कुल 7–7 मर्तबा पढ़कर दम कर दें और दम करके ही पानी पिला दें। इन्शा अल्लाह इसी लम्हे तन्दुरुस्ती हासिल हो जायेगी। (मुजर्रबात सही)

जब नज़र लग जाये तो क्या करे

हदीस शरीफ़ में है कि जिसको नज़र लग जाये तो हुज़ूरे पाक स०अ०व० के इस इरशाद से झाड़ने यानी ये कलिमात पढ़कर नज़र लगे हुए शख़्स पर दम करे।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا.

फिर इस नज़र लगे हुए शख़्स से कहे उठ जाकर खड़ा हो अल्लाह तआला के हुक्म से इस रिवायत को इब्न माजा निसाई वग़ैरह ने बयान किया है।

किसी की नज़र उतारना

अगर किसी को किसी की नज़र लग जाये तो नीचे वाली आयत शरीफ़ सात मिर्चों के साथ सात मर्तब इस तरह पढ़े कि मिर्चों को नज़र लगे हुए शख़्स परसात मर्तबा घुमायें और सात मर्तबा इन आयतों को पढकर मरीज़ पर दम भी कर दें, और इन मिर्चों को आग में छोड़ दें इन्शा अल्लाह तआला फ़ौरन् नज़रे बद ख़त्म हो जायेगी। बहुत मुजर्रब है और मुस्तनद है। आयत शरीफ़ ये है–

بسم اللّٰہِ الرَّحمٰنِ الرَّحِیم۔ وَاِنْ یَّکَادُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا لَیُزْلِقُوْنَکَ بِاَبْصَارِھِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّکْرَ وَیَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ وَمَا ھُوَ اِلَّا ذِکْرٌ لِّلْعَالَمِیْنَ۔

पारह 29 सूरे क़लम रुकूअ़ 2 की आख़िरी आयतें हैं।

नकसीर का तावीज़ जो कि मुजर्रब है

नकसीर वाले की पैशानी और माथे पर ये तावीज़ लिखा जाये या लिख कर लटकाया जाये इन्शा अल्लाह तआ़ला बहुत मुफ़ीद पायेंगे।

بسم اللّٰہِ الرَّحمٰنِ الرَّحِیم۔ قِیْلَ یٰٓاَرْضُ ابْلَعِیْ مَاءَكِ وَیٰسَمَآءُ اَقْلِعِیْ وَغِیْضَ الْمَآءُ وَقُضِیَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَی الْجُوْدِیِّ۔

और एक मिट्टी की हंडिया में पंडोल डालकर इसमें पानी भरे रखें और इस पर सूरे फ़ातिहा पढ़कर दम कर दें और यही पानी चन्द दिन पिलायें। इन्शा अल्लाह हमेशा के लिए इस मर्ज़ से निजात मिल जायेगी। मुजर्रबात में से है। मुजर्रबात अकाबिर ज़ादुल मआ़द वग़ैरह। (मुजर्रबात नज़ीर)

नकसीर के मर्ज़ से निजात पाने के लिए

नकसीर के मर्ज़ से निजात पाने के लिए इस तावीज़ को ज़ाफ़रान से लिखकर कि इस में कुछ ख़ुशबू भी हो लिाकर इस तावीज़ व नक़्श को सात दिन पिलायें और यही नक़्श व तावीज़ को मक़ाम नकसीर पर बांध दें इन्शा अल्लाह बांधते ही नकसीर थम जायेगी।

بسم اللّٰہ الرَّحمٰنِ الرَّحِیم

لوطا	لوطا	لوطا
لوطا	لوطا	لوطا
لوطا	لوطا	لوطا

اِنَّ اللّٰہَ یُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ اَمْسَکَھُمَا مِنْ اَحَدٍ مِنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ کَانَ حَلِیْماً غَفُوراً۔

मिर्गी के मरीज़ का इलाज

एक अल्लाह के वली मिर्गी वाले मरीज़ के दाहिने कान में अज़ान और बायें कान में अक़ामत कहकर ही इलाज फ़रमा दिया करते थे और वह फ़ौरन अच्छा हो जाता था मिर्गी का अज़ान व अक़ामत ही से इलाज करते थे।

मिर्गी के मर्ज़ से निजात पाना

मिर्गी के मरीज़ पर हुज़ूर स0अ0व0 اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ पढ़कर दम फ़रमाया करते थे और मिर्गी वाले मरीज़ पर आयतुल कुर्सी और मुअव्वज़तीन पढ़कर दम करना चाहिए और उन्हें मज़कूरा आयतें व सूरतों का तावीज़ बनाकर गले में डालने से इन्शा अल्लाह मौत तक इस मर्ज़ से निजात मिल जायेगी।

नोटः– मिर्गी का मख़्सूस नक़्श है ज़रूरतमंद मुलाक़ात करें। (मामूलाते नबवी) (मुजर्रबाते अकाबिर)

जिस शख़्स को मिर्गी का दौरा पढ़ता हो

मिर्गी की शिकायत में नीचे वाली आयात लिखकर गले में डालें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. رَبِّ اِنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ
اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ.

और पीने के लिए ज़ाफ़रान से लिखकर सुबह नहार मुंह 21 दिन पिलायें वरना चालीस दिन इन्शा अल्लाह इस मर्ज़ से बिलकुल्लिया निजात मिल जायेगी। आयात शिफ़ा दूसरे मक़ाम पर देखेंगे। (मुजर्रबात सही)

मिर्गी के मर्ज़ से शिफ़ा हासिल करने का मुजर्रब तावीज़

जिस शख़्स को मिर्गी की बीमारी हो और इसके गले में ये तावीज़ लिखकर डाल दें तो इन्शा अल्लाह अलक़वी. निजात हासिल होगी। मुजर्रब है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَمْ اَبْرَمُوْا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ. الٓمٓ. الٓمٓصٓ. الٓمٓرٰ.

كٓهٰيٰعٓصٓ. طٰهٰ. طٰسٓ. طٰسٓمٓ. يٰسٓ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ حٰمٓ عٓسٓقٓ قٓ نٓ والقلم وما يسطرون.

चैचक के वास्ते तावीज़

इस तावीज़ को मोम जामा करके मरीज़ के गले में डाल दें।

بسم اللّٰہ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

11	14	1	8
5	4	15	10
16	9	6	3
2	7	12	13

ये तावीज़ पूरे घर की चैचक से हिफ़ाज़त के लिए

इस तावीज़ को मोटे बड़े हरफ़ों में लिखकर घर में चिपका दें या हर एक के बाज़ू पर बांधें मुफ़ीद पायेंगे।

بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم

سلی	سلی	والقرعه
السر	السر	یاوس
الفرس	اس	السلام

बच्चे की चैचक के वास्ते तावीज़

इस तावीज़ पर आमिल मरीज़ से सात रुपये ज़कात के ज़रूर लेवे और ये तावीज़ बच्चे के गले में मोम जामा करके डाल दें और सात रुपये अगर खुद मरीज़ हो तो किसी ज़रूरतमंद को जो कि मुस्तहिक़ हो ख़ैरात कर दे।

नक़्श
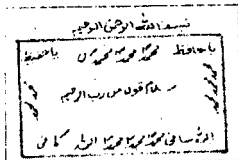
चैचक के लिए तावीज़

इस तावीज़ को लिखकर मोम जामा करके गले में डालें इन्शा अल्लाह अस्सलाम मुफ़ीद पायेंगे।

بسم الله الرحمن الرحيم

ص	9	2
2	5	7
8	1	6

चैचक से हिफ़ाज़त का गंडा

जब ये ख़ौफ़ हो कि बच्चे के चैचक निकलेगी या निकल रही हो तो ऐसी सूरत में नीले रंग का धागा लेवें और इस पर सूरे रहमान पढ़ें और जब فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ. आये तो इस धागे पर एक गिरह लगा दें और दम कर दें। ऐसी ही करते करते 31 गिरहें लग जायेंगे। फिर इस धागे को चैचक वाले के गले में डाल दें चैचक की तकलीफ़ से तख़्फ़ीफ़ होगी और बहुत मुफ़ीद पायेंगे। मुजर्रब है।

चैचक के वास्ते मुजर्रब तावीज़

इस तावीज़ को लिख कर चैचक वाले के गले में डाल दें। डालते ही घुट जायेगी और बहुत जल्द शिफ़ा हासिल होगी।

بسم الله الرحمن الرحيم

11	14	1	8
5	4	15	10
16	9	6	3
2	7	12	13

अगर रात को बच्चे डरते हों तो या रोते हों

गोल दायरे के शक्ल में ये असहाबे कहफ़ के नाम लिखें और दर्मियान में दायरे के कृतमीर लिखें। असहाबे कहफ़ के नाम ये हैं– يمليخا مكسلمينا كشفوطط تبيونس كشافطيونس آزرفتيونس يوانس بوس وكلبهم قطمير يه قطمير दर्मियान में लिखेंगे। तावीज़ बनाकर गले में डाल दें फ़ायदा होगा। (मुजर्रबाते अकाबिर) (मुजर्रबात सही)

बच्चों की हर तकलीफ़ में व आफ़ात में निजात का तावीज़

ये तावीज़ बावज़ू ही लिखेंगे इस तावीज़ को रसूल अल्लाह स0अ0व0 हज़रत हसन व हुसैन रजि0 को दिया करते थे और यूं फ़रमाते थे कि यही तावीज़ हज़रत इब्राहीम अलै0 अपने साहबज़ादे हज़रत इस्माईल अलै0 और हज़रत इस्हाक़ अलै0 को दिया करते थे। तावीज़ मे लिखने वाली इबारत ये है–

اعوذ بكلمات الله التامة من شر كل شيطان وهامة ومن شر كل عين لامة.

नोट:– हमारे बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से ये है कि ऊपर वाली इबारक के साथ تحصنت بحصن الف الف لاحول ولا قوة الا بالله. ज़्यादा कर दें। (मुजर्रबात उस्ताज़) (मुजर्रबात सही)

बच्चों के सूखे या मसान के लिए मुजर्रब इलाज

रोग़ने ज़ैतून 100 ग्राम तिल का असली तेल लेकर दोनों को मिलाकर अलहम्द शरीफ़ मअ़ बिस्मिल्लाह के तीन मर्तबा, आयतुल कुर्सी तीन मर्तबा, सूरे वस्साफ़्फ़ात ला रयीब तक 3 मर्तबा, सूरे जिन शतता तक तीन मर्तबा, 3–3 मर्तबा चारों कुल पढ़कर इस तेल पर दम करें। इसके बाद इस बच्चे का सर मुंडवाकर रोज़ाना ये पढ़ा हुआ तेल पूरे बदन पर कि कोई जगह बाक़ी न रहे मालिश कर दिया करें 40 दिन तक मुसलसल मालिश करते रहें। इन्शा अल्लाह अलक़वी ये शिकायत जड़ से ख़त्म हो जायेगी। (मुजर्रबात मशाईख़)

बच्चों की हर शिकायत के लिए ये तावीज़ मुजर्रब है

एक मुहद्दिस अज़ीम कुतुबे वक़्त रह0 बच्चों की हर तकलीफ़ में ये तावीज़ दिया करते थे। जो कि बहुत मुफ़ीद है इन्शा अल्लाह तआ़ला। इबारत ये है–

اعوذ بكلمات الله التامات من شر ما خلق وصلى الله تعالىٰ على خير خلقه محمد واٰله وبارك وسلم.

गले में डालेंगे। (मुजर्रबात ख़लील)

बच्चों के रोने और दूध न पीने की शिकायत दूर करने के लिए

अगर कोई बच्चा बहुत रोता हो और दूध न पीता हो इसके अलावा दूसरी क़िस्म की बच्चे की शिकायतों में इस तावीज़ को लिखकर मोम जामा करके गले में डाल दे। डालते ही सब शिकायत ख़त्म हो जायेगी। इन्शा तआ़ला तावीज़ की इबारत ये है।

بسم الله الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ وَلَبِثُوْا فِىْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَزْدَادُوْا تِسْعًا.

नक़्श ये है–

د	ط	ب
ج	ه	ر
ح	ا	و

बच्चों की हिफ़ाज़त का मुजर्रब तावीज़

ये तावीज़ हमेशा बच्चों के हिफ़ाज़त के सिलसिले में मुफ़ीद पाया गया है। इस तावीज़ को नया वज़ू करके लिखें।

بسم الله الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. انى توكلت على الله ربى وربكم مامن دابة الاهو اخذ بنا صيتها ان ابى على صراط مستقيم اعوذ بكلمات الله التامات من

غـضبه وعقابه وشر عباده ومن همزات الشياطين وان يّحضرون الله شافى الله كافى برحمتك يا ارحم الراحمين. (مجربات صحيح)

बराऐ हाजत मुफ़ीद तरीन तावीज़

सही रिवायत में है कि असहाबे कहफ़ के नामों को एक काग़ज़ पर लिखकर इस बच्चे के गले में डाल दें जो बहुत रोता हो मुजर्रब है। (मुजर्रबात सही)

बराऐ निस्बत

अगर किसी लड़की का रिश्ता निकाह न आता हो और वह लड़की पैग़ाम न आने की वजह से आंखें उठा उठा कर देखती हो तो ऐसी सूरत मे इस लड़की के गले में इस तावीज़ को मोम जामा करके डाल दें इन्शा अल्लाह बहुत जल्द ही पैग़ाम आने लगेंगे नक़्श व तावीज़ ये है और मुजर्रब है। ये नीचे वाली इबारत भी लिखेंगे।

بسم الله الرحمن الرحيم

8	11	14	1
3	16	9	6
3	16	9	6
10	5	4	15

بسـم الـلّه الرحمن الرحيم. يَاَيُّهَاالنَّبِىُّ انا ارسلنك شاهداً ومبشرا ونذيرا وداعيـا الـى الـلّـه بـاذنـه وسـراجـا وقمر منيرا وبشرالمؤمنين بان لهم من الله وفـضـلا كبيـرا. ولاتـطـع الـكـافـرين والمنافقين ودع اذاهم وتوكل على الله وكـفـى بـالـلّه وكيلا. اعوذ بكلمات الله التامات من غضبه وعقابه وشرعباده ومـن هـمزات الشياطين وان يحضرون الله شافى الله كافى برحمتك يا ارحم الراحمين. (مجربات استاذ)

रिश्ता–ए–निकाह के लिए दूसरा तावीज़

मज़ीद इसी रिश्ता निकाह की शिकायत में इस तावीज़ को लिखकर औरत के गले में डाल दें मुफ़ीद है।

بسم الله الرحمن الرحيم.

الرن	حٰمٓ ق	طٰسٓ	عٓسٓقٓ
رحمٰن	نافع	مالك كافى	احمد لك
كفيل	الله	ملك رب	محمد ابوبكر
صٓ قٓ نٓ	الٓمٓصٓ	طٰسٓ	حم عٓسٓقٓ

जिस औरत का हमल न ठहरता है

जिस औरत का हमल न ठहरता हो या गिर जाता हो। इस शिकायत में इस तावीज़ को मोम जामा करके लम्बी डोरी से इतना नीचा डालें कि तावीज़ पेट पर पड़ा रहे। इन्शा अल्लाह अल अज़ीज़ बहुत जल्द तेज़ असर पायेंगे।

بسم الله الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. الله يعلم تحمل كل انثٰى وما تغيض الارحام وما تـزْدَادُ وَكُلّ شَئٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ يَازَكَرِيَّا اِنَّا نُبَشِّـرُكَ بِـغُلَامٍ ن اسْمُهٗ يَحْيٰ اَلَمْ نَجْعَلْكَ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا. وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى خَيْرِ خَـلْقِكَ مُـحَـمَّـدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْـحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضْبِهٖ وَعِـقَـابِـهٖ وَشَـرِّ عِبَـادِهٖ وَمِـنْ هَـمَزَاتِالشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَحْضُرُوْنَ اللّٰهَ شَافِى اللّٰه كافى برحمتك يا ارحم الراحمين.

नोटः— सूरे क़सस का नक़्श बनाकर डालना भी यही काम देता है। (मुजर्रबाते अकाबिर मुजर्रबाते उस्ताज़)

हमल की हिफ़ाज़त के लिए मुजर्रब अमल

एक काला धागा औरत के क़दर के बराबर लेवें जिसमें कि ग्यारह तारहों इकतालीस मर्तबा सूरे फ़ातिहा मअ़ बिस्मिल्लाह के पढ़ें। एक मर्तबा फ़ातिहा पढ़ने में इस धागे में गिरह लगाते जायें इसी तरह इकतालीस गिरह बन जायेंगे। लेकिन इकतालीस मर्तबा फ़ातिहा पढ़ने से अव्वल आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ें और इस धागा को हमल वाली औरत के पेट पर बंधवा दें बस। (मुजर्रबात अकाबिर) (मुजर्रबात सही)

मुज़क्कर औलाद के लिए

जिसके यहां लड़कियां ही पैदा होती हैं लड़के पैदा नहीं होते तो ऐसी सूरत में चाहिए कि इन कलिमात को ज़ाफ़रान से लिखकर इब्तेदा हमल की हालत में 21 दिन औरत को पिलायें इन्शा अल्लाह मुज़क्कर औलाद पैदा होगी। कलिमात ये हैं।

بسم الله الرحمن الرحيم. لاء لا الا من والله من وراء هم محيط حيث يلون بالحق ده فا ه ح ص د ١٢.

औलाद से मायूसी की हालत मे अमल

अगर किसी को औलाद से मायूसी हो गयी हो तो चाहिए कि रोज़ाना फ़ज्र की नमाज़ के बाद या इशा की नमाज़ के बाद सूरे मरयम अलै० मुकम्मल पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला मायूसी न रहेगी। ये अमल मुजर्रब व आज़मौदा है। (मुजर्रबाते गुलाम)

औलाद के लिए एक मुजर्रब अमल

मेरे उस्ताज़ मोहतरम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर मियां बीवी तन्दुरूस्त हों और इनके औलाद से मायूसी हो तो जिस दिन औरत हैज़ से पाक हो इस दिन तीन अण्डे देसी मुर्ग़ी के उबालें बादहु उनको छील लें और एक अण्डे पर लिखें وَالسَّمَاءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ. इस अण्डे को शौहर खा ले। दूसरे अण्डे पर लिखें والارض فرشنها فنعم الماهدون. इसको बीवी खाये। तीसरे अण्डे पर लिखें ومن كل شئ خلقنا زوجين لعلكم تذكرون. इसे आधा आधा काट कर दोनों खा लें और कुरबत इख़्तियार करें। इन्शा अल्लाह तआला औलाद से महरूमी न रहेगी। ये अमल मुस्तनद है। (मुजर्रबात उस्ताज़)

जिस औरत के पेट में बच्चा गिर जाता हो

वह औरत जिसका हमल गिर जाता हो तो इसके लिए चाहिए कि एक सफ़ेद कागज़ पर ये कलिमात लिखकर इस के गले में इस तरह डालें कि वह तावीज़ इसके रहम की जगह पर रहे। कलिमात

ये हैं–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. ان اللّٰه يمسك السموٰت والارض ان تزولا كذالك امسكتك يا ولد فلان بنت فلان........... بان تقر في مستقرك ومستودعك باللّٰه الذى له ماسكن فى الليل والنهار وهو السميع العليم اسكن بجلال اللّٰه. اسكن بجمال اللّٰه اسكن بقدرة اللّٰه اسكن بقوة اللّٰه اسكن يا ولد فلانه......... بنت فلانه........... باللّٰه الذى له مافى السموات والارض طوعا وكرها واليه يرجعون. وبعثوا فى كهفهم ثلاث مائة سنين وزدادو اتسعا ولا حول ولا قوة الاباللّٰه العلى العظيم.

मर्तबा लिखें। तीन

हमल की हिफ़ाज़त के लिए

अगर किसी औरत का हमल गिरता रहता है या बच्चा मरा हुआ पैदा होता होकर मर जाता हो तो इस शिकायत में एक सफ़ेद कागज़ पर इस आयत शरीफ़ा को लिखकर औरत के पेट पर बांधें मुसलसल, इन्शा अल्लाह मुकम्मल हिफ़ाज़त में रहेगी।

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. هو هو هو اللّٰه فاوجس منهم خيفة قالوا لاتخف وبشروه بغلام حليم فاقبلت امرأته فى صرة فصكت وجهها وقالت عجوز عقيم.

दुकान व माकन की खै़र व बरकत के लिए नक़्श

ये नक़्श दुकान व मकान की ख़ैर व बरकत के लिए है अदब व ऐहतराम के साथ लगायें। उस्ताज़े मोहतरम का मख़्सूस तरीक़े पर हदिया व तोहफ़ा है। नीचे इबारत भी लिखें और मोटे हरफ़ों में लिखें।

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم

لا	لا	لا
لا	لا	لا

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. ياوهاب هبلى من نعمة الدنيا والاخرة انك انت الوهاب اعوذ بكلمات اللّٰه التامات من غضبه وعقابه وشر عباده ومن همزات الشياطين وان يحضرون اللّٰه شافى اللّٰه كافى برحمتك يا ارحم

الراحمين. (مجربات صحيح)

जिस मकान दुकान में आसेब का ख़तरा हो

जिस मकान व दुकान में आसेब का ख़तरा हो और डर लगता हो तो ऐसे मकान वग़ैरह के हर कमरे में इस नक़्श को लिखकर लगा दें ये नक़्श ऐसे मक़ाम के लिए मुबारक नक़्श है और बहुत से मक़ामात पर इसका इस्तेमाल हुआ है। बहुत मुफ़ीद पाया गया है। नक़्श मुबारक ये है–

بسم الله الرحمن الرحيم

9916	9919	9922	9909
9921	9910	9915	9920
9911	9924	9917	9914
9918	9913	9912	9923

अपनी और घर की हिफ़ाज़त के लिए

रात को सोते वक़्त बिस्मिल्लाह के साथ आयतुल कुर्सी पढ़कर शहादत की उंगली पर दम करके मकान के चारों तरफ़ उंगली के इशारे से हिसार कर लिया जाता है। इन्शा अल्लाह तआला इससे फ़ितने व फ़साद के मौक़े पर हिफ़ाज़त होती है। (मुजर्रबात उस्ताज़)

दुकान की तरक़्क़ी के लिए मुजर्रब तावीज़

ये नक़्श ज़ाफ़रान से किसी नेक शख़्सियत से लिखवा कर दुकान में लगायें इन्शा अल्लाह गाहकों को दरवाज़ा कुशादा हो जायेगा। मुजर्रब नक़्श है–

بسم الله الرحمن الرحيم

5644834	5644837	5644840	5644826
5644839	5644827	5644833	5644828
5644828	5644842	5644835	5644832
5644836	5644831	5644829	5644841

दूसरा दुकान व कारख़ाना की हिफ़ाज़त व तरक़्क़ी के

लिए मुजर्रब नक़्श

ये नक़्श मुबारक बहुत मुबारक नक़्श है। दुकान की तरक़्क़ी के लिए और हर तरह की बरकत के लिए बहुत ख़ूब है इसके नीचे दुआ हिफ़ाज़त ज़रूर लिखें और दुकान व मकान व कारख़ाना फ़ैक्ट्री में इसका इस्तेमाल फ़रमायें दुआ हिफ़ाज़त का एहतमाम करें।

नक़्श
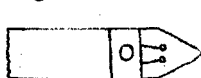
1543	1530	1545
1544	1542	1540
1529	1546	1541

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. ان الفضل بيداللّٰه يؤتيه من يشاء واللّٰه ذوالفضل العظيم. ذالك فضل اللّٰه يوقيه من يشاء واللّٰه ذوالفضل العظيم اعوذ بكلمات اللّٰه التامات من غضبه وعقابه وشرعباده من همزات الشياطين وان يحضرون اللّٰه شافى اللّٰه كافى برحمتك يا ارحم الراحمين.

जो माल फ़रोख़्त न हो

जो तिजारत वग़ैरह का माल फ़रोख़्त न होता हो इसके लिए एक कागज़ पर पचास मर्तबा वाव و लिखो और बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखकर ये आयत भी लिखें।

واذن فى الناس بالحج يأتوك رجلا وعلى كل ضامر يأتون من كل فج عميق.

मुफ़ीद साबित होगा इन्शा अल्लाह तआला। पारह 17

घर की हिफ़ाज़त के लिए बेहद मुफ़ीद तरीन मुजर्रब नक़्श

ये नक़ अपनी ज़ात के ए तैयार किया गया था। इस नक़्श से एक नाम नहाद हाफ़िज़ जामा मस्जिद का इमाम जिस ने नाजायज़ मेरे ऐतबार से फ़ायदा उठाया कि मैंने इस नक़्श को इसको घर में

लगाने के लिए दिया था। इसने ये नक़्श मुबारक फ़रोख़्त करना शुरू कर दिये। एक सौ इकयावन रुपये में बम्बई, सिलगटा, चकबालापुर, मंडिया, के.जी.एफ़, मलीकोटा, बनकापुरा ये तो वह जगहें हैं जिसका मुझे इलम हुआ बकने और फ़रोख़्त होने का गोया कि इसने इस नक़्श मुबारक को बिज़निस और कारोबारी दहिन्दा बना लिया था। इसके फ़वाईद बहुत हैं घर की हिफ़ाज़त के लिए मख़्सूस नक़्श है और इसमें हुज़ूर पाक स0अ0व0 का मुबारक नक़्श है जो कि आप ने हज़रत अली रजि0 से लिखवाया था। हज़रत अबू दजाजा रजि0 के लिए और हज़रत अबू दजाजा रजि0 ने इस नक़्श मुबारक को अपने घर में इस्तेमाल फ़रमाया था जबकि इनके घर में ख़बीस जिनने क़ब्ज़ा कर लिया था। इस नक़्श को नये वज़ू करके लिखें नक़्श मुकम्मल ये है।

8	1	6
3	5	7
4	9	2

8	11	14	1
13	2	7	12
10	5	4	1

بحق لا اله الا اللہ محمد رسول اللہؐ	لااله الا اللہ علی روح اللہ عمرؓ	لااله اللہ موسیٰ کلیم اللہ عمرؓ	بحق لااله الا اللہ محمدرسول اللہؐ
بحق فرقان	بحق زبور	بحق انجیل	بحق لااله الا اللہ ابراهیم خلیل اللہ
بحق جبرئیلؑ	بحق داؤدؑ	بحق سلیمان	بحق توراة
بحق لا اله الااللہ محمد رسول اللہؐ	حق اسرافیل بحق عزرائیلؑ	بحق میکائیلؑ	بحق لااله اللہ محمد رسول اللہ

9916	9919	9915	9920
9921	9910	9915	9920
9911	9924	9917	9914
9918	9913	9912	9923

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم هٰذا الكتاب من محمد رسول رب العالمين الى من طرق ٢ الدار من العما والزوّار من العالمين والسائحين الاطارقا يطرق بخدير يارحمن اما بعد فان لنا ولكم فى الحق سعة فان تك عاشقا مولعاً اوفاجراً مقتحماً او داعياً حقًّا باطلاً هٰذا كتاب اللّٰه ينطق علينا وعليكم بالحق انا كنا نستنسخ ماكنتم تعملون اتركوا صاحب كتابى هٰذا الوطلقوا الى عبدة الاوثان والاصام والى من يزعم ان مع اللّٰه الهاً اخر لا اله الا هو كل شئ هالك الاوجهه له الحكم واليه ترجعون تقلبون حٰمٓ لا تنصرون حٰمٓ عٓسٓقٓ تفرق اعداء اللّٰه وبلغت حجة اللّٰه ولا حول ولا قوة الا باللّٰه فسيكفيكهم اللّٰه وهو السميع العليم اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم بسم اللّٰه الرحمن الرحيم اللّٰه لا اله الا هو الحى القيوم لا تأخذه سنةٌ ولانوم له ما فى السموات وما فى الارض من ذالذى يشفع عندهٗ الا باذنه يعلم ما بين ايديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشئ من علمه الا بما شاء وسع كرسيه السموات والارض ولا يؤدهٗ حفظهما وهو العلى العظيم ط

मुर्दों को ख़्वाब में देखने और उनसे बातें करने का अमल

जो शख़्स किसी मुर्दे इन्सान को ख़्वाब में देखना चाहे तो इसको चाहिए कि जुमा की रात में चार रकअ़त नमाज़ पढ़े और चारों रकअ़तों में फ़ातिहा के बाद सूरे अलहाकुमुत्तकासुरू मुकम्मल पढ़े सलाम फेरने के बाद 13 मर्तबा सूरे अलहाकुमुत्तकासुरू पढ़कर सो जाये इस अमल से ख़्वाब में मुर्दे को देखेगा भी इन्शा अल्लाह बात करने का भी मौक़ा मिलेगा। (मुजर्रबात हसन)

अगर किसी दुशमन का ख़ौफ़ हो तो क्या करे

ये दुआ बड़ी कमाल व तासीर की दुआ है। इस दुआ को मुक़दमे की हक़ पर कामयाबी के लिए पढ़ना भी बेहद मुफ़ीद है। अगर पढ़ने वाला हक़ पर होगा तो ज़रूर हक़ मिलकर रहेगा। मुजर्रब व आज़मौदा है और सही रिवायत से इसका सबूत है। हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सात मर्तबा या ग्यारह मर्तबा ये दुआ पढ़ें इन्शा

अल्लाह दुशमन का खौफ़ जाता रहेगा और अल्लाह तआला दुशमनों के हर शर और तमाम उनकी स्कीमों से हिफ़ाज़त में रखेंगे कि दुशमनों ही को शिकस्त मिलकर रहेगी। दुआ ये है–

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ۔

नाजायज़ तअ़ल्लुक़ात को ख़त्म करने के लिए

अगर किसी के किसी से नाजायज़ तअ़ल्लुक़ात हो गये हैं तो इनकी तफ़रीक़ व अलेहदगी कराने के लिए ये नीचे वाला नक़्श भोज पत्र (पन्सारी के यहां मिलने वाला कागज़ है जो कि दरख़्त की खाल है) इस पर ज़ाफ़रान से लिखें और दो क़बरों के दर्मियान मिट्टी की हंड़ियां में रखकर दफ़न कर दें। नक़्श ये है–

नक़्श
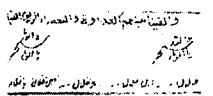
जब दुशमन हद से ज़्यादा दुशमनी पर तुल जाये

जब दुशमन हाथ धोकर पीछे पड़ जाये तो ऐसे वक़्त में हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यही दुआ اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ۔ 21 मर्तबा अपने दुशमनों को तसव्वुर करते हुए पढ़े इसके बाद अपनी सीधे हाथ की शहादत की उंगली पर मअ़ लुआ़ब के दम करे और आंखें बन्द करा लें और अपनी उंगली को नंगी तलवार समझते हुए और दुशमन को अपने सामने खड़ा हुआ समझते हुए क़त्ल कर दे जैसे तलवार से ही क़त्ल करते हैं। इस अमल से इन्शा अल्लाह अल अज़ीज़ दुशमन की तमाम तदबीरें फ़ैल हो जायेंगी और इसकी कोई स्कीम कारगर नहीं होगी और दुशमन रूस्वाह व ज़लील हो जायेगी। मगर ये अमल पाबन्दी के साथ बराबर मुसलसल होना चाहिए। (मुजर्रबाते उस्ताज़)

दुशमन से हिफ़ाज़त और ज़ेर करने के लिए

दुशमनों के शिकन्जे को ढीला करने के लिए सूरे تَبَّتْ يَدَآ اَبِى لَهَبٍ सात मर्तबा पढ़कर नमक पर दम किया करें और सुबह व शाम दुशमन के ध्यान के साथ आग में डाला करें। (मुजर्रबाते उस्ताज़)

एक शानदार मुजर्रब अमल

जिनको ज़ालिमों ने सता रखा हो और इनकी नाक मे ज़ुल्म करते हुए दम कर दिया हो तो मज़लूम को चाहिए कि ग्यारह सौ मर्तबा يَابَدِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْقَهْرِ يَابَدِيْعُ इशा की नमाज़ के बाद 11 दिन तक एक जगह बैठकर रोज़ाना पढ़ें 7–7 मर्तबा अव्वल व आख़िर दुरूदे इब्राहीमी मिला लें। मुजर्रब है इन्शा अल्लाह तआला दुशमन ज़ेर हो जायेंगे। (मुजर्रबाते मशाईख़)

दुशमन मुख़ालिफ़ के दिल को मोम और नर्म करने के लिए

अगर किसी का ज़बरदस्त मुख़ालिफ़ हो और इसके दिल को मोम और नर्म करना मक़सूद हो तो ये नीचे वाला एक नम्बर 1 का नक़्श और 2 नम्बर का नक़्श इसके गले में डालें जिसके लिए मुहब्बत व उल्फ़त पैदा करनी है और नम्बर 3 का नक़्श मुख़ालिफ़ दुशमन के तकिये में रख दें और अगर तकिये में रखना मुम्किन न हो तो तावीज़ बनाकर पत्थर से अपने घर में दबा दें गोशे में और शकर और मीठे पर ये आयात पढ़कर दम करें–

يُحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ

3 मर्तबा पढ़कर दम करें और फिर ग्यारह मर्तबा ये आतये कुरानी पढ़ें–

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْلَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ الرَّحِيْمٌ

और दम करके जिस तरह भी मुम्किन हो दुशमने मुख़ालिफ़ को खिला दें। नम्बर 1 का नक़्श –

بسم الله الرحمن الرحيم

5	6	12	18	44
12	19	25	1	7
21	3	8	12	2
9	15	18	22	2
17	23	3	1	11

नोटः— नम्बर 2 और नम्बर 3 का बिल्कुल एक ही है। किसी तरह को कोई फ़र्क़ नहीं है और नम्बर 3 का नक़्श आगे देखें इसमें फ़लां बिन फलां की जगह पर मतलूब वलदियत मतलूब और तालिब और वलदियत तालिब लिखेंगे। ग़ौर व फ़िक्र के साथ नक़्श बनायें। या किसी अरबी जानने वाले से मालूम कर लें ताकि नक़्श मुकम्मल हो जाये और फ़ायदा हासिल करने वाले बनें। अगर अदद तरतीब से न लिखें और ख़ाना पुरी तरतीब न करेंगे तो नक़्श बिल्कुल बेकार हो जायेगा ख़्याल रखें। (मुजर्रबात सही) (मुजर्रबात उस्ताज़)

नम्बर 3 :—

بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
لا لا رررررررررررررررررررررررررررررررر
٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩٩
ب ب ب ب ب ب ب
ع ع ع ع ع ع ع
ث ث ث ث ث ث ث
ح ح ح ح ح ح ح ح
يامقلب القلوب قلب فلان...... بن فلان...... فلان ...... ابن فلان......
يامصرف القلوب صرف قلب فلان...... بن فلان...... فلان...... ابن فلان......
يامؤلف القلوب الف قلب فلان...... بن فلان...... فلان...... ابن فلان......
ياناصر ياناصر ياناصر صلى الله على محمد و بارك وسلم دائما دائما

एक अजीब मुफ़ीद नसीहत का लतीफ़ा

अल्लामा इमाम जलालुद्दीन सयूती रह० फ़रमाते हैं। हज़रत इमाम बिन जोज़ी रह० से नक़ल करके कि शेख़ इब्न नासिर रह० ने अपने उस्ताज़ों से उन्होंने मैमूना से जो बेटी हैं शाह क़ौल की बग़दाद की रहने वाली थीं। रिवायत किया है उन्होंने कि मेरे पड़ोसी ने मुझे तकलीफ़ दी मैंने दो रकअ़त नफ़ल नमाज़ इस तरह पढ़ी कि दोनों रकअ़तों में अलहम्द शरीफ़ के बाद तमाम कुरान की हर सूरत के शुरू की एक एक आयत पढ़ी यानी एक सौ चौदह सूरतों में से शुरू की सिर्फ़ एक एक आयत पढ़ी फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद मैंने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह तू मेरी कफ़ालत फ़रमा। इस काम में यानी इस पड़ोसी की तकलीफ़ सुबह के वक़्त ऊपर से नीचे उतरा। इसका पांव फिसला और गिर पड़ा और मर गया। मैं इसके पास मौजूद थी। अजीब तासीर की चीज़ है।

अगर किसी दुशमन ज़ालिम को शरीअ़त की इजाज़त से ज़ेर करना हो

अगर वाक़ई कोई शदीद जानी दुशमन हो जो कि नाहक़ तुझ को दबाता हो और नाजायज़ ज़्यादतियां करता रहता हो बल्कि चन्द हक़ शनास मुफ़्तियों से ऐसे शख़्स के बारे में फ़तवा लेकर कि अगर वह मुफ़्ती हज़रात इसको ईज़ा देने की इजाज़त दें तो ये अमल करे कि एक तांबे के बर्तन में ये नक़्श लिखें और इस नक़्श के दर्मियान में फ़लां फ़लां की जगह जिसको हलाक करना हो इसका नाम लिखें और इस नक़्श को लिखकर ख़ुशबू की धुनी देवें और इस बर्तन को आग के क़रीब दफ़न कर दें कि वह आग एक दिन रात 24 घंटे इस बर्तन को गर्म रखें मगर ख़ुदा के वास्ते माफ़ करना ज़्यादा अच्छा है। कहीं कुछ ज़्यादती होकर आप ज़ालिम न बन जायें और हमेशा हमेशा के लिए अल्लाह वाहिद की आग में जलते रहें इस बिना पर

दरगुज़र का मामला करना चाहिए और अल्लाह तआ़ला से दुआ करनी चाहिए कि ऐ अल्लाह इसको सच्ची हिदायत अता फ़रमा और ये अमल बेवकूफ़ों और कम अक़लों को हरगिज़ न बतायें क्योंकि ये अमल फ़ौरन् असर करता है। और अगर किसी ने किसी के लिए नाहक़ किया तो इसके पागल व दीवाना होने का सामान भी है।

ज़ालिम दुशमन को हलाक करने के लिए जादू नुमा अमल

ये अमल उलमा दीन व मुफ़्तियान शरह मुतय्यन व अकाबिरीन से इजाज़त लेकर करें। अगर वह इजाज़त दें इस के हलाक करने की तो ये अमल करे वरना नाजायज़ इस अमल के करने का ख़्याल भी न लाये। जिस शख़्स का कोई दुशमन हो या ज़ालिम हो जो इस पर ज़ुल्म करता रहता हो और ये शख़्स इसके ज़ुल्म व सितम से मजबूर आ गया हो और मग़रूर हो कर इस की हलाकत चाहता हो कि ये तबाह हो जाये तो चाहिए कि एक ईंट लेवे और दरिया के किनारे क़िब्लारू होकर इस ईंट को अपने सामने रखे और सूरे यासीन को इकतालीस बार पढ़े और जब एक मर्तबा सूरे यासीन पढ़ ले तो एक चाकू से एक ख़त इस ईंट पर खींच दें इसी तरह इकतालीस बार करे हर मर्तबा ख़त्म यासीन पर ख़त खींचता रहे फिर इस ईंट पर नमाज़ जनाज़ा पढ़े। इसको अपना दुशमन तसव्वुर करते हुए इसके बाद इस ईंट को दरिया में फेंक देवे। इस अमल से दुशमन बहुत जल्दी हलाक हो जाता है। ये अमल आप के पास अमानत है। इस का इस्तेमाल मत करना मगर हां जब बेचेन व बेक़रार हो जायें दुशमन की दुशमनी व ज़ुल्म से और इस अमल के करने से पहले अल्लाह पाक से डरें और ख़ूब जान लो कि आख़िर एक दिन तुझ को भी मरना है और तुझ से तमाम बातों व अमलों का हिसाब किताब अल्लाह पाक लेने वाला है और अल्लाह तआ़ला के

इस इरशाद की तरफ़ तवज्जे व ध्यान दे। فَمَنْ عَفٰى وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ कि जो शख़्स माफ़ कर देवे और सुलह कर लेवे तो इसका सवाब अल्लाह तआला पर है। (कमा ज़िकरहु देरबी)

जो शख़्स अपने ऊपर दुशमन के ग़ल्बा पाने का ख़ौफ़ खाये

अगर किसी शख़्स को अपने ऊपर दुशमन के ग़ल्बा पाने का ख़ौफ़ हो तो इसको चाहिए कि इस दिन फ़ज्र की नमाज़ में पहली रकअत मे अलम नशरह और दूसरी रकअ़त में सूरे फ़ील पढ़े अलहम्द शरीफ़ के बाद ये अमल बुज़ुर्गाने सल्फ़ के मुजर्रबात में से है। (मुजर्रबात व मेरी)

दुशमन के शर से महफ़ूज़ रहने का मुजर्रब वज़ीफ़ा

अगर कोई शख़्स दुशमनों की दुशमनी का ख़ौफ़ खाये और वह दुशमन स्कीमें तैयार करते हों तो इस शख़्स को चाहिए कि चालीस मर्तबा सूरे लिईलाफ़ि कुरैश अस्र की या फ़ज्र की नमाज़ के बाद पढ़ लिया करें। ये अमल मुजर्रबात में से है और मुफ़ीद है। (मुजर्रबात सही व उस्ताज़)

सफ़र मे दुशमन वग़ैरह से हिफ़ाज़त के लिए

अबू ताहिर रह० फ़रमाते हैं कि मैंने सफ़र में जाने का इरादा किया और सफ़र में जाते हुए डर भी लग रहा था तो मैं इमाम क़ज़वीनी रह० के पास कोई अमल पूछने गया। जैसे ही मैं इनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो इमाम साहब रह० ने फ़रमाया कि जो कोई सफ़र करना चाहे और किसी दुशमन या दरिन्दे का ख़ौफ़ हो तो सूरे लिईलाफ़ि कुरैशी (कसरत से) पढ़ा करे। ये सूरत अमन देने वाली है, हर बुराई से, मैंने इस सूरत को अपने सफ़र में पढ़ा तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल व करम से और इस सूरत की बरकत से मुझे कोईर तकलीफ़ पेश न आयी (हालांकि इस ज़माने मे पैदल

सफ़र होता था, और रास्ते में चारों तरफ़ लुटैरों और दरिन्दों वग़ैरह से बद अमनी होती थी। इस सूरते हाल में अल्लाह तआ़ला ने फ़ज़ल फ़रमाया। (फ़िल आसार)

ज़ालिम हाकिम के सामने जाते वक़्त पढ़ने का अमल

अगर किसी शख़्स को अपनी किसी मजबूरी की वजह से किसी ज़ालिम फ़िरऔन हाकिम के सामने जाने का इत्तेफ़ाक़ हो तो हाज़िर होने से क़ब्ल चाहिए कि कम अज़ कम सात मर्तबा आयत कुतुब पढ़े इन्शा अल्लाह तआ़ला ज़ालिब के ज़ुल्म के फ़ैसले से महफ़ूज़ रहेगा और ज़ालिम हाकिम का दिल इसके हक़ में नर्म होगा। इस आयत कुतुब की बड़ी बड़ी तासीरें तजुर्बे में आयी हैं। आयत कुतुब ये है–

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ يُخْفُوْنَ فِيْ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (مجربات اکابر)

ज़ालिम के सामने खड़े होकर पढ़ने का मुजर्रब मुफ़ीद अमल

अगर किसी ज़ालिम जाबिर इन्सान के पास जाने का इत्तेफ़ाक़ हो और ये शख़्स इस ज़ालिम इन्सान की ज़बान बन्द करनी चाते तो चाहिए कि इसके पास खड़े होकर इकयावन मर्तबा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम इसकी सूरत की तरफ़ देखते हुए बग़ैर आवाज़ किये होंठों से पढ़े। इन्शा अल्लाह तआ़ला इसी वक़्त इस ज़ालिम इन्सान की ज़बान बन्द हो जायेगी और ज़बान पर ताला क़फ़ल लग जायेगी। ये अमल मेरे उस्ताज़े मोहतरम का मख़्सूस अतिया है और मुजर्रब है। इस अमल को हर मुख़ालिफ़ दुशमन

ज़ालिम के रूबरू व इस्तेमाल में लायें। इन्शा अल्लाह तआला ज़रूर इसके ज़ुल्म व सितम व सरकशी से निजात व अमन में रहेंगे। ख़ास तौर पर औरतों को लड़ाई झगड़ों के वक़्त ये अमल लड़ाई का जवाब देने की इख़्तियार करें। इन्शा अल्लाह मुफ़ीद पायेंगे।

सोते हुए मुख़ालिफ़ दुशमन से कुछ मालूम करना

अगर किसी को कोई मुख़ालिफ़ दुशमन ऐसा हो कि इसने इसके वास्ते कोई साज़िश तैयार की हो या इसके ख़िलाफ़ किसी स्कीम में शिरकत की हो और इस मुख़ालिफ़ दुशमन से कुछ दरयाफ़्त करना हो तो चाहिए कि एक काग़ज़ पर सूरे बय्यनह यानी लम यकुनिल्लज़ी न ककरू पूरी सूरत लिखे फिर وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا पारह एक रूकूअ़ 8 मे की दो आयतें लिखें और तावीज़ बनाकर मुख़ालिफ़ दुशमन के सीने पर रख दें जबकि वह गहरी ग़फ़लत की नींद सोता हुआ हो। इन्शा अल्लाह तआला इसी वक़्त इस मुख़ालिफ़ ने जो कुछ किया कराया होगा सब कुछ तफ़सील के साथ बता देगा और अगर कुद नहीं किया होगा तो ख़ामोश पड़ा सोता रहेगा। मुजर्रब व आज़मौदा है।

किसी शख़्स का कोई जानी दुशमन बिला वजह क़त्ल करने के लिए पीछे पीछे फिरता हो

जिसको दुशमन क़त्ल करने के दरपै हो और इसके अपनी हिफ़ाज़त का इन्तेज़ाम व बचाव न मिलता हो तो इस शख़्स को चाहिए कि 7 मर्तबा मुअव्वज़तीन (फ़लक़ व नास) आयतुल कुर्सी 11 मर्तबा और لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ की एक तस्बीह और فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ. एक तस्बीह और اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِىْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ. 7 मर्तबा सुबह व शाम ये वज़ीफ़ा पढ़ लिया करें इन्शा अल्लाह अल हफ़ीज़ किसी

क़िस्म की इस दुशमन से तकलीफ़ न पहुंचेगी। और वह कोई बाल बेका नहीं कर सकता इस अमल के साथ ये तावीज़ भी गले में या बाज़ू पर बांध लें तो ज़्यादा अच्छा है। तावीज़ की इबारत ये है लिखेंगे।

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. الٓرٰ كٓهٰيٰعٓصٓ حٰمٓ عٓسٓقٓ لن يصيبنا الا ما كتب اللّٰه لنا هو مولنا وعلى الله فليتوكل المؤمنون. رب انى مغلوب فانتصر رب انى مسنى الضر وانت ارحم الراحمين فان تولوا فقل حسبى الله لا اله الا هو عليه توكلت وهو رب العرش العظيم.

بسم الله الرحمن الرحيم

5915	5908	5913
5910	5910	5914
0011	5916	5909

इस तावीज़ को ज़ाफ़रान से लिखें इन्शा अल्लाह दुशमनो की नज़रों से औझल रहेंगे। हर बात में मुजर्रब व आज़मौदा है। (मुजर्रबात अकाबिर)

मज़कूरा शिकायत में दुरूद तुनज्जीना कार आमद है

अगर मज़कूरा ऊपर वाली शिकायत मे सलात यानी दुरूद शरीफ़ तुनज्जीना पढ़ें तो कसीर फ़ायदा अपनी आंखों से देखें इस दुरूद शरीफ़ का नाम सलात तनज्जीना है। मनाहिजुल हसनात में अय न मा कहानी की किताब फ़ज्र मुनीर से नक़ल किया है कि एक बुज़ुर्ग शेख़ सालेह मूसा अज़ीज़ (नाबीना) थे उन्होंने अपना गुज़रा हुआ क़िस्सा मुझ से बयान किया कि एक जहाज़ डूबने लगा और मैं इसमें मौजूद था। इस वक़्त मुझे ग़नूदगी सी हुई इसी हालत में जनाब मुहम्मद रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने मुझे ये दुरूद तालीम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि जहाज़ वाले इसको हज़ार मर्तबा पढ़ें अभी इसको तीन सौ मर्तबा भी मुकम्मल न किया था कि तूफ़ान

की तेज़ चलने वाली हवा रूक गयी और तमाम जहाज़ वालों ने निजात पायी। इस दुरूद शरीफ़ की बरकतें बे शमार हैं और हर क़िस्म की वबाओं और बीमारियों और मुश्किलात से हिफ़ाज़त होती हैं और दिल को अजीब व ग़रीब इत्मीनान और चेन हासिल होता है। बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से है। जो शख़्स इस दुरूद शरीफ़ को सोते वक़्त एक हज़ार मर्तबा पढ़ लिया करे तो ज़ियारते अक़दस से चालीस दिन के अन्दर मुशर्रफ़ होगा। रोज़ाना सत्तर मर्तबा सलाते तुनज्जीना का पढ़ना हाजतों के हल होने में मुफ़ीद है। ये दुरूद शरीफ़ तंगदस्ती मुफ़लिसी और नाजायज़ मुक़दमे ख़ूनी व फ़ौजदारी मुक़दमे ही क्यों न हो मुफ़ीद है। हर नमाज़ के बाद इस को तीन मर्तबा पढ़ना बहुत सी मुश्किलात को दूर करता है। जुमा के दिन जुमा की अज़ान और ख़ुत्बे के दर्मियान के वक़्त एक हज़ार मर्तबा फ़ौरी तौर पर किसी बे बसी को मिटा देने का असर रखता है। मुजर्रबुल मुजर्रबात है। सलाते तुनज्जीना ये है–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّاٰتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيٰوةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

(صحيح مجرب المجرب)

दुशमनों के मकर व फ़रेब से बचने के लिए मुजर्रब अमल

अगर किसी का जाने माली दुशमन इसके पीछे बग़ैर किसी जुर्म व गुनाह लग गया हो तो चाहिए कि ख़ास दोपहर ज़वाल आफ़ताब के वक़्त क़ब्रिस्तान में जाकर क़िब्ला रू होकर दो क़ब्रों के दर्मियान बैठ कर इकतालीस मर्तबा लिईलाफ़ि क़ुरैश सूरत पढ़े। इन्शा अल्लाह अल अज़ीज़ दुशमनों के तमाम शिकन्जे ढीले पड़ जायेंगे। इस अमल को इक्कीस या चालीस दिल मुसलसल करे।

दुशमनों से महफ़ूज़ व पोशीदा रहने का मुस्तनद मुजर्रब अमल

अगर किसी शख़्स के पीछे इसके दुशमन लग गये हों और ये बे जुर्म हो और दुशमन इसके क़त्ल का मन्सूबा बांधे हुए हों तो इसको चाहिए कि इस मुजर्रब अमल को इख़्तियार करे जैसा कि हज़रत इब्न अलकलबी रहि० से नक़ल है कि किसी ज़ालिम शख़्स ने किसी शख़्स को क़त्ल की धमकी दी। इसको अपने क़त्ल होने का ख़ौफ़ हो इस ने अल्लाह के वली से ज़िक्र किया उन अल्लाह के वली ने बताया कि घर से निकलने से पहले सूरे यासीन शरीफ़ पढ़ लिया कीजिए। फिर घर से निकलये ये बे कस व बेबस इन्सान यही अमल किया करता था। ख़ुदा के फ़ज़ल व करम से और इस अमल की वजह से रास्ते वग़ैरह में दुशमन इसको देख नहीं पाये थे कि दुशमनों की निगाहों पर परदा पड़ जाता था। (मामूलात औलिया)

फ़ौरी तौर पर ग़ैबी मदद का अमल वाक़िऐ के साथ

रिसाला कुरशिया में लिखा है कि रसूल अल्लाह स०अ०व० के मुबारक ज़माने मे एक शख़्स मदीना मनव्वरा की चीजें फ़रोख़्त करने के लिए मुल्क शाम ले जाता और मुल्क शाम की चीजें मदीना मुनव्वरा में लाता अल्लाह पर तवक्कल करते हुए लोगों से अलग थलग चलता क़ाफ़िले के साथ नहीं। एक मर्तबा मुल्क शाम से मदीना मुनव्वरा को आ रहा था कि रास्ते मं एक लुटैरा चोर घुड़सवार मिला। लुटैरा बोला एक ताजिर ठहर जा। ताजिर बोला कि मेरी जान छोड़ दे और सब कुछ माल व मताअ़ लेले। लुटैरा बोला कि ऐ ताजिर माल तो सब मेरा ही है मगर तेरी जान भी लूंगा। ताजिर ने ज़िद की कि ऐसा न कर मगर लुटैरा नहीं माना। ताजिर बोला कि ज़रा मुझे थोड़ी फुरसत और मोहलत दे दे लुटैरे ने मोहलत दे दी और यूं कहा कि यहां पर ये जितने भी मुर्दे और लाशें पड़ी हुई

हैं सब ने भी इसी तरह मोहलत ली थी। जिस तरह तू ले रहा है। ताजिर ने वज़ू करके चार रकअ़त नमाज़ पढ़ी नमाज़ के बाद आसमान की जानिब हाथ उठाकर ये दुआ पढ़ी–

يَاوَدُوْدُ يَاوَدُوْدُ يَاوَدُوْدُ يَاذَالْعَرْشِ الْمَجِيْدُ يَامُبْدِئُ يَامُعِيْدُ يَافَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ اَسْئَلُكَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِىْ فَلَا اَرْكَانَ عَرْشِكَ وَاَسْئَلُكَ بِقُدْرَتِكَ بِهَا عَلٰى خَلْقِكَ رَحْمَتِكَ الَّذِىْ وُسِعَتْ كُلَّ شَىْءٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَامُغِيْثُ اَغِثْنِىْ يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ يَامُغِيْثُ اَغِثْنِى.

उसी वक़्त फ़ौरन् एक सवार हरे रंग के कपड़े पहने हुए हाथ में नूर का हथियार लेकर आया लुटैरे ने सवार को देख कर ताजिर को छोड़ दिया और सवार की तरफ़ रूख़ किया सवार ने लुटैरे को घोड़े पर से ज़मीन पर गिराया औ सवार ताजिर से बोला कि ऐ ताजिर लुटैरे को क़त्ल कर। ताजिर ने जवाब दिया कि मैंने तो आज तक किसी को क़त्ल ही नहीं किया आने वाले सवार ने लुटैरे को ख़ुद क़त्ल करने के बाद ताजिर से कहा कि मैं तीसरे आसमान का फ़रिश्ता हूं।

नोटः– लोगों को चाहिए कि इस हथियार को हर वक़्त अपने पास रखें। बहुत क़ीमती हथियार है।

नाफ़रमान औलाद के लिए अमल व नक़्श

औलाद अगर नाफ़रमान व सरकश हो तो ये नक़्श व तावीज़ लिखकर गले में डाल दें और किसी मीठी चीज़ पर ये आयत 11 मर्तबा पढ़कर दम करके खिलायें –

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْلَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ الرَّحِيْم.

तावीज़ की इबारत व नक़्श ये है। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अलम नशरह पूरी सूरत लिखें इसके बाद नीचे ये लिखें।

اعوذ بكلمات الله التامات من غضبه وعقابه وشر عباده من همزات

الشيـاطيـن و ان يـحـضـرون الله شافی الله کافی برحمتك يا ارحم الراحمين.

(مجربات استاذ)

بسم الله الرحمن الرحيم

8	11	14	1
13	2	7	12
3	16	9	6
10	5	4	15

दूसरा तावीज़ नाफ़रमान औलाद के लिए

ये तावीज़ मेरे उस्ताज़ मोहतरम का मख़्सूस अतिया है और मुजर्रब व मुफ़ीद है। वह ये कि इस आयत को लिखकर तीन मर्तबा तावीज़ बनाकर मोम जामा करके गले में डाल दें। बहुत मुफ़ीद पायेंगे। इन्शा अल्लाह तआला। आयत ये है—

ربنا هب لنا من ازواجنا وذريتنا قرة اعين واجعلنا للمتقين اماما.

गुमशुदा चीज़ के लिए तावीज़

अगर किसी की कोई चीज़ गुम हो गयी हो या कोई शख़्स भाग गया हो तो इसके लिए इस तावीज़ को लिखकर दरख़्त पर लटकायें।

بسـم الـلّٰه الرحمن الرحيم. ربنا انك جامع الناس ليوم لاريب فيه ان الله لايخلف الميعاد اجمع بيني وبين فلان...... بن فلان......

और अगर चीज़ गुम हुई हो तो इसका नाम लिख दें। (मुजर्रबाते सही वल उस्ताज़)

दूसरा तावीज़ जो ज़ौद असर है

य तावीज़ बहुत ज़्यादा मुजर्रब है और बहुत मुफ़ीद है। अगर गुम होने वाली चीज़ हो तो लिख दें फ़लां चीज़ गुम हो गयी है

हाज़िर हो जाये। तावीज़ ये है–

नक़्श
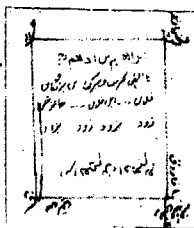
तरीका–ए–इस्तेमाल

इस नक़्श को लिखकर मकान जिसमे से चीज़ गुम हुई हो एक कोने में दो पत्थरों के दर्मियान दबा दें और हर ग्यारह दिन पर इस कोने से बदल दें और दीवार पर उंगली के इशारे से अस्तर जाअ पढ़ें और लिखें कि

अगर कोई गुम हो गया हो या कुछ चुरा ले गया हो:– इस हालत में एक कागज़ में فرددناه الى امه. पारह 20 सूरे क़सस لاتحزنون तक लिख कर फ़रार होने वाले का नाम और वलदियत लिखकर साईकिल के पिछले पहिये में तावीज़ बनाकर बांध दिया जाये और पहिया को उल्टा घुमाया जाये। इन्शा अल्लाह तआला ज़रूर कामयाबी मिलेगी। (मुजर्रबात जौहर)

चोर को तकलीफ़ देने का अमल

अगर किसी ने चोरी की हो और पता न चले तो इस अमल के ज़रिये चोर को तकलीफ़ दें। पहले लोगों से इज़हार कर दे कि जिस ने तुम से हमारे चीज़ ली हो वापस कर दे, और मोहलत दे और जब मोहलत के साथ वापस न करे तो ये अमल करे कि इन कलिमात को एक कागज़ पर लिखे इस आयत को लिखने के बाद

افرأيت من اتخذ الهه هواه اوضله الله على علم وختم على سمعه وقلبه
وجعل على بصره غشاه ولهم عذاب عظيم فان تولوا فقل حسبى الله لا اله

الاهو عليه توكلت وهو رب العرش العظيم له له له له له له له له ك له ك ك ك ع ع ع ع
ى ى ى ى ى ى ى ى ى ى الا الا الا الا الا الا الا الا لا الا الصـــمـــد فتــح بـطـن
الســارق مـن هـو سـرق بـحق لاحول ولا قوة الا بالله الا بالله العلى العظيم ج
احد جياالمرا اجبرئيل اجب يابيض اجب اجب اجب لنا هلورهانت.

चोर को तकलीफ़ देने का दूसरा अमल

इस नक़्श को तीन पानों में लिखकर फ़लीता बना लें और माल वाला शख़्स इस फ़लीता को चिराग़ मे जलाये और तीन तावीज़ इसी के आग मे ज़लाये और मिट्टी के बर्तन में लिखकर आग में दफ़न करे बिला शुबा चोर का ऐसी तकलीफ़ होगी कि फ़ौरन चोरी का माल वापस कर देगा या ये कि दस्तों की बीमारी में गिरफ़तार हो कर लम्बा बीमार हो जायेगा। मगर ये सब काम 24 घंटे के अन्दर अन्दर होने चाहिऐं। चोरी होने के बाद से लेकर (मुजर्रबात उस्ताज़)

118	121	132	111
123	112	117	122
123	126	119	116
13	115	114	125

एक और अमल गुमशुदा चीज़ के लिए

गुमशुदा चीज़ या भागे हुए इन्सान के लिए है कि सूरे वज़्ज़ुहा को गोल दायरे में लिखे मिस्ल मुकम्मल चांद के और दर्मियान की ख़ाली जगह में चोरी हुई चीज़ का या भागे हुए शख़्स का नाम लिखे और फिर इस कागज़ को बुलन्द दरख़्त पर बुलन्द जगह पर लटका दे और जहां से चीज़ गयी है। या भागने वाला भागा है इस जगह के दरवाज़े पर सात मर्तबा वज़्ज़ुहा सूरत खड़े होकर पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला गुमशुदा चीज़ या भागा हुआ शख़्स वापस आ जायेगा। (मुजर्रबात उस्ताज़)

गुमशुदा चीज़ वग़ैरह के लिए एक और नक़्श

इस नक़्श को लिखकर ख़ुशबू की धुनी देकर किसी फलदार दरख़्त में लटकायें तो इन्शा अल्लाह तआला गयी हुई चीज़ या भागा हुआ शख़्स वापस आ जायेगा।

नक़्श

चोर को शनाख़्त करने के लिए

चोर को शनाख़्त करने के लिए ये काम करें कि कुछ मिक़दार में कच्चे चावल लेवें। इतवार के दिन सात मर्तबा इस आयत को पढ़कर दम करें।

فلولا اذا بلغت الْحُلْقُوم وانتم حينئذٍ تنظرون و اذ قتلتم نفساً فَادّٰرَأتُمْ فِيْهَا
وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ.

फिर ये चावल इन को खिलायें जिन पर चोरी का शुबा हो। जो चोर होगा इसके हलक़ से नीचे नहीं उतरेंगे और थूकने पर मुंह से ख़ून आयेगा।

बहुत ज़रूरी नोटः– ऊपर वाली तदबीर से कई चोरियां पकड़ी गयी हैं मगर याद रखें किसी पर बिला वजह बद गुमानी करना और इसके चोर होने पर यक़ीन कर लेना बग़ैर किसी सबूत व दलील के दुरूस्त नहीं है। हां हिकमत से काम लें चोरी का मसअला बहुत दुशवार और मुश्किल है।

मेरे शेख़ पीर व मुर्शिद हक़ शनास व हक़ीक़त शनास मुदज़िल्लहुमुल आली ने इरशाद फ़रमाया कि अगर चोरियां इन अमलियात से मालूम हो जाता करतीं तो चोर चोरी करने से पहले इस अमल के करने वाले के गोली मारता फिर चोरी करता और मेरे

शेख़ पीर व मुर्शिद मुदज़िल्लहुमुल आली ने इरशाद फ़रमाया कि दुनिया में से अगर चोरी ख़त्म हो जाती तो हज़ारों कुफ़्ल ताले फ़रोख़्त करने वाले परेशान हो जाते। हज़ारों पक्के पक्के मज़बूत मकानात बनाने वाले राज मिस्त्री परेशान हो जाते। हज़ारों ईंटें और भट्टा लगाने वाले परेशान हो जाते। हज़ारों दरवाज़े बनाने वाले और तैयार करने वाले परेशान हो जाते हज़ारों पोलिस वाले अपनी नौकरी से महरूम हो जाते। लिहाज़ा चोरी का दरवाज़ा या चोरी का इल्म इन अमलियात से मालूम होना यक़ीनी तौर पर नहीं है बल्कि ये जो अमलियात आप के सामने हैं बअ़ज़ आमिलों के मुजर्रबात हैं। कुरान व हदीस से इस सिलसिले में मुतय्यन होना साबित नहीं है, और किसी पर बिला वजह बदगुमानी करना भी सही नहीं है। हज़रत ईसा अलै0 ने एक शख़्स को देखा कि इस ने चोरी की फिर आप ने इस से फ़रमाया कि तू ने चोरी की इस ने कहा कि नहीं तो हज़रत ईसा अलै0 ने फ़रमाया सही कहता है मेरी आंख ने ग़लत देखा बदगुमानी के सिलसिले में इस वाक़िऐ को सामने रखें और अपनी तदबीर व हिकमत व मसलेहत से काम लें। इन अमलियात के बल बूते पर किसी को चोर क़रार देना सही नहीं है।

नींद से बैदार होने के लिएः— अगर कोई शख़्स रात को ये चाहे कि मेरी आंख फ़लां वक़्त खुल जाये। यानी मैं नींद से बैदार हो जाऊँ। तो इसको सोते वक़्त सूरे मुज़म्मिल की शुरू की पांच आयात सात मर्तबा और सूरे हश्र की आख़िर की तीन आयात तीन मर्तबा पढ़कर सोना चाहिए। इन्शा अल्लाह इन्शा अल्लाह जिस वक़्त का इरादा करके सोयेगा इसी वक़्त आंख खुल जायेगी। सही मुजर्रब है।

रात को आंख खुलने के लिएः— दारमी ने रिवायत की है कि जो शख़्स सूरे कहफ़ की आख़िर की तीन आयतें पढ़े। रात में बैदार होने के लिए तो वह इसी वक़्त जागेगा जिस वक़्त का इरादा किया

है। यानी आंख खुल जायेगी। इसी रिवायत को नक़ल करने वाले सहाबी रसूल हज़रब अबदा रजि० फ़रमाते हैं कि हम ने इस का तजुर्बा किया है तो हम ने इस अमल को वैसा ही पाया जैसा कि ज़िक्र हुआ। सुब्हानल्लाह। अल्लाह तआ़ला की अजीब शान है दुशवार से दुशवार काम इसकी रहमत और इसके कलाम की बरकत से आसान हो जाता है।

इस्तख़ारे के लिए अमल जो मुजर्रब और बहुत आसान है

इशा की नमाज़ के बाद सोने से पहले बिस्तर पर बैठकर बावज़ू आठ सौ सौलह मर्तबा يَاخَبِيْرُ اَخْبِرْنِىْ पढ़ें। अव्वल व आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ मिला लें। इन्शा अल्लाह तआ़ला पहली रात में ही मक़सद हल हो जायेगा। वरना फिर दूसरी रात मे करें या फिर तीसरी रात में करें। ख़्वाब के अन्दर पूरी मसलेहत हासिल हो जायेगी। इन्शा अल्लाह तआ़ला ये मुजर्रब है। (मुजर्रबात सही)

इस्तख़ारे का एक और मुजर्रब तरीक़ा

सूरे वश शम्स, वल लैय्ल, वज़ ज़ुहा, वत तीनि और कुल हुवल्लाह इन सब सूरतों को सोते वक़्त बावज़ू पढ़कर क़िब्ला रूख़ होकर और अपने मक़सद का ख़्याल दिल में लाकर सो जायें। इन्शा अल्लाह तआ़ला इसके काम का अच्छा या बुरा होना बहुत जल्द मालूम हो जायेगा। अगर ज़ाहिर न हो तो फिर सात दिन तक ऐसा ही करें। ये बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से है।

इस्तख़ारे के वास्ते अमल

अगर किसी काम का अच्छा या बुरा होना मालूम करना हो पहले इस्तख़ारा कर लेना चाहिए। इस्तख़ारों में से एक इस्तख़ारा ये है कि इशा की नमाज़ के बाद नया वज़ू करें और एक सौ एक मर्तबा اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ पढ़ें और तमाम हर क़िस्म के गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा करें और ये समझें कि मैं

आज नया मुसलमान हुआ हूँ। फिर दो रकअ़त नमाज़े इस्तख़ारा की नियत से पढ़ें कि पहली रकअ़त में अलहम्द शरीफ़ के बाद आयतुल कुर्सी दूसरी रकअ़त में कुल या अय्युहल काफ़िरून वली सूरत मिलायें। फिर बाद को एक सौ एक मर्तबा तीसरा कलिमा पढ़कर दुआ मांगें इस्तख़ारे की दुआ बहुत सी किताबों में है, और मशहूर भी है देखकर पढ़ लें, और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए ज़मीन पर सो जायें सुबह को उठने पर जिस तरफ़ को ज़्यादा रूजहान हो काम के करने या न करने का वह करें बअ़ज़ मर्तबा ऐसा भी होगा कि ख़्वाब के अन्दर साफ़ तरीक़े पर कोई आकर बता देगा। बअ़ज़ बुज़ुर्गों ने ये बात भी लिखी है कि ख़्वाब में अगर सब्ज़ हरी चीज़ देखते तो समझ ले वह काम करना अच्छा है और अगर लाल सुर्ख़ या सफ़ेद या काली चीज़ देखे तो जान ले कि वह काम करना अच्छा नहीं है।

ज़रूरी बातः– इस्तख़ारे में अगर कोई बात मालूम न हो तो फिर इस्तख़ारा सात रात मुसलसल करना चाहिए। इन्शा अल्लाह अल ख़ैर ज़रूर अच्छा बुरा काम का होना मालूम हो जायेगा अगर मालूम न हो तो फिर अपने इस्तख़ारे में ग़लती जाने के वह सही तरीक़े पर नहीं कर सके। और न हो सका।

ज़रूरी हिदायतः– जब इस्तख़ारा में अच्छा या बुरा मालूम हो जाये तो फिर इसके ख़िलाफ़ न करे। मसलन् काम का करना मालूम हो तो काम कर ही डाले और अगर काम के करने में बुराई मालूम हो इस्तख़ारे में तो हरगिज़ हरगिज़ न करे। इस के ख़िलाफ़ हरगिज़ न करे मेरे शेख़ पीर व मुर्शिद मुदज़िल्लहुमुल आली ने इरशाद फ़रमाया कि ख़िलाफ़ करने में बहुत जल्द तबाह व बरबाद होने का डर है गोया कि अल्लाह तआ़ला के दिये हुए मशवरे से मुंह मोड़ना है।

अगर इस्तख़ारे में जल्दी दरकार हो

अगर किसी काम के अच्छे या बुरे मालूम करने में शदीद मजबूरी आ पड़े कि सात दिन इस्तख़ारा करने के मोहलत व फ़ुरसत न हासिल हो तो फिर 14 रकअ़त नमाज़ इस्तख़ारे 2–2 रकअ़त पर सलाम के साथ एक जगह पर ही खड़े होकर अदा करे और मज़कूरा दुआऐं ऊपर वाले तरीक़ा के मुताबिक़ मुकम्मल करे। इन्शा अल्लाह अर्रहमान इससे भी मक़सद हल हो जायेगा।

एक नादिर इस्तख़ारे का तरीक़ा

बअ़ज़ बुज़ुर्गों से ये तरीक़ा साबित है कि दो रकअ़त नमाज़ इस्तख़ारे की नियत से पढ़े कि अव्वल रकअ़त में अलहम्द शरीफ़ पढ़ते हुए اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْم पर आये तो इस आयत को पढ़िये जब तक गर्दन दायें या बायें को घूम न जाये। अगरचे बअ़ज़ मर्तबा कई घंटा भी लग सकते हैं और बअ़ज़ मर्तबा चन्द लम्हों में भी मालूम हो सकता है यानी गर्दन घूम जायेगी और जब दायें या बायें को गर्दन घूम जाये तो अपनी बक़िया नमाज़ पूरी करे अगर दाहिनी तरफ़ को गर्दन घूम जाये तो काम में ख़बर जाने और बायें तरफ़ घूमने पर बुराई जाने। (मुजर्रबात सालिहीन)

इस्तख़ारे का एक और तरीक़ा

अगर किसी को किसी काम का अच्छा या बुरा नतीजा मालूम करन हो तो जुमा की रात में सोने से पहले दो रकअ़त नमाज़े इस्तख़ारा मुकम्मल पढ़कर एक सजदा करे और इस सजदे में 313 मर्तबा يَا عَلِيْمُ يَا خَبِيْرُ पढ़कर बावज़ू सो जाये इन्शा अल्लाह अल अलीम इसी रात में पूरी मालूमात हो जायेगी।

मुहब्बत के लिए मुजर्रब अमल

ये अमल जायज़ मुहब्बत के लिए करें इन्शा अल्लाह अल वदूद बहुत जल्द असर करने वाला है। उस्ताज़ मोहतरम ने ख़ास तौर पर

इसके रहनुमाई फ़रमाई थी। एक सफ़ेद साये काग़ज़ पर इस तावीज़ पर इस तावीज़ को लिखें और एक मुर्ग़ी का अण्डा इस तावीज़ वाले काग़ज़ में लपेट कर सालिहीन बुज़ुर्गों की दो क़ब्रों के दर्मियान दफ़न कर दें। इन्शा अल्लाह कामयाबी मिलेगी और मुहब्बत और दुशमनी के तावीज़ और नूकूश लिखने के उसूल शुरू किताब में ज़रूर देख लें नक़्श ये है–

॥ ط م ॥॥ ٩ ॥॥ ح ط ١٨٩٨١١١ فلاں ......بن فلاں...... درمیان فلاں......
بن فلاں......

के मुहब्बत व उल्फ़त वाकेअ़ हो। तरीक़ा पहले फ़लां की जगह पर जिससे मुहब्बत चाही जा रही है इस मतलूब का नाम और इसके बाप का नाम लिखें अगर औरत है तो दोनों जगह मां का नाम लिखेंगे।

मियां बीवी की मुहब्बत के लिए ज़ोरदार तावीज़

जिन मियां बीवी के दर्मियान आपस मे रंजिश रहती हो। इनके लिए ये नक़्श व तावीज़ इस्तेमाल में लायें। इन्शा अल्लाह तआ़ला तमाम रंजिश मिट जायेगी और आपस में मुहब्बत पैदा हो जायेगी।

तरीक़ा इस्तेमाल इस नक़्श को ख़ुशबू वाली रोशनाई से लिखकर किसी फलदार दरख़्त में लटकायें कि मुसलसल हिलता रहे। दर्मियान में ज़ौजेन का नाम लिखें।

नक़्श
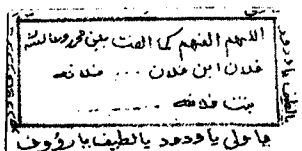
मुहब्बत के लिए दूसरा नक़्श

मियां बीवी में जो तालिब मुहब्बत हो इसके गले में इस तावीज़ को लिखकर डालें पहले फ़लां की जगह पर तालिब का नाम और

दूसरे फलां की जगह पर मुहब्बत के मतलूब का नाम लिखेंगे और मुहब्बत के तावीज़ व नक़्श लिखने के उसूल शुरू किताब में देखें। मुहब्बत के दूसरे नक़्श की इबारत ये है–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. والقيت عليك محبة منى ولتقنع على عينى ويامقلب القلوب ويامسخر السموت السبع والارفعين السبع قلب لفلان...... قلب فلان...... ابن فلانيه...... بالخير لاواء الحقوق ياودود ياودود ياودود حبب يالطيف.

नोटः– इस नक़्श की इबारत को किसी अच्छे अरबी जानने वाले से पूछ कर लिखें या मालूम कर ले ताकि फ़ायदा हासिल हो। और नक़्श बे फ़ैज़ न हो।

अवाम व ख़्वास में अपनी मुहब्बत पैदा करने के लिए

अगर कोई शख़्स ये चाहे कि मेरी इज़्ज़त लोग किया करें तो इसका सही तरीक़ा तो ये है कि वह लोगों की इज़्ज़त किया करे एक हाथ से दो और एक हाथ से लो आप लोगों से अच्छो अख़्लाक़ से पैश आयेंगे लोग आप से भी अच्छे अख़्लाक़ से पैश आयेंगे। ये अमल मेरे शेख़ पीर व मुर्शिद का बताया हुआ है। जोकि हक़ीक़त व सदाक़त पर क़ायम है फिर भी वैसेएक अमल लिखता हूं जो कि मुस्तनद है। वह ये कि ऐसे शख़्स को चाहिए कि जुमेरात के दिन रोज़ा रखे खजूर या छुवारे से अफ़तार करे बाद नमाजे मग़रिब तीन सौ तेरह मर्तब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम एक ही जगह पर बैठ कर पढ़े इसके बाद ज़ाफ़रान व गुलाब से बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के हुरूफ़ को अलेहदा अलेहदा हरफ़ों में लिखे (जैसे ب س م) सात मर्तबा लिखे फिर इस तावीज़ को इत्र की ख़ुशबू लगाकर दायें बाज़ू पर या गले में डाल लें। इन्शा अल्लाह अर्रहमान सब लोगों की नज़रों में प्यारा हो जायेगा। ज़्यादा अच्छी बात तो ये है कि अल्लाह और इसके रसूल की इताअत पर कमर बांध ले फिर अल्लाह की अल्लाह

के रसूल स0अ0व0 की फ़रिशतों की जिन्नातों क़ी इन्सानों की नज़र में महबूब हो जायेगा। (मुजर्रबात सालिहीन)

वह घर जिसका हर फ़र्द एक दूसरे के मुख़ालिफ़ रहता हो

अगर किसी घर मे इख़्तलाफ़ की आग लगी रहती हो और एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हो कि कोई किसी का कहना न मानता हो। जैसा कि ये मर्ज़ इस दौर में अक्सर लोगों के घरों मे फैला हुआ है तो इस हालत में मुजर्रब व आज़मौदा अमल इख़्तलाफ़ात को मिटाने के लिए ये है कि जो भी खाना खायें और खिलायें इस खाने पर 11 मर्तबा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर खायें और हर एक के खाने पर दम कर दिया करें। घर की औरतों को ताकीद करें कि खाना बावज़ू पकायें आटा भी गूंधें तो बावज़ू होकर हंडिया भी पकायें तो बावज़ू मसाला भी पीसें तो वह भी बावज़ू बेहतर ये है कि जिस पानी से आटा वग़ैरह गूंधें इस पानी पर इक्कीस मर्तबा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर पानी पर दम करें फिर इस पानी से आटा वग़ैरह गूंधें ये अमल मुस्तक़िल मुसलसल इस्तेमाल करें। इन्शा अल्लाह तआला पूरे घर पर अल्लाह की रहमत नाज़िल होगी और सब से उम्दा बात इस के अव्वल ये ही कि इस घर के तमाम मर्द मस्जिद में जाकर जमाअ़त ही से नमाज़ पढ़ा करें इसमें ख़ास हिकमत व मसलेहत रखी हुई है और ये बात मुस्तनद और मुजर्रब है।

मुहब्बत के वास्ते अमल

बारिश के पानी पर 313 मर्तबा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर दम कर दें और जिसकी मुहब्बत मतलूब है इसको पिलायें।

मुहब्बत के लिए एक और अमल

नमक पर सात मर्तबा अलम नशरह वाली सूरत पढ़कर दम करें

और सुबह व शाम जिसकी मुहब्बत मतलूब है इसके ध्यान के साथ आग में डालें।

इज़्ज़त के लिए बेश बहा नक़्श

ये नक़्श उन लोगों के वास्ते है जिन की इज़्ज़त पहले थी फिर ख़त्म हो गयो कि लोगों ने इसे अपनी नज़रों से गिरा दिया हो और ये लोगों की नज़रों में ज़लील व रूस्वा हो और ये अपनी बे इज़्ज़ती की वजह से परेशान हो। लिहाज़ा इस नक़्श को मुहब्बत के उसूलों के सामने रखते हुए लिखे। फिर बाज़ू पर या गले में डाल लें ये नक़्श मियां बीवी की मुहब्बत में भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

नक़्श

الرحيم	الرحمن١١	الله١	بسم١
بسم ١٣	الله	الرحمن	الرحيم ١٢
الرحمن ١٤	الرحيم ١٢	بسم ٩	الله
الله	بسم ٥	الرحيم	الرحمن ١٥

هو هو هو هو هو هو هو

الله الله الله

1005	1010	1003
1004	1006	1008
1009	1002	1007

अगर भूलने का मर्ज़ हो तो क्या करे

अगर किसी को कोई बात भूलने का मर्ज़ हो तो इसको चाहिए कि रात को सात बादाम की गिरी पानी में भिगोदें सुबह को इसका

सुर्ख़ छिलका उतार कर एक एक गिरी में सात सात मर्तबा इस आयत को पढ़कर दम करें फिर इन बादाम को बारीक पीस कर सुबह को नहार मुंह खायें। आयत ये है–

بسم اللہ الرحمن الرحیم. تَنْزِيْلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ مَاخَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَابَيْنَهُمَا اِلَّا بِالْحَق وَاَجَلٍ مُّسَمًّى وَّالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّا اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ.

ये अमल इक्कीस दिन मुसलसल करें। (मुजर्रबात रूह)

जिस मुसलमान कि दिल पर इल्म के बात जमती न हो

जिसको कुरान व हदीस या कोई इल्मी बात दिल व दिमाग़ पर महफ़ूज़ नहीं रह पाती होतो इसको चाहिए कि रात को सोते वक़्त सीने पर दायां हाथ रखकर इक्यावन मर्तबा یاعلیم पढ़ना मुसलसल अपना वज़ीफ़ा बना ले इन्शा अल्लाह तआला इस तरीक़े से हालत में बहुत सुधार हो जायेगा। क़सीर फ़ायदा हासिल होगा।
(मुजर्रबात उस्ताज़)

जिसको कुरान मजीद वग़ैरह हिफ़्ज़ करना मुश्किल पड़ता हो इसकी आसानी के लिए मख़्सूस अमल

ये अमल हुज़ूरे पाक स0अ0व0 ने हज़रत अली रजि0 को ज़अफ़े हिफ़्ज़ की शिकायत पर बताया था। हज़रत इब्ने अब्बास रजि0 से रिवायत है कि एक दिन हज़रत अली रजि0 हुज़ूरे पाक स0अ0व0 की ख़िदमत में तशरीफ़ लाये और अपने दिमाग़ व हाफ़ज़े के कमज़ोर होने की शिकायत की तो आप स0अ0व0 ने ये अमल तालीम फ़रमाया कि जब जुमा की रात आये तो आख़िरी रात को उठकर चार रकअत नमाज़ पढ़ों अगर आख़िरी रात न हो सके तो आधी रात को उठो और अगर आधी रात को भी न उठ सको तो शुरू रात ही में सही चार रकअत नमाज़ पढ़ो कि पहली रकअत में अल्हम्द शरीफ़ के बाद सूरे यासीन शरीफ़ दूसरी रकअत में अलहम्द के बाद सूरे दुख़ान

तीसरी रकअत में अलहम्द के बाद अलिफ़ लाम मीम तन्ज़ील सजदा वाली सूरत चौथी रकअत में अलहम्द के बाद सूरे मुल्क पढ़ो। फिर जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो फिर अल्लाह तआला की ख़ूब ख़ूब तारीफ़ करो और मुझ पर और तमाम नबियों पर दुरूद भेजो। अपने तमाम भाई जो गुज़र गये हैं और जो ज़िन्दा हैं सब के लिए अस्तग़फ़ार करो मसलन् पहले सूरे फ़ातिहा पढ़े एक मर्तबा फिर दोनों दुरूदे इब्राहीमी पढ़े फिर سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ पढ़े फिर ये पढ़े।

رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَ الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمِ.

एक मर्तबा पढ़े। फिर ये दुआ पढ़ो–

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِتَرْكِ الْمَعَاصِيْ اَبَداً مَا اَبْقَيْتَنِيْ وَارْحَمْنِيْ اَنْ اَتَكَلَّفُ مَالَا يَعْنِيْنِيْ وَارْزُقْنِيْ حُسْنَ النَّظْرِفِيْمَا يُرْضِيْكَ عَنِّيْ اَللّٰهُمَّ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِزَّةِ الَّتِيْ لَا تَرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَارَحْمٰنُ بِجَلَالِكَ وَنُوْرِ وَجْهِكَ اَنْ تُنَوِّرْ بِكِتَابِكَ بَصَرِيْ وَاَنْ تُطْلِقَ بِهٖ لِسَانِيْ وَاَنْ تُفَرِّجْ بِهٖ عَنْ قَلْبِيْ وَاَنْ تَشْرِحْ بِهٖ صَدْرِيْ وَاَنْ تَغْسِلَ بِهٖ بَدَنِيْ فَاِنَّهٗ لَا يُعِيْنُنِيْ عَلَى الْحَقِّ غَيْرَكَ وَلَا يُؤْتِيْهِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

फिर रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि एक अली इस अमल का तीन या पांच यासात जुमा की रात को मुसलसल करो इन्शा अल्लाह तआला ज़रूर कामयाब होंगे। दुआ कबूल होगी क़सम है इस बाबरकत ज़ात की जिसने मुझे नबी बना कर भेजा है किसी ईमान वाले से भी दुआ क़बूल होना वापस न होगा। हज़रत अली रजि0 ने ऐसा ही किया। इसके बाद हज़रत अली रजि0 फिर आप स0अ0व0 की ख़िदमत मे तशरीफ़ लाये और अर्ज़ किया कि या अल्लाह के रसूल स0अ0व0 पहले मे क़रीब चार आयतों को याद करता था वह याद नहीं रहती थीं और अब क़रीब क़रीब चालीस आयतों को याद कर लेता हूं और वह महफ़ूज़ हो जाती हैं और कहीं

भूल चूक नहीं होती ऐसा मालूम होता है कि ज़ैसे कुरान मेरे सामने खुला हुआ मौजूद है। पहले एक हदीस याद करता था फिर भूल जाता था और अब कई कई हदीसें याद कर लेता हूं और एक हरफ़ भी नहीं छूटता।

फ़ायदा–ए–अज़ीम

ये हदीस शरीफ़ तिर्मिज़ी शरीफ़ और हाकिम ने रिवायत की है ये अमल इस मुबारक ज़ात का बताया हुआ है जिस पर साहबे कुरान ने अपना कुरान नाज़िल फ़रमाया और वह मुबारक ज़ात स0अ0व0 ये अमल अपने मुरीद और ख़लीफ़ा और अपनी लाडली प्यारी बेटी हज़रत फ़ातमा रजि0 के शौहर, दामाद को बताती है और वह मुबारक ज़ात अपनी मुबारक ज़बान से यूं फ़रमाती है कि ऐ अली ये अमल तेरे लिये भी और जिस को तो ये अमल बता दे इसके लिए भी मुफ़ीद होगा। आप स0अ0व0 का मुफ़ीद बताना गोया कि अल्लाह तआला ही का मुफ़ीद बताना है। अब वह कौन खुश नसीब मुसलमान है जो इस अमल से फ़ायदा उठाये।

लक़वे की ख़्वाब में बशारत शुदा अकसीर दवा

ये दवा ख़्वाब की बशारत शुदा होने के साथ मुजर्रब व आज़मौदा है और मुफ़ीद है वह ये कि गाये के दूध में दार चीनी (दाल चीनी) ड़ालकर दो तीन उबाल दें। फिर इस दूध पर सूरे यासीन पढ़कर दम करके रख दें और सात लौंगे पीस कर एक टिकिया बनाकर इस दूध से खा लें। सुबह नहार मुंह और इस दूध को शहद से मीठा करेंगे और ये अमल सात दिन मुसलसल करते रहें। इन्शा अल्लाह मुफ़ीद पायेंगे। (मुजर्रबात सही, मुजर्रबात जौहरिया)

बच्चे की विलादत की आसानी के लिए तावीज़

अगर किसी औरत को बच्चे की विलादत के वक़्त तंगी व

दुशवारी पेश आये तो इसको लिए ये कलिमात लिखकर बंधवाये जायें मुस्तनद व मुदल्लल है। कलिमात ये हैं।

بسم الله الرحم الرحيم لا اله الا الله الحليم الكريم سبحان الله رب العرش العظيم الحمد لله رب العالمين كانهم يرونه مايوعدون لم يلبثوا الا ساعة من نهار بلاغ فهل يهلك الا القوم الفاسقون.

वाकिआ सबक़ आमोज़

हज़रत अकरमा रजि0 ने हज़रत अब्बास रजि0 से रिवायत किया है। फ़रमाया हज़रत ईसा अलै0 एक गाये के पास से गुज़रे जिस के पेट में बच्चे फंसा हुआ था। गाये बोली एक रूहुल्लाह मेरे लिए दुआ कीजिए। मैं जिस परेशानी में मुब्तला हूं इसलिए अल्लाह तआला मुझे निजात अता फ़रमाये। हज़रत ईसा अलै0 ने ये दुआ फ़रमाई–

ياخالق النفس من النفس ويامخلص النفس من النفس ويامخرج النفس خلصها.

बयान करने वाले रावी फ़रमाते हैं कि इस गाय ने बच्चा जन दिया और इसी वक़्त खड़े होकर इसको सूंघने लगी। जब औरत पर बच्चे की पैदाईश दुशवार हो जाये तो इसे ये तावीज़ लिखक़र देना चाहिए।

विलादत से मुतअ़ल्लिक़ बहुत तेज़ असर तावीज़

असहाबे कहफ़ के नामों को और इन आयतों

إذالسماءُ النشقت واذنت لربها وحقت واذاالارض مدت والقت مافيها وتخلت واذنت لربها وحقت اهياواشراهيا

लिखकर बच्चे की विलादत की हालत से क़ब्ल तावीज़ बनाकर उल्टी रान में बंधवा दें। अलहम्दु लिल्लाह बड़ी सहूलत से बच्चे की विलादत हो जाती है मगर ये बात याद रखें कि बच्चे की विलादत के बाद इस तावीज़ को फ़ौरन् खोल देना चाहिए वरन बंधे रहने से

नुक़सान भी उठा सकते हैं।

(मुजर्रबात सही, मुजर्रबात उस्ताज़, मुजर्रबाते अकाबिर)

बुख़ार का तावीज़

हज़रत मरवज़ी रह० फ़रमाते हैं कि अबू अब्दुल्लाह को इत्तलाअ़ हुइ कि मुझे बुख़ार है। उन्होंने मुझे बुख़ार का तावीज़ दिया जिसमें ये लिखा था

بسم الله الرحمن الرحيم بسم الله وَبِالله محمد رسول الله قُلْنَا يَارُ كُوْنِى بَـرْداً وَسَلَامًـا عَـلٰى ابراهيم واراد به كيلاً فجعلنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْن اللّٰهُم بجبرائيل وميـكـائيـل واسرافيل شفا صاحب هذا الكتاب بحولك وقوتك وجبروتك اله الحق آمين. (مجربات صحيح)

जिस शख़्स को बुख़ार सर्दी लग कर आ रहा हो

इस बुख़ार की शिकायत में ग्यारह मर्तबा قُلْنَا يَانَارُ كُوْنِى بَرْداً وَّسَلاماً عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ पढ़कर दम करें और सात मर्तबा بِسْمِ اللّٰه مجرٖيها ومرسها اِنَّ رَبِّىْ لغفورٌ الرحيم पढ़कर दम करें। इन्शा अल्लाह अससलाम बहुत जल्द फ़ायदा होगा।

बुख़ार का इलाज

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० और हज़रत शाह मौलाना इस्हाक़ साहब रह० का अमल था कि बुख़ार वाले के वास्ते गले मे बांधने के लिए قـلـنـا يـانـاروكـونى برداً وسلاماً على ابراهيم लिखकर देते थे और पीने के लिए سـلام قولاً من رب الرحيم लिखकर देते थे। (मुजर्रबात अकाबिर)

हर क़िस्म के बुख़ार के लिए तावीज़ मुजर्रब है:– किसी भी तरह का बुख़ार हो इसके लिए ये तावीज़ लिखकर गले मे डाल दें और तीन तावीज़ लिखकर ज़ाफ़रान से सुबह का नहार मुंह पर पिला दें गले का और पीने का यही है–

الرحيم	الرحمن	الله	بسم
بسم	الرحيم	الرحمن	الله
الله	بسم	الرحيم	الرحمن
الرحمن	الله	بسم	الرحيم

बुख़ार वाले के लिए मुजर्रब तावीज़

इस नक़्श को लिखकर बुख़ार वाले के गले मे डाले। इन्शा अल्लाह तआला फ़ौरन् इसका असर नज़र आयेगा। फ़लां...... इब्न फ़लां...... की जगह पर बुख़ार वाले का नाम और वलदियत लिखें। (मुजर्रबात ख़ास व सही)

नक़्श
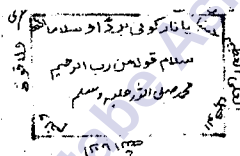
बुख़ार के ख़त्म करने के लिए अजीब व ग़रीब तावीज़

एक कागज़ पर तीन जगह يـاالله लिखें एक मोटा يـاالله फिर इससे छोटा يـاالله फिर इससे छोटा يـاالله फिर गोल दायरे की गोली बनाकर इस इन्सान को पानी से कभी भी खिलावें। जिसको बुख़ार पीछा न छोड़ता हो। किसी वक़्त भी अगर पहली गोली से बुख़ार न जाये तो दूसरी गोली जो दर्मियान वाले दायरे का يـاالله है इसकी गोली बनाकर खिलादें इन्शा अल्लाह बुख़ार जाता रहेगा और अगर फिर भी बुख़ार न उतरे तो फिर तीसरी गोली तीसरे दिन खिला दें। ज़िन्दगी फिर का हमेशा का तजुर्बा है। इन्शा अल्लाह हर हालत में बुख़ार जाता रहेगा। इसकी मज़ीद इजाज़त तमाम मुसलमान को देता हूं इख़्तियार फ़रमायें। जिस वक़्त ज़रूरत पड़े। ये अमल एक

बुज़ुर्ग से हासिल हुआ है। जिसकी उन्होंने मुझे इजाज़त अता फ़रमायी और मैं भी इसकी इजाज़त देता हूं। (मुजर्रबात सही)

दर्द के ख़त्म करने का मुस्तनद इलाज

मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत उस्मान इब्न अबी अलआ़स रजि० से मुर्वी है कि उन्होंने रसूल अल्लाह स०अ०व० से अपने दर्द की शिकायत की कि जब से मैं मुसलमान हुआ हूं और इस्लाम कबूल किया है मेरे बदन में दर्द होता है। नबीये करीम स०अ०व० ने फ़रमाया बदन में जहां पर दर्द मालूम होता हो वहां पर हाथ रखो और ये पढ़ो। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तीन बार फिर सात मर्तबा ये पढ़ो–

اَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَاأَجِدُ وَاحَاذِرُ.

दर्द व बीमारी के दफ़ा का मुस्तनद इलाज

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस मे है कि रसूल अल्लाह स०अ०व० अपने घर वालों में से जब किसी पर दम करते तो दाहिना हाथ इस पर फेरते और ये दुआ पढ़ते–

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسْ اَذْهَبِ الْبَاس وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَاشِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءَ لَّايُغَادِرُ سَقْمًا.

दर्द के वास्ते मुजर्रब व मुफ़ीद बेहतरीन तावीज़

ये तावीज़ पूरे बदन के दर्द के दफ़ा के लिए मुफ़ीद है। नक़्श के साथ नीचे वाली इबारत लिखेंगे और इस तावीज़ को मोम जामा करके गले में डाल देंगे। इन्शा अल्लाह असलाम मुफ़ीद पायेंगे। इबारत के अल्फ़ाज़ ये हैं।

بسم الله الرحمن الرحيم

8	11	14	1
13	2	7	12
3	16	9	6
10	5	4	15

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم وبالحق انزلناه وبالحق نزل ومارسلنك الا مبشرا ونذيرا اعوذ بكمات اللّٰه التامات من غضبه وعقابه وشر عباده ومن همزات الشياطين وان يحضرون اللّٰه شافى اللّٰه كافى برحمتك يا ارحم الراحمين. (مجربات استاذ)

सीने के दर्द के वास्ते मुस्तनद व मुजर्रब अमल

अगर किसी भी शख़्स के सीने में किसी भी तरह का दर्द हो और इन आयात शरीफ़ा को लिखकर सीने पर या गले में इस तरह डालें कि वह तावीज़ सीने पर रूका रहे तो इन्शा अल्लाह तआ़ला सीने के दर्द से शिफ़ा व निजात मिल जायेगी। मुजर्रब व आज़मौदा है। तावीज़ में लिखे जाने वाली इबारत ये है–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم ذالك تخفيف من ربكم ورحمة بسم اللّٰه الرحمن الرحيم اكمن خفف اللّٰه عنكم وعلم ان فيكم ضعفا بسم اللّٰه الرحمن الرحيم يريد اللّٰه ان يخفف عنكم وخلق الانسان ضعيفا بسم اللّٰه الرحمن الرحيم واذا سألك عبادى عنى فانى قريب اجيب دعوة الداع اذا دعان بسم اللّٰه الرحمن الرحيم الم تر الىٰ ربك مد الظل ولو شاء لجعلهٗ ساكناً بسم اللّٰه الرحمن الرحيم وله ما سكن فى الليل والنهار وهو السميع العليم بسم اللّٰه الرحمن الرحيم صلى اللّٰه على محمد صلى اللّٰه عليه وسلم (مجربات صحابه) مجربات صحيح)

सर के दर्द को दूर करने के लिए मुजर्रब अमल

हज़रत इमाम शाफ़ई रह0 ने इरशाद फ़रमाया कि बनू उम्मिया के ख़ानदान मे एक चांदी का डिब्बा था जिसमें ताला क़फ़ल लगा हुआ था और इस डिब्बे पर लिखा हुआ था شفاء من كل داء यानी इस मे हर बीमारी के लिए शिफ़ा है। इस चांदी के डिब्बे के अन्दर ये बात लिखी हुई थी कि अगर किसी के शदीद क़िस्म का सर का दर्द हो तो इसे तबीब व हकीम के पास जाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि ये कलिमात पढ़कर दम कर दे। इन्शा अल्लाह तआ़ला इसके सद का

दर्द ख़त्म हो जायेगा इस अमल को बहुत से मौक़ों पर इस्तेमाल में लाया गया तो हमेशा मुफ़ीद ही पाया गया वह कलिमात ये हैं–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. بسم الله وباللّٰهِ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اُسْكُنْ اَيُّهَا الْوَجْعُ سَكَنْتُكَ بِالَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَؤُفٌ الرَّحِيْمِ بسم الله الرحم الرحيم بسم الله وبِاللّٰهِ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ. اُسْكُنْ اَيُّهَا الْوَجْعُ سَكَّنْتُكَ بِالَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْماً غَفُوْراً. (مجربات ديرينه)

जिसके पूरे बदन मे दर्द हो

जिस शख़्स के पूरे बदन में दर्द हो तो इसके लिए चाहिए कि इस आयत को लिखकर तावीज़ बनाकर इस्तेमाल करायें इन्शा अल्लाह दर्द जाता रहेगा। वह आयत ये है–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم وَمَا لَنَا اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْهَدَانَا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى اٰذَيْتُمُوْنَ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا نَذِيْراً صلى الله على محمد واله وسلم وبارك وسلم.

दांत के दर्द की मुस्तनद दुआ

बहीकी अब्दुल्लाह बिन रवाहा रजि0 से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूल अल्लाह स0अ0व0 से दांत के दर्द की शिकायत की तो रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने अपना मुबारक हाथ इनके रूख़सार पर जिस तरफ़ दर्द था रखकर सात मर्तबा ये पढ़ा अभी इस दुआ को पढ़ कर रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने अपना हाथ मुबारक हटाया भी नहीं था कि पहले ही दर्द ख़त्म हो गया। वह दुआ ये है–

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ مَايَجِدُ وَفُحْشَهٗ بِدَعْوَةِ نَبِيِّكَ الْمِسْكِيْنِ الْمُبَارَكِ عِنْدَكَ.

सर दर्द के लिए बेहतरीन अमल

ये अमल मुस्तनद भी है और मुफ़ीद साबित हो चुका है कि

जिसके सर में दर्द हो इसके लिए चाहिए कि इसका सर पकड़कर अव्वल व आख़िर तीन मर्तबा दुरूदे इब्राहीमी और दर्मियान में وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا वाली आयत पढ़कर दम करे यक़ीन के साथ ये अमल करे। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस अमल से फ़ायदा उठायें गे और यक़ीनी फ़ायदा होगा। अल्लाह तआ़ला ही शिफ़ा अता फ़रमाने वाले हैं।

जिसके सर में दर्द हमा वक़्त रहता है

जिसके सर मे दर्द हर वक़्त रहता हो इसके चाहिए कि एक काग़ज़ पर सात मर्तबा بسم الله الرحمن الرحيم लिखें और इसको अपनी टोपी या पगड़ी में सिलवा कर मुकम्मल अदब व ऐहतराम के साथ पहना करे ये अमल मुजर्रब है और मुफ़ीद पाया गया है और इन्शा अल्लाह मुफ़ीद पायेंगे। (मुजर्रबात सहाबा)

सर दर्द का मुस्तनद इलाज

हदीस में है कि जनाब मुहम्मद रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने हज़रत अली रजि0 से इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली जब तुम्हारे सर मे दर्द हो तो सर पर यानी दर्द की जगह पर अपना हाथ रखो और सूरे हश्र की आख़िर की आयात (तीन आयतें हैं) पढ़ो इस रिवायत को देलमी ने रिवायत किया है।

जिसके सर मे दर्द हो इसके लिए तावीज़

सर दर्द के लिए मुस्तनद तावीज़ है कि एक काग़ज़ पर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अव्वल व आख़िर लिखें दर्मियान में इक्कीस मर्तबा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखें फिर सर दर्द वाले के सर में या गले में बांध दें। इन्शा अल्लाह तआ़ला दर्द जाता रहेगा। (मुजर्रबाते अबरार)

अज़ीम फ़ायदा

ये आयत وبالحق انزلناه وبالحق نزل وما ارسلناك الا مبشرا

ونـذيرا दर्द की बीमारी के लिए मुफ़ीद मुजर्रब अमल है बीमारी की जगह पर सीधा हाथ रखकर इस आयत शरीफ़ा को पढ़कर दम कर दिया ज़ाये तो अल्लाह जल शानहू के हुक्म से बीमारी व दर्द से निजात मिलती है। मुहम्मद बिन समाक रजि० बीमार हुए तो इनके मुरीदेन व शागिर्द इनका क़ारूरा लेकर एक ईसाई हकीम के पास इलाज की ग़र्ज़ से गये। रास्ते मे एक निहायत हसीन चेहरा उम्दा लिबास कि इनके जिस्म से बहतरीन ख़ुशबू आ रही थी, बुज़ुर्ग मिले। उन बुज़ुर्ग ने मालूम किया कहां जा रहे हो। इन शागिर्दों ने बताया हज़रत इब्न समाक का क़ारूरा दिखाने के लिए फ़लां हकीम के पास जा रहे हैं। इन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया तअ़ज्जुब है अल्लाह के वली और दोस्त के लिए ख़ुदा के दुशमन से मदद चाहते हो। इस क़ारूरे का फेंक दो और वापस जाकर इनसे कहो कि दर्द की जगह पर हाथ रखकर पढ़ें وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ वह बुज़ुर्ग ये बताते ही रू पोश ग़ायब हो गये। इब्न समाक रह० के शागिर्द मुरीदों ने वापस होकर अपने उस्ताज़ पीर से रास्ता का हाल बयान किया। इब्न समाक रह० ने दर्द की जगह पर हाथ रखकर यही कलिमात पढ़े। दर्द से फ़ौरन् निजात मिल गयी इब्न समाक रह० ने अपने मुरीदों व शागिर्दों से फ़रमाया कि वह बुज़ुर्ग हज़रत ख़िज़र अलै० थे। (तफ़सीर मुबारक)

सर के दर्द के लिए बेहतरीन झाड़

हर क़िस्म के सर के दर्द की झाड़ने के लिए अमल याद रखें अव्वल आख़िर तीन तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़ और दर्मियान में इक्कीस मर्तबा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम इक्कीस मर्तबा या अल्लाह पढ़कर दम कर दें। इन्शा अल्लाह सर के दर्द को फ़ायदा होगा।
(मुजर्रबात अहमदिया)

सर के दर्द के लिए मुजर्रब झाड़

ये अमल और झाड़ बुज़ुर्गों के अमलियात में से एक मुजर्रब झाड़

व अमल है कि सर दर्द वाले की पेशानी पर सीधे हाथ की शहादत की उंगली से 3 मर्तबा بسم الله الرحمن الرحيم लिखें। मुजर्रबात सही।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ से रोम के बादशाह को दर्दे सर से शिफ़ा हुई

रिवायत ये कि रोम के बादशाह ने जो नसरानी था हज़रत उमर रजि० को लिखा कि मुझ हर वक़्त सर में ऐसा दर्द रहता है कि किसी वक़्त भी सुकून ही नहीं मिलता और न किसी दवा से मुझे फ़ायदा होता है लिहाज़ा आप मुझे कोई दवा रवाना फ़रमा दीजिए। हज़रत उमर रजि० एक टोपी रोम के बादशाह के पास रवाना फ़रमा दी। जब जब वह बादशाह इस टोपी को सर पर रखता सर का दर्द ठहर जाता, और जब वह टोपी सर से उतार लेता फिर दर्द होने लगता। बादशाह को बड़ा ही तअज्जुब हुआ। टोपी को जो उधेड़ कर देखा तो इसमें بسم الله الرحمن الرحيم लिखी हुई थी इसको देखकर कहा कि क्या अच्छा दीन है जिसकी एक आयत से मुझ को शिफ़ा व निजात मिली।

ज़ियारते अक़दस स०अ०व० से मुशर्रफ़

अगर कोई तालिबे सादिक़ और आशिक़े सादिक़ इस दुरूद शरीफ़ को सोते वक़्त बा वज़ू 200 मर्तबा पढ़ने का अपना अमल बना ले तो इन्शा अल्लाह अर्रहमान बहुज जल्दी ज़ियारते रसूले अकरम स०अ०व० से फ़ैज़याब हो।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي بِرُوْيَةِ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ بَشِيْراً وَّنَذِيْراً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

रसूल अल्लाह स०अ०व० की ज़ियारत के लिए

हज़रत अबू हफ़्स इब्ने शाहीन रह० ने हज़रत अनस रजि० से नक़ल फ़रमाया है कि रसूल अल्लाह स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स मुझ पर हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े (रोज़ाना) तो जब तक वह अपनी जगह जन्नत में नहीं देख लेगा मौत न आयेगी।

फ़ायदाः— इसी तरह इन्शा अल्लाह तआ़ला मौत से पहले पहले आप स0अ0व0 की ज़ियारत अक़्दस से भी मुशर्रफ़ होगा। (हदीसे नबवी स0अ0व0)

इसी से मुतअ़ल्लिक़ एक और मुस्तनद अमल

अगर कोई शख़्स मुहब्बत व शौक़ के साथ सूरे क़दर जुमा के दिन हज़ार मर्तबा पढ़ना अपनी आदत बना ले तो वह इन्सान मरने से पहले पहले जनाब रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ज़ियारत से बहरादर होगा। इसी तरीक़े से अगर कोई शख़्स 200 मर्तबा दुरूद शरीफ़ रात को सोने से पहले अपने ऊपर लाज़िम कर ले तो इसको भी आप स0अ0व0 की ज़ियारत से सरफ़राज़ी नसीब होगी। बफ़ज़लिही तआ़ला।

इसमें इस्मे आ़ज़म है

रसूल अल्लाह स0अ0व0 की सहाबी हज़रत अबूदरदा रजि0 की लौंडी थीं इस लौंडी ने आप से मालूम किया कि आप कौन सी नस्ल से हैं। आप रजि0 ने जवाब दिया कि तेरी तरह से मैं भी एक इन्सान हूं लौंडी ने कहा कि आप इन्सान मालूम नहीं होते हैं क्योंकि मैंने आप को चालीस दिन तक मुसलसल ज़हर खिलाया है, मगर आप जूं के तूं ही हैं कि आप की सेहत पर भी कोई असर तक न हुआ। आप ने फ़रमाया कि क्या तुझ का मालूम नहीं कि जो लोग अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते हैं इनको कोई चीज़ नुक़सान नहीं देती और मैं तो इस्मे आज़म के साथ अल्लाह तआ़ला को याद करता हूं। लौंडी ने मालूम किया कि वह इस्मे आज़म क्या है हजरत अबू दरदा रजि0 ने फ़रमाया कि इस्मे आज़म ये है—

بسم اللّٰه الَّذِىْ لَايَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

इसके बाद लौंडी से आप रजि0 ने दरयाफ़्त किया कि तूने किस

वजह से मुझे ज़ेहर खिलाया। लौंडी ने जवाब दिया मुझे आप से बुग्ज़ व हसद था। ये जवाब सुनकर उन सहाबी–ए–रसूल स0अ0व0 ने इस लौंडी से फ़रमाया कि तू अल्लाह तआ़ला की रज़ामंदी के लिए आज़ाद है और तूने जो कुछ मेरे साथ किया है वह भी सब माफ़ है।

फ़ायदा:– हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआ़ला का नाम यानी इस्मे आज़म के साथ जो भी दुआ कीजिए तो अल्लाह तआ़ला इसको कबूल कर लेते हैं और इसके साथ जो भी सवाल किया जाये अल्लाह तआ़ला इसको पूरा फ़रमा देते हैं। हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स भी इस दुआ को (इस्मे आज़म जो ऊपर बयान किया है) सुबह व शाम तीन तीन मर्तबा पढ़ ल तो अल्लाह तआ़ला इसको मकरूह और अचानक आने वाली बलाओं और मुसीबतों से महफ़ूज़ रखेंगे।

हज़रत अबान बिन उस्मान रजि0 फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद साहब को फ़रमाते सुना हैं कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि जो बन्दा सुबह व शाम 3–3 मर्तबा بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ पढ़लेगा तो इसको कोई चीज़ तकलीफ़ नहीं देती। तर्जुमा ये है – "अल्लाह तआ़ला के मुबारक नाम के साथ हम ने सुबह की कि जिस मुबारक नाम के साथ आसमान या ज़मीन में कोई चीज़ नुक़सान नहीं दे सकती और वह सुनने वाला है और जानने वाला है।"

इस्मे आज़म

मेरे एक मुख़्लिस नेक सीरत दोस्त बयान करते हैं कि इसमें इस्मे आज़म है और बयान करते हैं कि मेरा तजुर्बा भी है कि मेरी हाजतों में इससे फ़ायदा हुआ वह ये है–

یَـااَللّٰہُ یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ یَااِلٰهَنَا وَاِلٰهُ کُلِّ شَیْءٍ اِلٰهاً وَّاحِداً لَااِلٰهَ اِلَّا

اَنْتَ اَنْتَ الْمُيَسِّر لِكُلِّ عَسِيْرٍ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

तुर्जमा ये है– "ऐ अल्लाह हमेशा हमेशा ज़िनदा रहने वाली ज़ात, ऐ सबको क़ायम संभालने वाली ज़ात, ऐ अज़मत व जलाल और एहसान व इकराम के मालिक एक हमारे मअबूद और हर चीज़ के मअबूद ऐसे मअबूद जो कि तने तन्हा है आप के अलावा और काई मअबूद ही नहीं है। आप ही हर दुशवारी को आसान फ़रमाने वाले हैं और आप हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाले हैं। ऐ हय्यु व क़य्यूम ज़ात तमाम रहम फ़रमाने वालों में सब से ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले तेरी रहमत का आसरा और मदद की ज़रूरत है।"

दीन व दुनिया की भलाई के लिए अन्मोल और क़ीमती खज़ानें

अगर कोई शख़्स निहायत परेशान हो या फ़क्र व फ़ाक़े की नौबत आयी हो या किसी और तरीक़े से परेशान हो तो ये अमल करे इन्शा अल्लाह अर्रहमान बहुत जल्द इसकी तमाम परेशानियां ख़त्म हो जायेंगी अव्वल व आख़िर 100 मर्तबा दुरूद शरीफ़ और दर्मियान में 500 मर्तबा لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ मअनी का ध्यान करते हुए पढ़ें कि न कोई नफ़ा देने वाली ताक़त है और न कोई नुक़सान देने वाली ताक़त है। अल्लाह तआला के हुक्म के बग़ैर दिल को हाज़िर करके मुतय्यन वक़्त पर रोज़ाना बिलानाग़ा चालीस दिन पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला गुमान के ख़िलाफ़ अल्लाह तआला की मदद होगी। (फ़रमोदात उस्ताज़ व सही)

निन्नानवे बीमारियों की दवा

हदीस शरीफ़ में आया है कि لاحول ولا قوة الا بالله एक कम सौ निन्नानवे बलाओं और मुसीबतों का इलाज और दवा है। जिनमें सबसे छोटी बला रंज व ग़म का दूर होना है।

لا حول ولا قوة الا بالله के फ़ज़ाईल

हज़रत मआज़ बिन जैल रजि0 से रिवायत है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया कि क्या में तुम को जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े का पता न दूं। हज़रत मआज़ रजि0 ने अर्ज़ किया वह कौन सा दरवाज़ा है? फिर आप स0अ0व0 ने फ़रमाया لاحول ولا قوة الابالله और एक हदीस में है कि मैं तुम को जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने का पता न बताऊँ!!! हज़रत अबू हुरैरा रजि0 से रिवायत है रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि لاحول ولا قوة الابالله निन्नानवे मर्ज़ों की दवा है जिसमें सबसे छोटा मर्ज़ रंग व ग़म है। ज़ैद बिन साबित रजि0 से रिवायत है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं तुम को जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने न बताऊँ तुम कसरत के साथ لاحول ولاقوة الابالله पढ़ते रहा करो। हज़रत अबू हुरैरा रजि0 से रिवायत है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने मुझ से फ़रमाया कि لاحول ولا قوة الابالله कसरत के साथ पढ़ो क्योंकि वह जन्नत का ख़ज़ाना है। हज़रत मकहूल रजि0 फ़रमाते हैं कि जो शख़्स لاحول ولا قوة الا بالله وَلَا مَنْجَى مِنَ اللهِ اِلَّا اِلَيْهِ पढ़ेगा कसरत के साथ तो अल्लाह तआला इससे सत्तर परेशानियां और मुसीबतें दूर फ़रमा देंगे कि उन सत्तर में सबसे छोटी मुसीबत फ़क्र व फ़ाक़ा है। (मिश्कात शरीफ़)

दुनिया व आख़िरत के ग़मों से निजात

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 से रिवायत है कि हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई रजि0 रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे लड़के सालिम को दुशमन मुशरिकीन ने कैद कर लिया है इसकी मां शदीद परेशान है मुझे क्या करना चाहिए और इसी के साथ अपनी मोहताजगी और नादारी की शिकायत की तो रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद

फ़रमाया मैं तुझ को और तुम्हारे लड़के को हुक्म देता हूं कि तुम कसरत के साथ لاحول ولا قوة الا بالله العلى العظيم पढ़ा करो। इन दोनों मां बाप ने हुक्म को अपनाया कि कसरत के साथ ये कलिमा पढ़ने लगे। इसका असर ये हुआ कि जिन दुशमनों ने लड़के हज़रत सालिम को क़ैद कर रखा था वह किसी दिन ज़रा ग़ाफ़िल हुए हज़रत सालिम रजि0 ने मौक़ा पाकर क़ैद से निकल आये और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुशमनों की अपने साथ ले आये हज़रत औफ़ रजि0 ने रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ख़िदमत मे हाज़िर होकर दरयाफ़्त किया कि क्या ये बकरियां इनके लिए हलाल हैं हुज़ूर पाक स0अ0व0 ने हलाल होने की इजाज़त दी। (तफ़सीरे कुरान)

इस अमल की बरकत का अजीब वाक़िआ

हज़रत अबुल ख़ैर इस्हाक़ अरावी बयान करते हैं कि जब फ़ारस के शहर कुर्ख़ जगह मक़ाम के पास फ़ारसी सिपाह का जनरल अज़दमहर इसी हाथियों की फ़ौज लेकर जिहाद में मुसलमानों के मुक़ाबले में आया तो इन जंगी हाथियों की कसरत को देखकर मुसलमानों के घोड़े और उनके जानवरों और तमाम मुसलमानों के दस्ते वापस चले जाने के क़रीब हो गये। इस जिहाद में मुसलमानों के अमीर लशकर हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम बहुत परेशानी में पड़ गये तरह तरह की तदबीरें इख़्तियार कीं मगर कोई तदबीर मुफ़ीद न पायी। आख़िरकार मजबूर होकर ऊँची आवाज़ से لاحول ولاقوة الابالله पढ़ना शुरु किया। अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लशकर के लिए इसको एक मज़बूत हिफ़ाज़त का ज़रिया बना दिया कि काफ़िरों दुशमनों के हाथी जो मुसलमानों पर चढ़ रहे थे फ़ौरन रूक गये। अल्लाह तआला ने उनको शदीद प्यास और गर्मी में मुब्तला फ़रमा दिया कि इस प्यास व गर्मी से परेशान होकर बजाये मुसलमानों के पानी तरफ़ भागने गले। हाथी चलाने वालों ने पानी की तरफ़ जाने

से हर तरह रोकने की तदबीरें कीं मगर वह हाथी इनके क़ब्ज़े से बाहर थे। (फ़िल आसार)

क़रीब ज़माने में इस अमल की बरकत का वाक़िआ

एक मर्तबा कानपुर में हुकूमत की बेजा ज़ुल्म व सितम से तंग आकर वहां के मुसलमान बेचेन व बेक़रार होकर जलसा व जुलूस और मीटिंगें कर रहे थे। अपनी अपनी राये लोग दे रहे थे। एक बुज़ुर्ग वहां मौजूद थे जो कि इस वक़्त मुजददे मिल्लत के दरजा पर फ़ायज़ थे। उन्होंने इरशाद फ़रमाया कि मेरी राये तो ये है कि तुम लोग ये जल्सा व जुलूस के झगड़ों मे न पड़ो बल्कि हुकूमत के ज़ुल्म व सितम की अब दूसरी तदबीर इख़्तियार करो कि तौबा व इस्तग़फ़ार करो और हर पांच सौ मर्तबा لاحول ولاقوة الا بالله العلى العظيم पढ़ना अपने ऊपर लाज़िम कर लो इन्शा अल्लाह चन्द रोज़ में ये तमाम ज़ुल्म व सितम का बाज़ार ठंडा हो जायेगा। मुसलमानों ने इन बुज़ुर्ग की राये को पसन्द किया और لاحول ولاقوة الا بالله पढ़ना शुरू कर दिया हक़ीक़तन् चन्द रोज़ में ही तमाम हुकूमत की ज़ियादतियां मिट गयीं और मुसलमानों ने ठंडी सांस ली। और अल्लाह पाक का फ़ज़ल शामिल हाल हो।

इस अमल को कितनी मर्तबा पढ़ना चाहिए

मुदद अलिफ़ सानी रह0 ने इरशाद फ़रमाया कि दीनी व दुनिया हर तरह की परेशानियों से बचने के लिए और अपनी हाजतों को पूरा करने के लिए لاحول ولا قوة الا بالله वाला अमल बहुत मुजर्रब और मुफ़ीद अमल है वह ये है कि रोज़ाना पांच सौ मर्तबा لاحول ولا قوة الا بالله और अव्वल व आख़िर 100–100 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर अपनी हाजतों के लिए दुआ करें।

वह मुसाफ़िर जिस के पास कुछ न हो वह क्या करे

अगर कोई शख़्स मुसाफ़िर बे सामान हो पास पल्ले कुछ न हो

तो वह किसी दरख़्त के नीचे यानी दरख़्त के साये में नंगे सर बैठ कर 313 मर्तबा رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ पढ़े और अल्लाह से दुआ करे इन्शा अल्लाह तआला बहुत जल्द ग़ैबी मदद हासिल होगी। वरना फिर दोबारा ऐसा ही करे बस तीन मर्तबा से ज़्यादा ज़रूरत पेश न आयेगी। इन्शा अल्लाह मुअतसिद हल हो जायेगा।

जो शख़्स तंगदस्त हो इसके लिए आसान वज़ीफ़ा

जो शख़्स अपनी तंगदस्ती और ग़रीबी में बे चेन हो वह रोज़ाना सौ मर्तबा इशराक़ की नमाज़ के बाद لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِينُ وَهُوَ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ अव्वल व आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ के साथ पढ़ लिया करें। मुजर्रबात में से है। इन्शा अल्लाह तआला फ़ायदा उठायेंगे। मतलब ये है कि जो भी अपनी कमाई व कारोबार का ज़रिया लेकर खड़े होंगे तो इन्शा अल्लाह अलग़नी गुमान के ख़िलाफ़ अल्लाह तआला की नुसरत व मदद हासिल होगी और अज़ीम बरकत पायेंगे।

जुमला क़िस्म की परेशानियों से ख़ासकर तंगदस्ती के लिए मुजर्रब अमल

ऐसा शख़्स जो परेशानियों के पहाड़ों में दबा हुआ हो इसके लिए है कि चार सौ पचास मर्तबा حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ चालीस दिन पढ़ें और अव्वल व आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ मिला लें तमाम बुज़ुर्गों ने इस अमल को अपनी हर परेशानी में इस्तेमाल फ़रमाया है और इसके ज़रिये अपने मक़सद हल किये हैं। बल्कि बअज़ बुज़ुर्गों ने तो इस अमल को अपने मुरीदों के लिए वज़ीफ़ा तेय फ़रमा दिया है, और इन बुज़ुर्गों का फ़रमान है कि हम ये चाहते हैं कि हमारे मुतअल्लिक़ीन को दीन के साथ दुनिया की फ़लाह व कामयाबी भी मिले।

एक शानदार अमल

हर नमाज़ के बाद 100 मर्तबा ये आयते कुरानी पढ़ें–

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ.

इन्शा अल्लाह अल ग़नी रिज़्क़ में ख़ूब बरकत पायेंगे अव्वल व आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ शामिल कर लें। ये अमल मुजर्रब भी है और मुस्तनद भी है।

दूसरा शानदार अमल

जिन लोगों पर रिज़्क़ तंग हो गया हो इनको चाहिए कि ग्यारह सौ ग्यारह मर्तबा يَابَدِيْعَ الْعَجَائِبِ بِالرِّزْقِ يَابَدِيع 11 दिन मुसलसल पढ़ें अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ शामिल कर लें। इन्शा अल्लाह तआला ग्यारह दिन में ही इस अमल का असर नज़र आ जाने लगेगा। मगर याद रहे कि ये अमल एक ही जगह पर बैठ कर इशा की नमाज़ के बाद या फ़ज्र की नमाज़ के बाद पढ़ें इन्शा अल्लाह तआला बहुत जल्द हालत मे सुधार हो जायेगा। मुजज़्ज़ात में से है मुजर्रब अमल है।

खैर व बरकत के लिए मुस्तनद अमल

एक सहाबी रजि0 ने हज़रत रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने फ़क्र व फ़ाके की शिकायत पेश की तो हुज़ूरे अकरत स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम अपने घर में दाख़िल हुआ करो तो सलाम करके दाखित्रल हुआ करो चाहे घर में कोई हो या न हो फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करो फिर कुल हुवल्लाहु अहद सूरत पढ़ लिया करो इन सहाबी रजि0 ने इस पर अमल शुरू किया। अल्लाह तआला ने इनको इतना माला माल फ़रमा दिया कि इन सहाबी रजि0 ने अपने बाल बच्चों ही को नहीं बल्कि पड़ोसियों और रिश्तेदारों की भी ख़बर गीरी की।

हज़रत रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने हज़रत जबीर बिन मुतअम

रजि0 को बताया कि सफ़र मे इन पांच सूरतों को पढ़ें 1. सूरे काफ़िरून, 2.सूरे इज़ा जा अ, 3.सूरे कुल हुवल्लाह, 4. सूरे फ़लक़, 5.सूरे नास। हर सूरत के अव्वल बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ें और सूरे नास के आख़िर में भी बिस्मिल्लाह पढ़ें इस तौर पर बिस्मिल्लाह छ दफ़ा पढ़ी जायेगी। हज़रत जिब्रील मुतअ़म रजि0 फ़रमाते है कि जब कभी में सफ़र में जाता था। मालदार होने के बावजूद भी रास्ते का ख़र्च साथ में चलने वाले साथियों से कम रह जाता था और मेरा हाल बुरा हो जाता था। लेकिन जब मैंने ये सूरतें पढ़ना शुरू कीं तो सफ़र से घर वापस होने तक अपने तमाम दोस्तों से अच्छी हालत में रहता हूं और रास्ते का ख़र्च व माल भी इन सबसे ज़्यादा मेरे पास रहता है। मेरे शेख़ पीर व मुर्शिद मुदज़िल्लहु आ़ली ने इरशाद फ़रमाया कि हर अच्छे अमल के शुरू में दुरूद शरीफ़ पढ़ लेना चाहिए और फ़रमाया कि इस अमल के शुरू में भी एक मर्तबा अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ शामिल कर लें तो अच्छा है।

हमेशा माल की बरकत के लिए

हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स ये चाहे कि मेरे माल में बरकत व ज़ियारत होती रहे तो इसको चाहिए कि इस दुरूद शरीफ़ को (कसरत से) पढ़ा करे–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتْ.

इन्शा अल्लाह इसके माल में हमेशा बरकत रहेगी। नुक़स वाकेअ़ न होगा।

दीन व दुनिया में आफ़ियत के लिए

जो शख़्स ये चाहे कि मुझे दीन व दुनिया में बहबूदगी और हर मामले में आसानी हो तो इसको चाहिए कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 25 मर्तबा حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ पढ़ा करे और नमाज़ के बाद तस्बीहे

फ़ातमा का पढ़ना दीन व दुनिया के उमूर की कुशादगी में मदद हासिल होती है। (मुजर्रबाते अबरार)

फ़क्र व फ़ाक़े की अजीब दुआ

हज़रत इब्न उमर रजि० से रिवायत है कि एक शख़्स रसूल अल्लाह स०अ०व० के पास आया और उसने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल स०अ०व० दुनिया ने मुझ से पीठ फेर ली है। दुनिया ने मुझे छोड़ दिया है यानी मैं माल की हाजत की वजह से बहुत परेशान हूं कि फ़क्र व फ़ाके में मुब्तला हूं हुज़ूरे अकरम स०अ०व० ने फ़रमाया कि आप फ़रिश्तों की दुआ कि जिसकी वजह से मख़्लूक़ को रिज़्क़ दिया जाता है क्यों नहीं इख़्तियार करते हो। फिर आप स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया तुलूअ़ फ़ज्र (फ़ज्र का वक़्त शुरू होना) से लेकर सूरज निकलने से पहले तक इस दुआ की तस्बीह सौ मर्तबा पढ़ो और ये पांच कलिमे हैं। हर कलिमा पढ़ने से एक फ़रिश्ता पैदा होता है जो तेरे वास्ते दुआ व अस्तग़फ़ार करेगा और दुनिया तेरे पास ज़लील व पस्त होकर आयेगी। वह पांच कलिमे ये हैं–

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ.

फिर वह शख़्स चला गया। कुछ ज़माने के बाद आया और आकर कहने लगा कि या अल्लाह के रसूल स०अ०व० मेरे पास दुनिया इस क़द्र ज़्यादा आयी है कि मैं नहीं जानता इसको कहां रखूं। (रिवायात नबवी स०अ०व०)

तरीक़ा–ए–अमल :– ये दुआ फ़ज्र के सुन्नतों और फ़र्ज़ों के दर्मियान पढ़नी चाहिए। बुज़ुर्गों का अमल इसी तरीक़े पर रहा है। अल्लाह तआ़ला अगर तौफ़ीक़ दें तो لاحول ولاقوة الا بالله की एक तस्बीह भी साथ मे पढ़ लेनी चाहिए। इन्शा अल्लाह अर्रज़्ज़ाक़ रिज़्क़ में बरकत होगी और ये तस्बीह गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया भी होगी एक तस्बीह रोज़ाना पढ़ लेने से सौ फ़रिश्ते पैदा होते रहेंगे जो कि

इसके लिए तौबा व अस्तग़फ़ार करते रहेंगे। अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

जो शख़्स कारोबार व रोज़गार की वजह से परेशान हो इसके लिए सूरे यासीन का अमल

अगर कोई शख़्स कारोबार की तरफ़ से सच्चा मोहताज हो और कोई सूरत रोज़गार की इसको हासिल न हो तो इसको चाहिए कि ये सूरे यासीन का अमल करे इन्शा अल्लाह अललतीफ़ ज़रूर मदद मिलेगी और ये सूरे यासीन का अमल हर बेचैनी के वक़्त इख़्तियार करना चाहिए। बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से अजीब मुजर्रब अमल है। वह ये है कि पहले 11 मर्तबा दुरूद शरीफ़ फिर सात मर्तबा سُبْحَانَ اللّٰه और सात मर्तबा اَسْتَغْفِرُاللّٰه फिर اَعُوْذُبِاللّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ पढ़कर सूरे यासीन को शुरू करे। जब पहली مُبِيْنٌ पर पहुंचे तो लफ़्ज़ مُبِيْنٌ को सात मर्तबा पढ़े। مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ फिर बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू सूरत से पढ़े जब सूरे यासीन में दूसरी مُبِيْنٌ आये तो फिर مُبِيْنٌ को सात मर्तबा कहे مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ مُبِيْنٌ फिर बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू सूरत से पढ़े जब तीसरी مُبِيْنٌ आये फिर लफ़्ज़ مُبِيْنٌ को सात मर्तबा पहले की तरह से कहे फिर बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू सूरत से पढ़े फिर जब चौथी مُبِيْنٌ आये तो सात मर्तबा مُبِيْنٌ कह कर बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू से सूरत से पढ़े पहली ही की तरह से इसी तरह पूरी सूरत मे सात مُبِيْنٌ आयेंगे इसी तरह मुकम्मल सूरत पढ़े सूरे ख़त्म करके सात मर्तबा سُبْحَانَ اللّٰه सात मर्तबा اَسْتَغْفِرُاللّٰه और ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर अपनी तमाम हाजतों के लिए दुआ करे जिसको तो चाहिए और इस अमल को चालीस दिन करे नाग़ा किसी दिन भी न करे। इन्शा अल्लाह तआला कहीं न कहीं तरक़्क़ी रोज़गार की सूरत होगी। (मुज़र्रबात याकूब)

फ़क्र व फ़ाक़ा का मुजर्रब अमल

रोज़ाना मग़रिब की नमाज़ के बाद या इशा की नमाज़ के बाद सूरे मुज़म्मिल ग्यारह मर्तबा अव्वल व आख़िर दुरूद ग्यारह ग्यारह मर्तबा पढ़ेंगे और जब मुज़्ज़म्मिल पढ़ते बढ़ते فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا पर पहुंचा करें तो 25 मर्तबा حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ पढ़ें। ये अमल पाबन्दी के साथ चालीस दिन करें। नौचन्दी जुमेरात से शुरू करना अफ़ज़ल है। नौचन्दी जुमेरात का मतलब पीछे आ चुका है। यानी नया चान्द नज़र आने के बाद सब से पहली जुमेरात को नौचन्दी जुमेरात कहते हैं।

रिज़्क़ की कुशादगी के लिए मुजर्रब अमल

जो शख़्स रिज़्क़ की तंगी में मुब्तला हो तो इसको चाहिए कि इशा की नमाज़ के बाद चौदह सौ चौदह मर्तबा يا وهاب और इसके बाद सौ मर्तबा ये दुआ पढ़े يا وهاب هبلى من نعمة الدُّنيا والاٰخِرَةِ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ. और फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरे इज़ा जाअ इक्कीस मर्तबा ज़ोहर की नमाज़ के बाद सूरे इज़ा जाअ 22 मर्तबा असर की नमाज़ के बाद 22 मर्तबा मग़रिब की नमाज़ के बाद 24 मर्तबा इशा की नमाज़ के बाद 25 मर्तबा यही सूरत पढ़े अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ इतनी ही मर्तबा पढ़े जितनी मर्तबा सूरत पढ़े। इन्शा अल्लाह अलफ़त्ताह रिज़्क़ की कुशादगी बहुत जल्दी हासिल होगी। ये अमल बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से है।

रिज़्क़ो माल वग़ैरह की बरकत का अजीबो ग़रीब तावीज़

ये तावीज़ उस्ताज़ मोहतरम मुदज़िल्लहु आली ने मख़्सूस तरीक़ा पर रिज़्क़ की बरकत और माल की कुशादगी और हर क़िस्म की सहूलत व आसानी का मुझे मेरी ज़ात ही के लिए तोहफ़े मे भेजा था कि इस तावीज़ को मोम जामा करके बाज़ू पर या गले में डाल लें। मैं ये तावीज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ इस किताब वाले के लिए हदिया करता हूं और अर्ज़ है साहबे किताब ये तावीज़ किसी को हरगिज़ न दें। सिर्फ़ साहबे किताब ख़ुद इस्तेमाल फ़रमा सकते हैं वह ये है कि इस

तावीज़ को तावीज़ के उसूलों यानी जुमेरात के दिन अददों को तरतीब से भर कर मोम जामा करके सीधे बाज़ू पर या गले में डाल लें, और इसके साथ साथ सुबह को सूरे यासीन और शाम को मग़रिब की नमाज़ के बाद सूरे वाक़िआ पाबन्दी के साथ पढ़ा करें। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस तावीज़ की अजीबो ग़रीब तासीर देखेंगे। अल्लाह तआला ही अपने फ़ज़ल से नवाज़ते हैं।

(मुजर्रबाते क़मरिया)

بسم اللہ الرحمن الرحیم بسم اللہ الرحمن الرحیم بسم اللہ الرحمن الرحیم

261571	261574	261577	26156
261576	261565	261570	261575
261579	261572	261572	261579
261573	261568	261567	261578

रिज़्क़ की और माल की बरकत के लिए मुजर्रब अमल

बेसहारा और बे यारो मददगार लोग इस अमल से ज़रूर नफ़ा हासिल करें। इस अमल के इख़्तियार करने वाले के पास तंगदस्ती नहीं रह सकती। इन्शा अल्लाह तआ़ला वह अमल ये है कि बारह रकअ़त चाश्त की नमाज़ पढ़ कर 500 मर्तबा لاحول ولا قوة الا باللہ العلی العظیم पढ़ा करें अव्वल व आख़िर सौ सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ मिला लिया करें और अपने मक़सद के लिए दुआ करें। मुजर्रबात मे से है कि ये अमल कभी भी ख़ता नहीं करता अल्लाह तआ़ला ही की तौफ़ीक़ से इस अमल का फ़ैज़ (फ़ायदा) मिलकर ही रहता है। पाबन्दी के साथ इख़्तियार फ़रमायें।

अस्तग़फ़ार करने वाले से तंगदस्ती मिटने का वादा किया गया है

क़ुराने करीम में अस्तग़फ़ार के छ फ़ायदे अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमाये हैं। सय्यदना हज़रत नूह अलै0 की ज़बानी (1)गुनाहों

का माफ़ होना, (2)आसमान से बारिश का होना, (3)गुरबती तंगदस्ती ख़त्म हो कर माली मदद मिलना, (4)बे औलाद वाले का औलाद वाला होना, (5)बाग़ात हासिल होना, (6)(बाग़ात के लिए) पानी नहरों का जारी होना। हदीस शरीफ़ में है कि जो कोई अपने ऊपर अस्तग़फ़ार पढ़ना ज़रूरी कर लेता है तो अल्लाह तआला इसके लिए हर तंगी में कुशादगी पैदा फ़रमा देते हैं। रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि अस्तग़फ़ार करने वाले को अल्लाह तआला ऐसी जगह से रिज़्क़ इनायत फ़रमाते हैं कि इसको वहम व गुमान भी नहीं होता। (पारह 29 सूरे नूह रुकूअ़ 1)

अस्तग़फ़ार क़बूल होने की तीन शर्तें हैं

तौबा अस्तग़फ़ार के क़बूल होने की तीन शर्तें आयी हैं। अव्वल अपने किये हुए गुनाहों पर नादिम व शर्मिन्दा होना दूसरे आइन्दा के लिए मज़बूत अहद और वादा हो कि फिर गुनाह न करूंगा। तीसरे जिस वक़्त तौबा अस्तग़फ़ार करे इस वक़्त भी गुनाह को छोड़ दे। (कुतुब तफ़सीर)

अस्तग़फ़ार किस वक़्त पढ़ना चाहिए

हम जैसे गुनाहगारों को तो हर वक़्त ही अस्तग़फ़ार करना चाहिए। ख़ास तौर पर सुबह के वक़्त अस्तग़फ़ार करना ज़्यादा अहमियत रखता है। अल्लाह तआला ने सहाबा कराम के बारे मे फ़रमाया है– وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ कि ये रसूल अल्लाह के साथी सुबह के वक़्त अस्तग़फ़ार करते हैं। (तफ़सीर कुरान)

रसूल अल्लाह स0अ0व0 कितनी मर्तबा अस्तग़फ़ार करते थे

हदीस शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया कि मैं रोज़ाना सत्तर मर्तबा अस्तग़फ़ार करता हूं। बअ़ज़ हदीस में आया है कि सौ मर्तबा अस्तग़फ़ार करता हूं इसमे मुसलमानों को अपने मासूम नबी के फ़रमान पर ग़ौर करना चाहिए कि वह नबी जो मासूम

है और मासूमों की जमाअत यानी नबियों और रसूलों के सरदार हैं हर तरह के गुनाह से पाक व साफ़ हैं वह मासूम नबी रोज़ाना सौ मर्तबा अस्तग़फ़ार करते हैं तो हम जैसे गुनहगारों को तो बहुत ज़्यादा अस्तग़फ़ार करना चाहिए गो या कि मासूम नबी ने अपने रोज़ाना 100 मर्तबा अस्तग़फ़ार को बयान फ़रमा कर ज़ाहिर किया कि तुम्हारा अस्तग़फ़ार मेरे अस्तग़फ़ार से कम न होना चाहिए।

अस्तग़फ़ार की एक बड़ी अजीब व ग़रीब तासीर

उलमा कराम ने तहरीर फ़रमाया है कि अगर काफ़िर ग़ैर मुस्लिम भी अस्तग़फ़ार पढ़ने वाले हों तो वह भी दुनिया मे क़हरे इलाही व अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रहेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं–

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ.

कि अल्लाह तआला इन काफ़िरों को भी अज़ाब में गिरफ़तार नहीं फ़रमायेंगे। जबकि इनके दर्मियान रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ज़ात अक़्दस होगी और अल्लाह तआला उन काफ़िरों को भी अज़ाब नहीं देंगे। जबकि वह काफ़िर अस्तग़फ़ार करने वाले होंगे। (तफ़सीर कु्रआन मजीद)

सय्यदुल अस्तग़फ़ार यानी सबसे आला अस्तग़फ़ार

अस्तग़फ़ार के मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ हैं। अस्तग़फ़ार चाहे उर्दू वग़ैरह में हो जैसे तौबा कहते हैं या अस्तग़फ़ार अरबी ज़बान मे हो कि इसमे भी मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ हैं। जिसमें तौबा और माफ़ी का मज़मून हो छोटा अस्तग़फ़ार जैसे अस्तग़फ़ारूल्लाह। ऐ अल्लाह मैं अपने गुनाहों की माफ़ी मांगता हूं। या बड़ा अस्तग़फ़ार हो जिसे आप नमाज़ की किताबों में देखेंगे , और एक अस्तग़फ़ार है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने फ़रमाया कि सय्यदुल अस्तग़फ़ार यानी सब से आला अस्तग़फ़ार ये है कि बन्दा अल्लाह तआला की बारगाह में यूं

कहे—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَاعَبْدِكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ مَاسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَاصَنَعْتُ وَاَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَایَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.

रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि जिस बन्दे ने अख़्लास और दिल के यक़ीन के साथ दिन में किसी वक़्त अल्लाह तआला के दरबार में अस्तग़फ़ार पढ़े और इसी दिन रात से पहले पहले इसको मौत आ गयी तो बेशक वह जन्नत में जायेगा। इसी तरह अगर किसी ने रात को किसी वक़्त इसी अस्तग़फ़ार को पढ़ा और सुबह होने से पहले पहले मौत आ गयी तो वह बे शक जन्नत में जायेगा।

(ये हदीस हज़रत शदाद बिन औस रजि0 से रिवायत है)

ख़ैर व बरकत और रिज़्क़ की तरक़्क़ी के लिए

अगर कोई शख़्स ख़ैर व बरकत व रिज़्क़ में वुसअत व कुशादगी चाहता हो तो चाहिए कि हर नमाज़ के बाद 100 मर्तबा ये पढ़ा करे।

لَاتُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَيُدْرِكُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ الْخَبِيْرُ.

फिर इसके बाद ये पढ़े—

اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْقَوِیُّ الْعَزِيْزُ. (تفسیر قران المجید)

अगर कोई शख़्स ये चाहे कि मेरे रिज़्क़ मे बरकत बारिश की तरह हो

अगर कोई शख़्स ख़ैर व बरकत और रिज़्क़ में वुसअत का ख़्वाहिश मंद हो तो इसको चाहिए कि शाम को मग़रिब की नमाज़ के बाद सूरे वाक़िआ एक मर्तबा और फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने से पहले सूरे यासीन पढ़ लिया करे और एक तस्बीह इन कलिमात की भी पढ़े।

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ وَهُوَ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ.

इन्शा अल्लाह तआ़ला ख़ूब ख़ूब कसीर रिज़्क़ में फ़रावानी होगी और बारिश की तरह बरकत होगी अगर इसके साथ एक तस्बीह अस्तग़फ़ार की और मिला लें। सुबह के वक़्त तो नूरुन अ़ला नूर होगा और रंज व ग़म से भी निजात हासिल होगी।

(मुजर्रबात दमीरी)

सूरे यासीन की फ़ज़ीलत

रिवायत में है कि सूरे यासीन शरीफ़ की बीस बरकतें हैं जो कोई भूखा इस सूरत को पढ़ेगा वह सेर और आसौदा हो जायेगा और जो प्यासा पढ़ेगा तो वह सेराब हो जायेगा और जो तंगदस्ती की वजह से लिबास न होने वाला पढ़ेगा इसको लिबास नसीब होगा और जो औरत बे शौहर वाली पढ़ेगी इसको शौहर और जो मर्द बे बीवी वाला पढ़ेगा इसको जोड़ा नसीब होगा और जो बे अमन आदमी इसको पढ़ेगा अमन वाला हो जायेगा और जो बीमार पढ़ेगा वह शिफ़ा पाने वाला हो जायेगा और सफ़र की हालत में पढ़ेगा तो सफ़र में इसकी मदद की जायेगी और रंज व ग़म की हालत मे पढ़ेगा। इसका रंज व ग़म मिट जायेगा और जिसकी कोई चीज़ गुम हो गयी होगी और वह सूरत की तिलावत करेगा तो इसको वह चीज़ या इस का निअ़मल बदल मिल जायेगा। और हदीस शरीफ़ मे आया है कि सूरे यासीन कुरान करीम का दिल है जो शख़्स भी इसको अल्लाह के लिए पढ़ेगा इसकी ज़रूरत मग़फ़िरत कर दी जायेगी और इस सूरत की रूह निकलते वक़्त पढ़ा करो। (मुजर्रबात देरबी)

सूरे वाक़िआ़ सूरे ग़नी भी है सूरे वाक़िआ़ की तफ़सीली फ़ज़ीलत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रजि० बीमार हुए तो हज़रत उस्मान ग़नी रजि० इनकी बीमार पुरसी अयादत के लिए इनके पास

तशरीफ़ लाये हज़रत उस्मान ग़नी रजि0 ने तबीअ़त और हाल मालूम करने के बाद दरयाफ़्त फ़रमाया कि मैं आप को कुछ माल ख़ज़ाना (बैयतुल माल) से देदूं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 ने फ़रमाया कि मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। हज़रत उस्मान ग़नी रजि0 ने फ़रमाया कि अगर आप को ज़रूरत नहीं है तो वह माल आप की औलाद के काम मे आयेगा। हज़रत अब्दुल्लाह मसऊद रजि0 ने जवाब दिया कि मेरी ग्यारह लड़कियां हैं और मैंने अपनी हर लड़की को सूरे वाकिआ पढ़ने की नसीहत कर दी है। क्योंकि मैंने जनाब मुहम्मद रसूल अल्लह स0अ0व0 को फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स सूरे वाकिआ रात को पढ़ेगा तो इसके क़रीब कभी भी फ़ाक़ा नहीं आयेगा लिहाज़ा मेरी तमाम लड़कियां सूरे वाकिआ तिलावत करती हैं। बअ़ज़ रिवायत मे आया है कि सूरे वाकिआ सूरे ग़नी है। लिहाज़ा मुफ़लिसी को दूर करने के लिए सूरे वाकिआ अकसीर है। तमाम ही बुज़ुर्गान सलफ़ व ख़ल्फ़ व अकाबिरीन रहिमहुमुल्लाह ने इस सूरत को अपनी ज़िन्दगी का वज़ीफ़ा बनाया है, और बताया है ये हक़ीक़त है कि इस सूरत का पढ़ने वाला कभी भी फ़ाक़े से नहीं मर सकता। इस सूरत की तिलावत इख़्तियार करने वाले को रिज़्क़ देने का वादा किया गया है। लिहाज़ा इस सूरत को रात को पढ़ना चाहिए। रिज़्क़ के मसले में मुजर्रब व मुस्तनद है।

एक लतीफ़ाः— सवाल ये है कि इस सूरे वाकिआ को रात मे कब पढ़े। मग़रिब के बाद या इशा के बाद क्योंकि कुछ लोगों का अमल मग़रिब के बाद पढ़ने का है और कुछ का अमल इशा के बाद सोने से पहले पढ़ने का है और पढ़ते हैं। एक मर्तबा तलबा व उलमा में ज़िक्र हो रहा था कि इस सूरे वाकिआ को मग़रिब के बाद पढ़े या इशा के बाद सोने से पहले पढ़े। कुछ उलमा ने फ़रमाया कि इशा के बाद पढ़ने सोने से पहले कुछ इसके बर अक्स भी फ़रमा रहे थे।

इन्दा ज़लील भी इस मजलिस में मौजूद था। बन्दा ज़लील ने कहा कि इस सूरत को मग़रिब की नमाज़ के बाद ही पढ़ना चाहिए। पूछा क्यों? मैं ने जवाब दिया कि अगर मग़रिब के बाद पढ़ लोगे तो इशा तक या सोने से पहले पहले तक खाना आ जायेगा और अगर इशा के बाद सोते वक़्त पढ़ोगे तो फिर खाना किस वक़्त आयेगा सबके सब इस बात पर खुश हो गये और कहने लगे कि वाक़ई हां इस सूरत को मग़रिब की नमाज़ के बाद पढ़ना चाहिए। इस अमल यानी सूरे वाक़िआ की तिलावत करने पर मुसलमानों मर्दों और ख़ास तौर पर औरतों को मुवज्जा होना चाहिए कि जब तक इस सूरत का तिलावत करने वाला अल्लाह की इस ज़मीन पर और इस नीले आसमान के नीचे रहेगा। फ़ाक़े में मुब्तला न होगा। अल्लाह और इसके रसूल स0अ0व0 के वादों पर यक़ीन कामिल रखा जाये और आप स0अ0व0 की इताअत पर मज़बूत हो जाये। रोटियां का ग़म न खाये बल्कि आख़िरत और दीन का ग़म खाये। रिज़्क़ के बारे में तो यूं फ़रमाया कि तुम्हारा रिज़्क़ आसमानों में है और तुम्हें मिल कर रहेगा। मौत न आयेगी जब तक अपने रिज़्क़ का नसाब और कोटा पूरा न कर लोगे।

इस सूरत के अमल मे लाने का अमल

इस सूरे वाक़िआ को अपने अमल में लाने का तरीक़ा ये है कि सात दिन मुसलसल रोज़े रखें जायें यानी दर्मियान में रोज़े का नाग़ा न हो और रोज़े रखना जुमा के दिन से शुरू करें और फिर इस सूरत को हर नमाज़ के बाद पच्चीस मर्तबा पढ़ें। इशा तक कोई दूसरा काम न करें। सिवाऐ इस सूरत के और दुरूद शरीफ़ व अस्तग़फ़ार के फिर इशा की नमाज़ के बाद इसी सूरत को एक सौ पच्चीस मर्तबा तिलावत करें। फिर हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें। दुआ मांगें। अब आप इस सूरत के आमिल बन गये। अब आप सिर्फ़ इतना करेंगे

कि रात में मग़रिब के बाद एक मर्तबा पढ़ लिया करें।

अगर रिज़्क़ की बरकत ख़त्म हो गयी हो तो क्या करे

अगर कोई शख़्स रिज़्क़ की तंगी से परेशान हो और वह इस बात का तालिब हो कि इसके रिज़्क़ में कुशादगी और बरकत हो तो इसको चाहिए कि सुबह फ़ज्र के बाद सूरज निकलने से क़ब्ल सूरे यासीन और शाम मग़रिब के बाद पच्चीस मर्तबा حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ पढ़े। इन्शा अल्लाह अर्रज़्ज़ाक़ इस अमल से रिज़्क़ बारिश की तरह आसानी से मुयस्सर होगा। (मुजर्रबाते अबरार)

एक अनौखा अमल रिज़्क़ से मुतअल्लिक़

अगर कोई शख़्स जुमा की नमाज़ के बाद सात मर्तबा अल्हम्द शरीफ़ और सात मर्तबा कुल हुवल्लाह और कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ और कुल अऊज़ु बिरब्बिन नास इन तीनो सूरतों को सात सात मर्तबा पढ़े इस के बाद–

اَللّٰهُمَّ يَاغَنِيُّ يَاحَمِيْدُ يَامُبْدِئُ يَامُعِيْدُ يَارَحِيْمُ يَاوَدُوْدُ اَكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

इस दुआ को भी सात ही मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआला इस इन्सान को अपने अलावा किसी दूसरे का मोहताज न बना देंगे और इसके लिए वहां से रिज़्क़ का हासिल करने का सामान अता फ़रमा देंगे जहां से इस का गुमान होगा और वहां से भी जहां से इसको गुमान न होगा ये अमल बुज़ुर्गान दीन व उलमा शरह व दातक़या का मख़्सूस अमल है सिर्फ़ हर जुमा के दिन हफ़्ते में एक दिन करने का है। (मुजर्रबाते हामिद)

रिज़्क़ की बरकत के लिए मुजर्रब मुस्तनद अमल

बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से ये एक मुजर्रब है कि जो शख़्स सुबह को फ़ज्र की नमाज़ के बाद सत्तर मर्तबा ये आयत पढ़ा करे। वह रिज़्क़ की तंगी से महफ़ूज़ रहेगा और बुज़ुर्गों का क़ौल है कि

फ़रमाया कि रिज़्क़ के मसअले मे बहुत मुजर्रब अमल है। आयत ये है–

اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْقَوِیُّ الْعَزِيْزُ. (پ۲۵)

हज़रत आदम अलै0 की दुआ

हज़रत आयशा रजि0 फ़रमाती हैं कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै0 की तौबा करनी चाही तो उन्होंने सात मर्तबा ख़ाने काबा का तवाफ़ किया। इस वक़्त ख़ाने काबा बना हुआ न था। बल्कि एक सुर्ख़ टीला था। तवाफ़ के बाद आदम अलै0 ने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और ये दुआ पढ़ी।

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّیْ فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِيْمَاناً يُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَيَقِيْناً صَادِقاً حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَنْ يُّصِيْبَنِیْ اِلَّا مَا كَتَبْتَهٗ عَلَیَّ فَارْضِنِیْ بِمَا قَسَمْتَهٗ لِیْ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام.

पस अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै0 पर वही भेजी कि मैंने तुमको माफ़ कर दिया और जो भी तुम्हारी औलाद में से इसी दुआ को पढ़कर मुझ से दुआ मांगेगा। मैं इस बख़्श दूंगा और इसका रंज व ग़म दूर कर दूंगा और तंगदस्ती व ग़रीबी को इसकी दोनों आंखों से निकाल दूंगा और हर तिजारत करने वाले को इस से नफ़ा दूंगा और दुनिया इसके पास ज़लील होकर आयंगी अगरचे वह दुनिया को न चाहे।

रिज़्क़ की कुशादगी के लिए अमल

ये अमल रिज़्क़ की फ़राख़ी व कुशादगी के लिए अजीब है कि फ़ज्र की नमाज़ के बाद मुस्तक़िल يَاوَهَّابُ चौदह सौ मर्तबा और अव्वल व आख़िर 21–21 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने को अपना वज़ीफ़ा बना लेगा तो इन्शा अल्लाह तआला रिज़्क़ की तंगी न इसके पास आयेगी और न इसकी औलाद के पास आयेगी।

क़र्ज़ के लिए मुस्तनद दुआ

जब कोई मजबूरी व लाचारी की वजह से क़र्ज़ में मुब्तला हो जाये तो ये दुआ एक तस्बीह हर नमाज़ के बाद पढ़ें और ये दुआ हदीस शरीफ़ में आयी है। اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ कुछ भी न हो तो कम से कम इस दुआ को 21–21 मर्तबा ज़रूर पढ़ते रहें। इन्शा अल्लाह तआला क़र्ज़ा अदा होने का इन्तेज़ाम हो जायेगा। हज़रत अली रज़ि0 के पास एक गुलाम आया और कहने लगा मैं अपने आक़ा व मालिक की रक़म अदा करने से आजिज़ हो गया हूं। लिहाज़ा मेरी इमदाद कीजिए। हज़रत अली रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं तुझे चन्द कलिमात ऐसे बतलाता हूं जो मुझे रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने बतलाये हैं। अगर तेरे ऊपर सबीर के पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ होगा तो अल्लाह तआला इस क़र्ज़ को अदा फ़रमा देंगे। ये पढ़ा करो اللّٰهُم اكفنى بحلالك عن حرامك सबीर एक पहाड़ का नाम है और क़र्ज़ के लिए ये दुआ ख़ूब है। एक तस्बीह पढ़ लिया करें। (हदीस शरीफ़)

दुआ तमाम इबादतों का मग़ज़ है

हदीस शरीफ़ में है कि दुआ तमाम इबादतों का लब्बे लबाब है। الدُّعَاءُ مخ العبادة. दुआ मोमिन का हथियार है। اَلدُّعَا سِلَاحُ الْمُؤْمِنْ दुआ दीन का सतून है اَلدُّعَاءُ عماد الدين दुआ आसमान व ज़मीनों का नूर है। الدعا نور السموات وَالْاَرْضِ. ये दुआ मोमिन का हथियार है। इस हथियार को तमाम मुसलमानों के घरों मे रहना चाहिए इस दुआ के सुतून से तमाम मुसलमान अपनी कमर मज़बूत रखें हदीस शरीफ़ मे है कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 फ़रमाते थे कि जब लोग दुआ मांगना कम कर देंगे तो बलायें नाज़िल होंगी और जब बादशाह ज़ुल्म करने लगेंगे तो बारिश रोक ली जायेगी और जब तुम आपस में ख़यानत करने लगोगे तो माल व दौलत मुशरिकों को मिल जायेगी

और जब लोग ज़कात देना ख़त्म कर देंगे तो मवेशी चौपाये जानवर मरने लगेंगे और जब ज़िना की कसरत हो जायेगी तो ज़मीन में ज़लज़ले आयेंगे, और जब लोग झूठी गवाही देने लगेंगे तो ताऊन की बीमारियां फैलेंगी।

क़र्ज़ के वास्ते वज़ीफ़ा

क़र्ज़ के लिए ये सूरत बुज़ुर्गाने दीन के अमलियात व फ़रमूदात में से है कि जब इन्सान क़र्ज़ में मुब्तला हो जाये तो सूरे लिईलाफ़ि कुरैश हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 7–7 मर्तबा पढ़ कर क़र्ज़ की अदायगी के लिए दुआ करे तो अललाह तआला क़र्ज़ के अदा होने का इन्तेज़ाम फ़रमा देंगे। (मुजर्रबात अकाबिर)

क़र्ज़दार व ग़मगीन हज़रात मुसीबत में मुब्तला क़ैदियों के लिए निजात का रास्ता

हुज़ूरे पाक स0अ0व0 एक दिन नमाज़ के वक़्त के अलावा ग़ैर वक़्त में मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो क्या देखा कि मस्जिद में एक सहाबी जिनका नाम अबू अमाम रजि0 है बैठे हुए थे। आप स0अ0व0 ने फ़रमाया ऐ अबू अमामा तुझ को क्या हुआ कि मैं तुम को मस्जिद में नमाज़ के वक़्त के अलावा बैठा हुआ देखता हूं। हज़रत अबू अमामा रजि0 फ़रमाने लगे या अल्लाह के रसूल स0अ0व0 मुझ को फ़िक्रें लगी हुई हैं और लोगों के बहुत से क़र्ज़े मेरे ज़िम्मे हो गये हैं तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया मैं तुम को ऐसे कलिमात न बताऊँ कि अगर तुम इसको पढ़ तो अल्लाह तआला तुम्हारी फ़िक्र को दूर कर देगा और तुम्हारे क़र्ज़ को अदा कर देंगे। अबू अमामा रजि0 ने अर्ज़ किया कि हां या रसूल अल्लाह स0अ0व0 ऐसी दुआ बताऐं। हुज़ूर पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया सुबह व शाम ये पढ़ा करो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسْلِ
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالْ.

हज़रत अबू अमामा रजि0 का बयान है कि मैंने इन कलिमात को पढ़ा। पस अल्लाह तआला ने मेरी फ़िक्रें दूर कर दें और मेरे क़र्ज़ को अदा कर दिया।

फ़ायदाः– इस दुआ को हर नमाज़ के बाद इक्कीस इक्कीस मर्तबा ज़रूर पढ़ना चाहिए।

इसी क़र्ज़ के सिलसिले में नसीहत वाला वाक़िआ

हज़रत अनस बिन मालिक रजि0 से फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने हज़रत मआज़ बिन जबल रजि0 से फ़रमाया कि जबकि जुमा के रोज़ इनको नहीं देखा था। आप ने नमाज़ पढ़ाई। ये मआज़ बिन जबल आये तो आप स0अ0व0 ने फ़रमाया ऐ मआज़ तुझ को क्या हुआ मैंने तुम को जुमा में नहीं देखा। मआज़ बिन जबल बोले या रसूल अल्लाह स0अ0व0 मेरे ऊपर एक यहूदी की रूक़िया चांदी (क़र्ज़) थी पस में ने आप स0अ0व0 की जानिब चला तो इस यहूदी ने मुझे आप के पास आने से रोक दिया इस पर रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने उनसे फ़रमाया ऐ मआज़ में तुमको ऐसी दुआ न बताऊँ कि अगर तुम्हारे ऊपर पहाड़ के बराबर क़र्ज़ हो तो भी इसको अल्लाह तआला अदा फ़रमा देंगे। ऐ मआज़ ये पढ़ा करो–

اَللّٰهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٍ. تُوْلِجُ اللَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ. رَحْمٰنُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيْمُهُمَا تُعْطِى مَنْ تَشَآءُ مِنْهُمَا وَتَمْنَعُ مَنْ تَشَا اِرْحَمْنِى رَحْمَةً تُغْنِيْنِى بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ.

एक हदीस शरीफ़ में है कि वह हज़रत मआज़ रजि0 ने कहा कि मेरे ज़िम्मे एक शख़्स का क़र्ज़ा था पस मैं इसके तक़ाज़े से डरा और दो दिन घर में ठहरा रहा में नहीं निकला और मैं रसूल अल्लाह स0अ0व0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप ने फ़रमाया ऐ मआज़

तुम ने आने में क्यों ताख़ीर की मैंने अर्ज़ किया। मेरे ज़िम्मे एक शख़्स का क़र्ज़ था पस मैंने इससे ख़ौफ़ खाया यहां तक कि मैंने शर्म महसूस की और इस बात को नापसन्द किया कि वह क़र्ज़ख़्वाह रास्ते में मिल जाये। तो आप स०अ०व० ने फ़रमाया मैं तुझे चन्द कलिमात न बताऊँ कि अगर तेरे ऊपर पहाड़ों की बराबर क़र्ज़ हो तो इस को भी अल्लाह तआला अदा फ़रमा देंगे। मआज़ बिन जबल फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि हां या रसूल अल्लाह स०अ०व० ऐसी दुआ ज़रूर बताइये आप स०अ०व० ऐसी दुआ ज़रूर बताइये। आप स०अ०व० ने गुज़िश्ता वाले कलिमात बताइये। तिबरानी ने गुज़िश्ता कलिमात के साथ इन अल्फ़ाज़ को भी बताया है।

اَللّٰهُمَّ اَغْنِنِىْ عَنِ الْفَقْرِ وَاقْضِ عَنِّىَ الدَّيْنَ وَتَوَفَّنِىْ فِىْ عِبَادَتِكَ وَجِهَادً فِىْ سَبِيْلِكَ.

फ़ायदाः– ये दुआ भी बहुत मुजर्रब है और आज़मौदा है कम से कम इस दुआ को हर नमाज़ के बाद 21–21 मर्तबा पढ़ना चाहिए। ज़्यादा की कोई हद नहीं जितना चाहे ज़्यादा पढ़ें।

क़र्ज़ के लिए मुफ़ीद मुजर्रब अमल

चाश्त की नमाज़ के बाद इकहत्तर मर्तबा अलम नशरह वाली सूरे चालीस दिन मुसलसल पढ़ें इन्शा अल्लाह क़र्ज़ के अदा होने की सूरतें पैदा हो जायेंगी।

हाजतों के पूरा होने की दुआ

अगर कोई हाजतमंद इस दुआ को फज्र की नमाज़ के बाद चालीस मर्तबा रोज़ाना पढ़ लिया करे और अपने जायज़ मक़सद के लिए दुआ करे तो इन्शा अल्लाह हाजत पूरी होगी। दुआ ये है–

يَاحَىُّ يَاقَيُّوْمُ لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِىْ شَانِىْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِىْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

एक अज़ीमो शान फ़ायदा ज़बरदस्त मुसीबतों के दूर करने के लिए

हज़रत अल्लामा इमाम नस्फ़ी रह0 ने अपनी किताब काफ़ी में लिखा है कि जो शख़्स कुरान करीम की चौदह सजदों की आयतों को एक मजलिस व मक़ाम पर पढ़े और हर सजदा की आयत पर सजदा भी कर ले तो अल्लाह तआला इसके ज़रूरत को ज़रूर पूरा फ़रमायेंगे, और इसके मसअलों में काफ़ी होंगे। (शारह नुरूल अनवार)

जिस औरत का शौहर तंदख़ू और कड़वे मिज़ाज का हो

जिस औरत का शौहर कड़वे मिज़ाज का हो इसको चाहिए कि इशा की नमाज़ के बाद 200 मर्तबा ये दुआ पढ़े--

يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ وَالْاَبْصَارُ يَاخَالِقَ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ يَالَطِيْفُ يَاغَفَّارُ.

अव्वल व आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ भी मिला लें इन्शा अल्लाह मुफ़ीद पायेंगी ये अमल मेरे उस्ताज़ मोहतरम का बताया हुआ है जो कि मुजर्रब है।

मुश्किल ज़रूरत को हक करने के लिए

मुश्किल काम को आसान व हल करने के लिए ये अमल पढ़ें कि ग्यारह सौ मर्तबा يَابَدِيْعَ الْعَجَآئِبْ بِالْخَيْرِ يَابَدِيْعَ अव्वल व आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें इन्शा अल्लाह तआला ग्यारह रोज़ में ही इस अमल का असर नज़र आ जायेगा। मगर याद रहे कि ये अमल एक मजलिस बैठक में मुकम्मल कर लें और इशा की नमाज़ के बाद हो। (मुजर्रबात शेख़)

सूरे अख़्लास की फ़ज़ीलत पर नसीहत पकड़ने का वाक़िआ

इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी रह0 तफ़सीर कबीर में तहरीर फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा जनाब मुहम्मद रसूल अल्लाह स0अ0व0 की

ख़िदमत मे हज़रत जिब्रील अलै0 बैठे हुए थे। अचानक एक सहाबी तशरीफ़ लाये तो हज़रत बोले कि या अल्लाह के रसूल स0अ0व0 هذا ابوذر ये अबूज़र हैं। आप स0अ0व0 ने फ़रमाया اَوَتعرفونه आप ने उनको कैसे जान लिया। हज़रत जिब्रील अलै0 फ़रमाने लगे هو اشهر عندنا عندكم मदीना मुनव्वरा में। जितनी इनकी शोहरत है इससे ज़्यादा आसमान में हम फ़रिश्तों की दर्मियान शोहरत है। हुज़ूरे पाक स0अ0व0 ने फ़रमाया بماذا نال هذه الفضيلة ये अज़मत इनको कैसे हासिल हुई हज़रत जिब्रील अलै0 ने जवाब दिया कि ये फ़ज़ीलत को उनको दो अमल से मिली है لصغره في نفسه अपने आप को ख़ुद छोटा समझते हैं यानी दिल में अपनी बड़ाई नहीं है। दूसरा अमल ये है। كثرة قراء ته قل هو الله احد कि ये कुल हुवल्लाह वाली सूरत सूरे अख़्लास बहुत पढ़ते हैं। जिसकी वजह से आसमानों के फ़रिश्तों में उना चरचा है। (तफ़सीर क़ुरान मजीद)

बेचैनी के वक़्त की दुआ

जब जनाब मुहम्मद रसूल अल्लाह स0अ0व0 को कोई फ़िक्र व परेशानी पेश आती थी तो आप स0अ0व0 की ये दुआ होती थी يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ इस दुआ के पढ़ने से हर क़िस्म की परेशानी ख़त्म हो जाती है और हर क़िस्म का रंज व ग़म मिट जाता है। मैंने अपने उस्ताज़ मोहतरम मुदज़िल्लहु आ़ली को इस दुआ को कसरत से पढ़ते हुए देखा है। मैंने इस क़दर ज़्यादा पढ़ने का सबब और वजह मालूम की तो उन्होंने फ़रमाया मेरी कुंवारी लड़कियां (बे निकाह) बैठी हैं। उनके निकाह के रिश्ते के वास्ते इस दुआ को पढ़ता हूं। मैंने देखा कि वह हर वक़्त चलते फिरते उठते बैठते इस दुआ को पढ़ते थे और फ़रमाया कि जब हुज़ूर पाक स0अ0व0 पर मुसीबतों के पहाड़ टूटते थे तो आप स0अ0व0 की ज़बान मुबारक पर भी कलिमात जारी होते थे। लिहाज़ा इस दुआ को अपनी बेचैनी के वक़्त पढ़ना चाहिए

इसके पढ़ने के लिए वक़्त और जगह मुतय्यन नहीं है। हर वक़्त ख़ूब कसीर पढ़ें।

हज बैयतुल्लाह शरीफ़ के वास्ते ख़्वाब में बशारत शुदा दुआ

हज़रत अल्लामा दमेरी रह0 ने फ़रमाया कि मुझे हज का बहुत शौक़ लगा हुआ था और हज करने की एक तड़प थी और दिल में हज करने की बेचैनी थी। हज को जाने की ताक़त ख़र्च व नुफ़क़ा न होने की वजह से नहीं थी ख़्वाब में एक रोज़ एक बुज़ुर्ग की ज़ियारत हुई तो मैंने उन बुज़ुर्ग से ये अर्ज़ किया कि मुझे हज करने का शौक़ लगा हुआ है हज किये हुए बहुत दिन हो गये और मेरे पास कोई इन्तेज़ाम नहीं है कि जो मैं हज कर सकूं लिहाज़ा मुझे कुछ रहनुमाई फ़रमाइये तो उन बुज़ुर्ग ने ये दुआ पढ़ने को बताई। لَاإِلٰـهَ إِلَّا اللّٰـهُ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ الرَّقِيْبُ الْمَنَّانُ. अल्लामा दमेरी रह0 फ़रमाते हैं कि इस दुआ की बरकत से उसी साल मुझे हज नसीब हुआ। जबकि मेरे पास कुछ भी पल्ले नहीं था। लिहाज़ा इस दुआ को कसरत से पढ़ना चाहिए।

मुश्किलात को आसान करने के लिए अमल

जब कभी कोई ज़ाहिरी या बातिनी परेशानी ला हक़ हो और हर तरफ़ से नाउम्मीद बेकसी व बेबसी ग़ालिब हो तो अल्लाह तआला शानहु जो हक़ीक़ी काम बनाने वाले हैं इनकी बारगाह में रात की तन्हाई में दो रकअ़त नमाज़ नफ़ल मदद तलब करने की नियत से पढ़े और दुआ करे। दुआ के अव्वल आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर अपनी हाजत और तकलीफ़ को रो रो कर अल्लाह तआ़ला के सामने पेश करे। चन्द दिन ऐसा ही करें। उठते बैठते अस्तग़फ़ार और दुरूद शरीफ़ की कसरत रखें और रोज़ाना 341 मर्तबा حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ. पढ़ें। ये बड़ी ही ख़ैर व बरकत का अमल

है और बहुत जल्द इस का ज़हूर आप अपनी आंखों से देखेंगे। इन्शा अल्लाह तआला। (मुजर्रबाते अकाबिर)

बुज़ुर्गों का मख़्सूस अमल

बुज़ुर्गाने दीन का ये भी अमल बहुत तेज़ असर है कि ज़माने की परेशानियों और तरह तरह के हादसों में और शदीद बीमारियों के वक़्त आयत करीम لَاإِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ. का विर्द करते हैं अव्वल आख़िर 11–11 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर अपनी हाजतों के मुतअल्लिक़ पेश करें इन्शा अल्लाह तआला हर तरह के रंज व ग़म से निजात मिलेगी।

हर क़िस्म की परेशानी को दूर करने के लिए

हर क़िस्म की परेशानी व उल्झन के मौक़े पर 313 मर्तबा इसी आयत करीम لَاإِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ. किसी नमाज़ के बाद मुतय्यन करके पढ़ लिया करें ख़ास तौर पर असर की या फ़ज्र की नमाज़ के बाद हो तो ज़्यादा अच्छा है और सोते वक़्त अलम नशरह वाली सूरत सतरह मर्तबा पढ़कर सीने पर दम कर लिया करें, बस काफ़ी है।

ईमान पर ख़ात्मा होने के लिए

ये अमल ईमान पर ख़ात्मा होने के लिए मुस्तनद है। अगर सोते वक़्त पांचों कलिमे और चारों कुल यानी काफ़िरून, अख़्लास, फ़लक़, नास-एक मर्तबा पढ़ कर सोने की आदत बना लें। इस तरह पर कि इसके पढ़ लेने के बाद किसी तरह की गुफ़तगू न करें तो इन्शा अल्लाह तआला ईमान पर ख़ात्मा अच्छा होगा।

ईमान पर ख़ात्मा अच्छा होने के लिए दुआ क़ुरानी

मुझ को मेरे उस्ताज़ मोहतरम मुदज़िल्लहु आली ने ये क़ुरानी करीम की दुआ ख़ात्मा बिल ख़ैर होने के लिए बताई है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इस दुआ को पढ़ लेने वाले का ख़ात्मा अच्छा होता है

और बुरी मौत से हिफ़ाज़त रहती है। दुआ ये है—

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ.

मुस्तजाबुद दअ़वात होने के लिए

मेरे शेख़ पीरं व मुर्शिद ने इरशाद फ़रमाया कि इस दुआ को रोज़ाना सत्ताईस मर्तबा पढ़ने वाला मुसलमान मुस्तजाबुद दअ़वात यानी इन लोगों में से हो जाता है। जिनकी दुआऐं अल्लाह तआ़ला फ़ौरन् क़बूल फ़रमा लेते हैं बन जाता है। बशर्तेकि हलाल रिज़्क़ इस्तेमाल करता हो दुआ ये है—

رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ.

इस दुआ को 27 मर्तबा रोज़ाना चौबीस घंटे में किसी वक़्त भी पढ़ लेना चाहिए।

अबदाल के दरजे को पाने की दुआ

मवाहिब लदनिया में है कि हज़रत मारूफ़ करख़ी रह0 से रिवायत है कि जो शख़्स इस दुआ को दिन रात में किसी वक़्त भी तीन मर्तबा पढ़ ले गा इसका नाम अबदाल के रजिस्टर में लिख दिया जायेगा, दुआ ये है—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِاُمَّةِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ تَجَاوَزْ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ.

अगर कोई शदीद ज़रूरत पेश आ जाये

हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन रह0 ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 से रिवायत किया है कि अगर कोई सख़्त ज़रूरत सामने आ जाये तो वह हाजतमंद आदमी बुध (चहार शम्बा) जुमेरात और जुमा इन तीन दिन का रोज़ा रखे। जुमा के दिन ख़ास तौर पर गुस्ल करके जुमा की नमाज़ को जाते हुए ये दुआ पढ़े। इन्शा अल्लाह इसकी ज़रूरत पूरी हो जायेगी और फ़रमाया कि ये अमल मुजर्रब व

आज़मौदा है। दुआ ये है–

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمِ وَاَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ لَا اِلٰهَ هُوَ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ اَلَّذِىْ مَلَاَتْ عَظَمَةُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَنَتِ الْوُجُوْهُ الْحَىُّ الْقَيُّوْمِ وَخَشَعَتْ لَهُ الْاَبْصَارِ وَوَجِلَتِ الْقُلُوْبُ مِنْ خَشْيَتِهٖ اَنْ تُصَلِّىْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تُعْطِيَنِىْ مَسْئَلَتِىْ وَتَقْضِىْ حَاجَتِىْ وَتَسْمِيْهَا بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ الرَّحِمِيْنَ.

बात में सच्चाई रिज़्क़ में बरकत दुशमनों के शर से हिफ़ाज़त के लिए

मुजर्रबात अली में ये अमल मुस्तनद व मुदल्ल हैं कि अगर कोई शख़्स ये चाहे कि मेरे बोलने में सच्चाई रहे तो सूरत इन्ना अन्ज़लनाहु फ़ी लैयलतुल क़द्र पढ़ा करे कसरत के साथ और अगर कोई शख़्स ये चाहे कि अल्लाह तआला मुझे रिज़्क़ की ख़ूब बरकत अता फ़रमायें तो सूरे फ़लक़ कसरत के साथ पढ़ा करे और अगर कोई शख़्स ये चाहे कि मैं दुशमनों के शर व फ़ितने से महफ़ूज़ रहूं तो सूरे नास कसरत के साथ पढ़ा करे।

मदद व नुसरत का तोहफ़ा

उलमा दीन व बुज़ुर्गाने दीन औलिया अल्लाह के मुजर्रबात से एक मुजर्रब ये है कि حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ को पांच सौ मर्तबा अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें और जिस मक़सद ख़ैर के लिए भी इस अमल को पढ़ेंगे इन्शा अल्लाह तआला वह मक़सद हल व आसान हो जायेगा। अगर चे कितना ही दुशवार व मुश्किल मसअला व क़िस्सा हो इन्शा अल्लाह तआला ग्यारह दिन के अन्दर अन्दर ही इस मुश्किल की गिरह खुल जायेगी बल्कि बअ़ज़

उलमा कराम ने तहरीर फ़रमाया है कि इस अमल की तमाम ख़ूबियां व फ़ज़ीलतें अब तक किसी ने नहीं लिखें और न किसी ने बयान कीं और बअ़ज़ रिवायत में है कि जब हज़रत इब्राहीम अलै० को आग में डाला जा रहा था तो आप की ज़बान मुबारक पर यही حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ कलिमा था और बअ़ज़ रिवायत में है कि जब रसूल अल्लाह स०अ०व० को दुशमनों ने क़त्ल करने का मन्सूबा कर लिया था तो आप स०अ०व० की ज़बान मुबारक पर यही حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ कलिमा था। इस बिना पर तमाम औलिया अल्लाह व बुज़ुर्गाने दीन रिज़्क़ की तंगी के लिए कारोबार से परेशानी और इन्सान के लिए मुक़दमें की कामयाबी के लिए जो कि जायज़ हक़ रखता हो इसके हासिल करने के लिए दुशमनों के शिकन्जे को कमज़ोर और फ़ैल करने के लिए ज़ालिमों की स्कीमों को नाकामयाब बनाने के लिए इस का वज़ीफ़ा मख़्सूस तरीक़ा पर बताया है और मेरे उस्ताज़ मोहतरम का फ़रमान है कि आख़िरत के चमकाने का वज़ीफ़ा कलिमा तय्यबा और दुनियावी ज़िन्दगी को चमकाने का वज़ीफ़ा حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ है। इस बिना पर इस वज़ीफ़े को इस वक़्त ख़ास तौर पर याद रखना चाहिए जबकि मुसीबतों से कलेजे मुंह को आ रहे हों, और किसी काम की बिगड़ी बनती नज़र न आ रही हो इसके मअ़नी का ध्यान करते हुए पढ़ें कि हम को तो हमारा अल्लाह ही काफ़ी है और बेहतरीन काम बनाने वाला है। इस वज़ीफ़े को पाबन्दी के साथ जगह की तईन के साथ पढ़ें।

दिल को नूरानी बनाना और बेक़रारी का इलाज

मेरे शेख़ पीर व मुर्शिद मुदज़िल्लहुम आली ने मख़्सूस तरीक़े पर बताया कि असर की नमाज़ के बाद पांच मर्तबा सूरे नबा अ़म्म यतसाअलून का पढ़ना दिल को नूरानी बनाता है और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत पैदा करता है अगर इसी सूरत को पाबन्दी से

पढ़ने वाला इसको पढ़ कर पानी पर दम करके दिल की धड़कन वाले मरीज़ को पिला दे तो इसी वक़्त से सुकून व चैन हासिल होता है। (मुजर्रबात सही)

अगर शौहर अपनी बीवी से नफ़रत करे

अगर कोई शौहर अपनी बीवी से नफ़रत करता हो जिसकी वजह से घर में बे चैनी व बेक़रारी की आग लगी हुई हो तो ऐसी हालत में चाहिए कि कुरान करीम की ये आयात लिख कर तावीज़ बनाकर इस तावीज़ को ख़ुशबू की धुनी देकर औरत के गले में डलवादें तावीज़ की इबारत ये है—

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. فلما رأينه اكبرنه وقطعن يديهُنَّ وقلن حاش للّٰه ماهٰذا بَشَراً. اِنْ هٰذَا اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْم بسم اللّٰه الرحمن الرحيم صلى اللّٰه على محمد وبارك وسلم.

एक अजीब मुस्तनद अमल

रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन मर्तबा اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعُ الْعَلِيْم مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم। फिर सूरे हश्र की आख़िरी तीन आयत पढ़े तो अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस पर रहमत की दुआ करने के लिए मुक़र्रर फ़रमा देते हैं। शाम तक और अगर इसी शाम को पढ़े तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इसके लिए रहमत की दुआ करने के लिए मुक़र्रर फ़रमा देते हैं और अगर वह इस दिन मर गया तो शहादत का दरजा हासिल होगा।

तमाम हाजतों के लिए मख़्सूस तावीज़

इस तावीज़ को तमाम हाजतों में अकसीर व मुफ़ीद पाया गया है और इसको नये वज़ू करके लिखें तावीज़ बनाकर मोम जामा कर के सीधे बाज़ू पर या गले में काले धागे से डाल दें। नक़्श की ख़ाना पुरी तरतीब से करें। इसका ख़ास ख़्याल रखें। इन्शा अल्लाह तआला

मुफ़ीद पायेंगे।

بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم. بسم الله الرحمن الرحيم

444	447	452	437
451	438	443	448
439	454	445	442
446	441	440	453

اللّٰهم صلى على محمد وعلى ال محمد كما صليت على ابراهيم وعلى ال ابراهيم انك حميد مجيد رب انى مغلوب فانتصر بحق بسم اللّٰه الرحمن الرحيم.

हर नेक काम के मदद व तौफ़ीक़ हासिल करने की दुआ

मोअ़तबर हवाले से ये दुआ है कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० से मालूम किया गया है कि आप को इतने बड़े बड़े नेक काम करने की तौफ़ीक़ कैसे हासिल हुई तो इमाम साहब रह० ने इरशाद फ़रमाया कि मैं हमेशा अल्लाह तआ़ला से इस दुआ को मांगता रहा हूं। اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ عَلٰى طَاعَتِكَ ऐ अल्लाह हम आप से आप की इताअ़त पर मदद मांगते हैं। इस दुआ को हर नमाज़ के बाद 3 या सात मर्तबा पढ़ना चाहिए।

अच्छा ख़ात्मा होने के लिए अमल

इसमें कोई शक व शुबा नहीं है कि अल्लाह तआ़ला के अज़मत वाले ख़ज़ानों में से अच्छी मौत का होना एक अज़ीम ख़ज़ाना है कि जिस इन्सान को दुनिया से रुख़सत होते वक़्त कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ मिल जाये। बअ़ज़ मर्तबा नाक़दरी की वजह से ऐसा भी होता है कि दुनिया से जाते वक़्त ईमान से हाथ धोकर जाता है। ईमान के साथ और मौत के वक़्त ज़बान पर कलिमा आ जाने के लिए मिस्वाक है। अल्लामा शामी रह० ने फ़तावा शामी जि.नं.1 स.85 में तहरीर

फ़रमाया है कि

ومن منافعه تل كسير الشهادة عند الموت رزقنا الله ذالك بمنه وكرمه.

यानी मिस्वाक के फ़ायदों में से एक फ़ायदा ये है मौत के वक़्त कलिमा शहादत याद आता है। अल्लाह तआला अपने एहसान व करम से इसके पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें। अल्लामा इब्न हजर अस्क़लानी रह० ने भी मिस्वाक कें सत्तर फ़ायदे तहरीर फ़रमाये हैं उन सत्तर में से मौत के वक़्त कलिमा शहादत पढ़ने की तौफ़ीक़ होना भी लिखा है। मिस्वाक करने से अल्लाह पाक भी राज़ी होते हैं और फ़रिश्ते भी राज़ी व ख़ुश होते हैं। बलग़म का मर्ज़ भी ख़त्म हो जाता है। आंखों में राशनी बढ़ती है। मिस्वाक की सुन्नत की बरकत से ही मरते वक़्त कलिमा पढ़ना याद आ जाता है। मिस्वाक करने और पकड़ने का तरीक़ा किसी किसी आलिम से मालूम फ़रमायें।

अगर किसी का कोई अमल ख़राब हो गया

अगर किसी शख़्स का अमल बिगड़ गया हो और वह शख़्स अमल के बिगड़ने की वजह से परेशान हो तो इसको चाहिए कि रोज़ाना पाबन्दी के साथ सोते वक़्त बावज़ू एक हज़ार बार صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيْمِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ इस तरह पढ़े कि इस दुरूद शरीफ़ के दर्मियान में 313 मर्तबा दुआ ज़ुल नून यानी لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ. पढ़े और अव्वल व आख़िर इस दुरूद को 500 मर्तबा पढ़े इन्शा अल्लाह बहुत जल्द रिहाई नसीब होगी।

(मुजर्रबात मख़्सूस)

तमाम दुआओं में से एक अफ़ज़ल दुआ

इस दुआ से बढ़कर और कौन सी दुआ हो सकती है कि हज़रत अबू अमामा रजि० ने रसूल अल्लाह स०अ०व० से अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल आप स०अ०व० ने बहुत से दुआएं बतायीं कि जिनको हम याद भी न रख सके और ख़्वाहिश ये है कि अल्लाह

तआ़ला से सब दुआऐं मांगें तो रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि क्या मैं तुम को न बताऊँ कि जो इन सब दुआओं को शामिल और जमा करने वाली हो तुम यूं कहा करो–

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

(حدیث نبوی)

जो शख़्स ग़लीज़ और गन्दे ख़्यालों और वसवसों से परेशान हो

जिस इन्सान को बुरे बुरे ख़्याल और शैतानी वसवसों ने परेशान कर रखा हो तो वह शख़्स कसरत से उठते बैठते ये दुआऐ कुरानी पढ़ा करे। رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ इन्शा अल्लाह तआ़ला इसके कसरत से ये शिकायत जाती रहेगी। (मुजर्रबात उस्ताज़)

हर क़िस्म के बुरे ख़्यालात से निजात का वज़ीफ़ा

जिस इन्सानी को शैतानी वसवसों ने परेशान कर रखा हो और वह उन बुरे ख़्यालात से आजिज़ व तंग आ गया हो कि सही अक़ीदों से भी बाहर निकलने का इरादे पर मजबूर हो तो इसको चाहिए कि ज़्यादा से ज़्यादा ईमान मुफ़स्सल पढ़ा करे और साथ साथ اَللّٰهُ رَبِّيْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا. मिला लिया करे। इन्शा अल्लाह तआ़ला वसवसों की जड़ कमज़ोर पढ़ जायेगी और बुरे ख़्यालात से निजात हासिल होगी। ईमाने मुफ़स्सल किसी आलिम से दरयाफ़्त फ़रमा लें।

जिस इन्सान को नेकियां करना मुश्किल और दुशंवार हो

इस दुआ के पढ़ने से नेकियां करना आसान हो जाती हैं और अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी करने से बच्चे की कुव्वत और नेकी

करने की ताक़त हासिल होती है और डरो ख़ौफ़ लगने लगता है और ये दुआ हदीस शरीफ़ में आयी है। दुआ ये है–

اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِیْ تَقْوَاهَا وَزَکِّهَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَکّٰهَا اَنْتَ وَلِیُّهَا وَمَوْلٰهَا.

जो लोग गन्दे माहौल की वजह से, नेक काम करने के लिए परेशान हों और हिफ़ाज़त में आना चाहते हों

इस दुआ को हर नमाज़ के बाद तीन, तीन मर्तबा पढ़ना चाहिए। इससे अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त हासिल होती है और इस दुआ की बरकत से तमाम बुराईयां बुरी मालूम हाने लगती हैं और अच्छाईयों अच्छे लगने लगती हैं। ख़ासकर नौजवान हज़रात जो कि जवानी के नशे में कि सच्ची बात इनके दिल व दिमाग़ में न उतरती हो कि कानों से सुनना बुरा ज़बान से बोलना कड़वा और आंखों से नागवार मालूम होता हो और दिल से नफ़रत करता हो और वह नौजवान हज़रात अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर रहे हों तो ऐसे गुनाहों के मरीज़ों के लिए ये दुआ यक़ीनी तौर पर बेहतरीन मदद का ज़रिया है। ज़रूर इसको इस्तेमाल में लायें और ये दुआ हदीस शरीफ़ मे भी आयी है। दुआ ये है–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِیْ وَمِنْ شَرِّ بَصَرِیْ وَمِنْ شَرِّ لِسَانِیْ وَمِنْ شَرِّ قَلْبِیْ وَمِنْ شَرِّ مَنِیِّیْ.

ऐ अल्लाह पनाह चाहता हूं मैं आप की अपने कानों के शर से और अपनी आंखों के शर से और अपनी ज़बान के शर से और अपने दिल के शर से और अपनी मनी के शर से।

जिस औरत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों पैदा होकर मर जाते हों

ऐसी शिकायत के लिए ये तावीज़ इस्तेमाल करायें कि एक कागज़ पर इकसठ मर्तबा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखकर तावीज़ बनाकर काले रंग के धागे से गले में डाल दें। इन्शा अल्लाह तआला

बच्चे की ज़िन्दगी मुक़द्दर में होगी तो हर बला से अमन व हिफ़ाज़त में रहेंगे और बच्चे की जानिब से कुछ सदक़ा भी सही मुस्तहक़ को दें। (मुजर्रबात सही)

आख़िरत के अन्दर निजात पाने का एक अज़ीमो शान विर्द

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह तआ़ला को ख़्वाब मे निन्नानवे मर्तबा देखा फिर मैंने चाहा कि अगर इस मर्तबा अल्लाह तआ़ला की ज़ियारत होगी तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला से मालूम करूंगा कि ऐ अल्लाह मख़्लूक़ को अपने अज़ाब से क़यामत के दिन किस चीज़ के ज़रिये निजात फ़रमायेंगे। बहरहाल मैंने अल्लाह तआ़ला को ख़्वाब में देखा फिर मैंने कहा कि ऐ अल्लाह आप का नाम मुबारक है और आप की अज़मत सबसे ज़्यादा बुलन्द व बाला है। आप मुझे मुत्तलेअ़ फ़रमा दीजिए कि किस चीज़ के ज़रिये अपने बन्दों को क़यामत के दिन निजात फ़रमायेंगे तो अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह व शाम से कलिमात पढ़ेगा वह मेरे अज़ाब से निजात पायेगा। वह कलिमात ये हैं–

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْاَبَدِ الْاَبَدْ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْوَاحِدِ الْوَاحِدْ
سُبْحَانَ اللّٰهِ الْفَرْدِ الصَّمَدْ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَافِعِ السَّمَآءِ بِغَيْرِ عَمَدْ
سُبْحَانَ اللّٰهِ مَن بَسَطَ الْاَرْضَ مَاء جَمَدْ سُبْحَانَ مَنْ قَسَمَ الرِّزْقَ وَلَمْ يَنْسَ اَحَدْ.
سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ الْاَرْضَ فَاَحْصَاهُمْ عَدَدْ سُبْحَانَ مَنْ لَمْ يَتَّخِذْ زَوْجِه وَلَا وَلَدْ
سُبْحَانَ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُواً اَحَدْ.

(درمختار) عقود الجمان)

वज़ू करने के बाद क्या पढ़ना चाहिए

जो शख़्स वज़ू करने के बाद सूरे इन्ना अन्ज़लनाहु फ़ी लैयलतुल क़दर मुकम्मल एक मर्तबा पढ़े तो वह सिद्दीक़ों में से होगा

और जो शख़्स इस सूरत को दो मर्तबा पढ़े तो इसका नाम शहीदों के रजिस्टर में लिख दिया जायेगा और जो शख़्स इस सूरत को तीन मर्तबा पढ़ेगा तो अल्लाह तआ़ला इस इन्सान को नबियों की जमाअ़त में उठायेंगे। इबारत हवाला की ये है–

مَنْ قرأفى اثر وضوءٍ انا انزلناه فى ليلة القدر واحدة كان من الصديقين ومن قرأها مرتين كتب فى ديوان الشهداء ومن قرأها ثلثا حشره الله محشر الانبياء رخرجه الديلمى كذافى المراقى وشرح نور الايضاح اشرف الايضاح ص ٣٥ وكذانور الفتاح ص ٥١.

और एक फ़ज़ीलत इस में मन्कूल है कि जिसने वज़ू के बाद इसी सूरत को पढ़ा तो इसके पचास साल के गुनाह माफ़ होते हैं।

من قرأها فى اثر الوضوٴ غفرالله له ذنوب خمسين سنة ص ٣٦ نور الفتاح شرح نور الايضاح ص ٥١.

बाग़ बग़ीचे और खेती की हिफ़ाज़त के लिए

अगर खेती वग़ैरह महफ़ूज़ नहीं रहती हो तो इसके लिए ये अमल किया जाये कि ज़मीन मे बीज तुख़्म डालने से पहले नया वज़ू बनाकर खेत के चारों कोनों पर दो दो रकअ़त नमाज़ नफ़ल पढ़े फिर बीज डालें बील डालने के बाद दुआ करे कि ऐ अल्लाह मे तेरा आजिज़ व क़ासिर ग़ुलाम हूं और ऐ अल्लाह जो मेरे करने का काम था वह मैं अन्जाम दे चुका बस आप ही की हिफ़ाज़त में है। आप इसको तरबियत फ़रमा कर मेरे हवाले फ़रमा दीजिए और इसमें बरकत भी अता फ़रमाईये। अल्लाह तआ़ला से ख़ूब रो रो कर दुआ करें। दुआ के अव्वल व आख़िर सात सात मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें। (मुजर्रबात सालिहीन)

गन्दे ख़्वाबों से हिफ़ाज़त

जो शख़्स ये चाहे कि मेरी गन्दे ख़्वाबें न नज़र आयें तो इसको चाहिए कि सोते वक़्त सतरह मर्तबा अलम नशरह वाली सूरत पढ़कर

सीने पर दम करके सोये। इन्शा अल्लाह तआ़ला बुरे ख़्वाबों से हिफ़ाज़त रहेगी और अच्छे ख़्वाब नज़र आया करेंगे।

(मुजर्रबात उस्ताज़)

जानवरों की सरकशी ख़त्म करने के लिए

अगर आप का कोई सा भी जानवर हो जो कि शोख़ी व सरकशी करता हो तो इसके गले में इस तावीज़ को लिखकर डाल दें। इन्शा अल्लाह तआ़ला मुफ़ीद पायेंगे। तावीज़ में लिखे जाने वाली इबारत ये है–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم ولاطلهه هوهوهو دهست
هوهوهوهوهوهوهوهو هو هو هو هو ههههههه امها هيا لولوس درود
حضرتً لاحول ولا قوة الا باللّٰه العلى العظيم.

ग़ल्ले की हिफ़ाज़त के लिए

ग़ल्ले की हिफ़ाज़त के लिए मुजर्रब व मुस्तनद है कि एक काग़ज़ पर हुरूफ़े मुक़त्तआ़त जो कि कुराने करीम में सूरतों के अव्वल मे लिखें हुए हैं इनको लिखें और ये नाम भी लिखें उबैदुल्लाह उरवह क़ासिम सईद अबुबकर सुलैमान ख़ारजा उमर नूह अली मूसा इब्राहीम और लिखकर ग़ल्ले मे रख दें।

सूरे यासीन शरीफ़ की तासीर पर हैरत अंगेज़ नसीहत का वाक़िआ़

कलामुल्लाह शरीफ़ की तफ़सीर के मुफ़स्सिर अल्लामा इमाम नासिरुद्दीन रह0 पर एक मर्तबा सकता की हालत तारी हुई जिसमें इन्सान की कैफ़ियत मिस्ल मुर्दे की हो जाती है, लोगों ने इनको ये समझ कर कि उनका इन्तक़ाल हो गया है क़ब्र में दफ़न कर दिया। दफ़न करने के बाद हज़रत अल्लामा रह0 की सकते की हालत ख़त्म हुई तो क़ब्र मे देखते हैं मगर कुछ नज़र नहीं आता क़ब्र के अन्दर अपनी इस बैचेनी की हालत में सूरे यासीन शरीफ़ पढ़नी शुरू कर दी

इतने में एक कफ़न चोर इनका कफ़न चुराने के लिए इनकी क़ब्र के सब तख़्ते हटा दिये हज़रत इमाम साहब जो अपनी क़ब्र से सीधे खड़े हुए तो कफ़न चोर डर व ख़ौफ़ की वजह से फ़ौरन मर गया। अल्लाह तआला ने इमाम साहब को इस मुश्किल से निजात अता फ़रमाई। मुसलमानों को चाहिए कि इस वाक़िऐ से इबरत व सबक़ हासिल करें।

खाने के नुक़सान से बचने के लिए

अगर तू खाना नुक़सान देने का ख़ौफ़ रखता हो तो खाना शुरू करने से पहले इस दुआ तीन मर्तबा पढ़ इन्शा अल्लाह तआला इस खाने का नुक़सान न होगा यक़ीन के साथ पढ़ें यक़ीनी फ़ायदा होगा। दुआ ये है–

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

ये दुआ इस्मे आज़म के बयान में गुज़र चुकी है। पीछे देख लें।

दूसरी दुआ इसी सिलसिले मे

अगर इस नीचे वाली दुआ को पूरे यक़ीन के साथ सात मर्तबा पढ़ कर खाना खायें तो खाना मिज़्र न होगा। इन्शा अल्लाह तआला। मगर इसके साथ कामिल यक़ीन ज़रूरी है कि दोनों जहां में अल्लाह तआला के नाम से बढ़ कर सानी और दूसरी ताक़त नहीं है कि जो किसी तरह का नुक़सान व नफ़ा दे सके। मगर हम इस ज़माने के अन्दर अपने दिलों को टटौल कर देखें कि हमारे ईमान व यक़ीन कमज़ोर हो चुके हैं। वरना गुज़िश्ता ज़माने के हालात में है कि अहलुल्लाह और बुज़ुर्गों ने इसी दुआ को पढ़कर ज़ेहर के प्याले पी लिये हैं जैसा कुतुब मोअ़तबरह में है और एक हदीस शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के क़रीब

ज़माने में कुद लोग (ईमान की कमज़ोरी की वजह से) अपने दीन को थोड़े से माल के बदले पर भी फ़रोख़्त करने को तरजीह देंगे और सुबह को आदमी मोमिन होगा और शाम को काफ़िर (इसी ईमान की कमज़ोरी की वजह से)। वह दुआ ये है–

بسم اللّٰهِ خَيرَ الاَسْمَآءِ بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ الاَرْضِ وَرَبِّ السَّمَآءِ بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا يَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

जिस इन्सान को अपने घर मे वहशत मालूम हो

जिस इन्सान को अपने घर मे डर व ख़ौफ़ वहशत लगती हो तो इसको चाहिए कि वह अपने घर में कबूतर पाले रसूल अल्लाह स0अ0व0 के पास एक साहब आये और कहने लगे कि या रसूल अल्लाह स0अ0व0 जब मैं अपने घर में दाख़िल होता हूं तो वहशत लगती है। रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपने घर में कबूतर पाल लो ये इलाज मुस्तनद है और इससे घर की वहशत ख़त्म हो जायेगी। (हदीस नबवी स0अ0व0)

जब किसी दरिन्दे वग़ैरह का ख़ास तौर पर शेर का ख़ौफ़ हो

अगर कही भी रास्ते या घर या जंगल वग़ैरह मे शेर वग़ैरह सामने आ जाये तो इस दुआ को पढ़ लिया जाये तो अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में आ जायेगा। ये दुआ बुज़ुर्गों के मुजर्रबात में से है–

اَللّٰهُمَّ اَحْرِسْنَا بِعَيْنِكَ الَّتِیْ لَاتَنَامُ وَاحْفَظْنَا بِرَكْنِكَ الَّذِیْ لَا يُرَامُ وَارْحَمْنَا بِقُدْرَتِكَ عَلَيْنَا لَا نَهْلِكُ وَاَنْتَ رِجَاءُنَا يَااَللّٰهُ يَااَللّٰهُ يَااَللّٰهُ.

ईमान की हिफ़ाज़त के लिए मुदल्लल वज़ीफ़ा

रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स ये चाहता हो कि अल्लाह तआ़ला क़यामत तक इसके ईमान की

हिफ़ाज़त फ़रमाते रहें तो इसको चाहिए कि वह नमाज़ मग़रिब के सुन्नतों के बाद किसी से गुफ़्तुगू करने से पहले दो रकअ़त नमाज़ इस तरह पढ़े कि दोनों रकअ़तों में अल्हम्द शरीफ़ के बाद फ़लक़ व नास एक मर्तबा पढ़े इस अमल से अल्लाह तआला इसके ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं।

यासीन शरीफ़ का अपने पढ़ने वाले के निदख़्वाह का आंख निकालना

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० ने अपनी बअ़ज़ तालीफ़ात में एक वलीयुल्लाह ज़बीदा शहर के रहने वाले से नक़ल फ़रमाया है कि उन्होंने कहा है कि मैं एक जनाज़े के साथ मग़रिब की नमाज़ के बाद गया दफ़न के बाद जब लोग चले जाये और अंधेरा हो गया तो मैं वहीं रह गया मैंने ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स कुत्ते की सूरत का क़ब्र में गया और ज़बान निकालते हुए थका हुआ निकला और सीधी आंख से काना मैंने इससे हाल मालूम किया इसके कहा कि इस मय्यत से बुराई करने गया था मगर सूरे यासीन शरीफ़ ने रोक दिया और मेरी आंख निकाल ली और मुझ से किसी ने इसी वक़्त कहा कि अगर ये सूरे मुल्क भी पढ़ता होता तो वह सूरत तेरी दूसरी आंख भी निकाल लेती। (फ़ज़ाईले कुरान)

हिफ़ाज़त का मज़बूत क़िला

मुझे बअ़ज़ सालिहीन व मोअ़तमिदीन से ये रिवायत पहुंची है कि जो शख़्स इन्सानी व जिन्नाती व हवाई व हर क़िस्म की हिफ़ाज़त का तालिब हो तो इसको चाहिए कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सूरे अख़्लास कुल हुवल्लाहु अहद मुकम्मल सूरत छ मर्तबा इस तरह पढ़ा करे कि एक मर्तबा पढ़ कर सीने की जानिब दम करे दूसरी मर्तबा

पढ़कर सीधे कंधे दाहिनी तरफ़ दम करे तीसरी मर्तबा पढ़ कर बायें तरफ़ दम करे चौथी मर्तबा पढ़कर आसमान की जानिब दम करे पांचवीं मर्तबा पढ़कर नीचे ज़मीन पांव की तरफ़ दम करे। छठी मर्तबा पढ़कर पीछे की जानिब दम करे इस अमल से इन्शा अल्लाह अलहफ़ीज़ हर क़िस्म की हवाई व आसमानी व ज़मीनी मारों व बलाओं से यहां तक कि लाठी व बन्दूक़ की ज़रबों से भी हिफ़ाज़त में रहेगा।

दुशमनों की निगाहों से पोशीदा रहने का अमल

जो शख़्स ख़ौफ़ खाता हो अपने सफ़र या ख़िज़र मे चोरों से या दुशमनों से तो इसको चाहिए कि इस अमल के ज़रिये अपनी हिफ़ाज़त कर ले इस तरह पर कि क़िब्ला रूख़ खड़ा हो और यूं पढ़े।

اَعُوْذُبِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا لَا لَا

फिर अपनी पीठ की तरफ़ मुंह करके कहे।

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا لَا لَا

फिर अपनी बायीं तरफ़ मुंह करके कहे–

يَامَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا لَا لَا

फिर अपनी उंगली से फ़िज़ा मे क़िब्ला की जानिब ये कलिमात लिखे–

قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلْ.

नोटः– फ़िज़ा यानी जिस क़दर हिस्से ज़मीन व आसमान के दर्मियान है इसको फ़िज़ा कहते हैं।

खेत व बाग़ की हिफ़ाज़त के लिए

अगर किसी खेत वग़ैरह मे जानवर ज़्यादा परेशान करते हों कि जिस कीवजह से खेती ख़राब हो जाती हो तो इस नक़्श को लिखकर एक कागज़ पर बतौरे तावीज़ के एक मिट्टी की कुलिया में

रख कर ढक्कन से बन्द करे दें और चारों तरफ़ खेत या बाग़ के किनारे एक बालिश्त गड्ढा करके दफ़न कर दें। नक़्श मुबारक ये है–

नक़्श
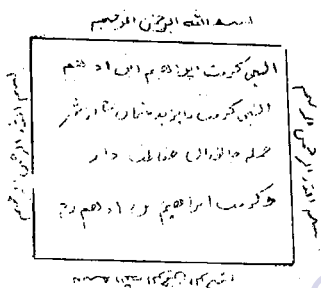
सांपों को भगाने का मुजर्रब अमल

काग़ज के चार टुकड़ों पर नीचे वाले हुरूफ़ व अअ़दाद लिख कर घर मकान वग़ैरह के चारों कोनों मे रख दें। इन्शा अल्लाह तआ़ला इस अमल से सांप भाग जायेंगे और कोई भी सांप घर वग़ैरह में नहीं आयेगा हुरूफ़ व अअ़दाद ये हैं।

١١٦١١١١٨ ٧ ارح٥٥٧١١ ٥ ١١٠١١ ١١ وو٧ وواه برو ١١ م ١١ ح ١١١

ح ط٥٥ ٨ سلامٌ عَلٰی نُوحٍ فِی الْعَالَمِیْنَ

नोटः– पाव भर नौशादर को पांच किलो पानी में घोलकर मकान वग़ैरह मे बहा दें और अगर कहीं सांप वग़ैरह के सुराख़ हो तो इन सुराख़ों में पानी भर दें। इस अमल से आप को सांप देखने को भी नहीं मिलेगा बल्कि जो सांप होंगे भी वह मर जायेंगे इन्शा अल्लाह तआ़ला ही हिफ़ाज़त फ़रमाने वाले हैं।

हर क़िस्म की बड़ी आफ़तों और बलाओं से हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा

रसूल अल्लाह स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह व शाम इस दुआ को तीन मर्तबा पढ़ लें तो वह बड़ी बलाओं व

आफ़तों से हिफ़ाज़त में रहेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَيْئٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

बद ख़्वानी से हिफ़ाज़त का तावीज़ व अमल

अगर कोई शख़्स सोते में वरग़लाता हो और नापाक हो जाता हो तो इसके लिए ये तावीज़ मुफ़ीद है कि लिखकर गले में डाल दें।

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم لهم البشرى فى الحيوة الدنيا وفى الاخرة لا تبديل لكلمات الله. ذالك هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ.

इलाही बहुरमते इलाही हज़रत उमर रजि० निगाह दार मुजर्रबाते सही)

खेत वग़ैरह में चूहे बहुत हो गये हों और खेती को नुक़सान पहुंचाते हों

ये शिकायत और परेशानी के लिए पांच काग़ज़ों पर ये अल्फ़ाज़ लिखें और इस खेत या बाग़ में कुल्लिया रखकर ज़मीन के चारों कोनों में और एक बीज दर्मियान ज़मीन में दफ़न कर दें। इन्शा अल्लाह तआला हिफ़ाज़त में रहेगी। अल्फाज़ ये हैं–

يَا اَيُّهَا الحشرات الارض اخرجوا من ههنا فان وجدنا كم لنقتدنكم ولنهلكنكم.

दरिन्दों और सांपों कीड़ों मकोड़ों से हिफ़ाज़त के लिए

जो शख़्स कलामुल्लाह शरीफ़ की इस आयत शरीफ़ा को अपना विर्द रखेगा तो वह शख़्स ज़मीन के तमाम तकलीफ़ देने वाले जानवरों से हिफ़ाज़त में रहेगा मुस्तनद व मुदल्लल है (फ़िरदौस अलहिकमह) आयत ये है–

اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّىْ وَرَبِّكُمْ مَامِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ بِنَا صِيَتِهَا اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

सांप और तकलीफ़ देने वाले जानवरों से हिफ़ाज़त

हज़रत अल्लामा दमेरी रह० ने फ़रमाया है कि अफ़्रीका के गवर्नर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के पास ये शिकायत आयी कि सांपों और बिच्छुओं वग़ैरह से परेशानी है। तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने जवाब लिखकर रवाना फ़रमाया कि तुम लोग सुबह व शाम ये पढ़ लिया करो–

مَالَنَا اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰنَا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَا اٰذَيْتُمُوْنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ.

हिफ़ाज़त के लिए मुजर्रब मुस्तनद तावीज़

खेती की हिफ़ाज़त मे असहाब कहफ़ के नामों को लिखकर ज़मीन के चारों कोनों में दफ़न कर दें। अगर जानवर शरारत करता हो तो असहाबे कहफ़ के नामों को लिखकर इसके गले मे तावीज़ बनाकर डालें इन्शा अल्लाह शरारत छोड़ देगा।

अगर कश्ती या जहाज़ में असहाबे कहफ़ के नामों को लिख कर रख दें तो ग़र्क़ होने से हिफ़ाज़त में रहेगी। असहाबे कहफ़ के नाम ये हैं।

يمايخا كمسلمينا كشفوطط طيونس كشافطيونس اذا فطهونس يوانس بوس قطمير.

आसमान या ज़मीन के जानवर बाग़ या खेत को नुक़सान पहुंचाते हों

चार अदद काग़ज़ पर ये लिखें।

صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ. صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ. صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ. صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ .

और फिर एक अदद काग़ज़ को चारों गोशों में कांच की शीशी में रखकर दफ़न कर दे इन्शा अल्लाह हिफ़ाज़त में रहेगा।

हिफ़ाज़त का अजीब व ग़रीब अमल

हज़रत इब्न अब्बास और हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से नक़ल है

कि जो शख़्स जुमा के दिन या रात में सूरे कहफ़ पढ़ेगा इसके पढ़ने की जगह से लेकर मक्का मुकर्रमा तक नूर हासिल होगा। और दूसरे जुमा तक तीन दिन ज़्यादा करके मग़फ़िरत की जायेगी और इस पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुबह होने तक रहमत भेजते रहेंगे और पेट के दर्द और पस्ली के दर्द और जज़ाम, बर्स की बीमारी और दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ रहता है। ये रिवायत बहीकी से हज़रत अबू सईद रजि0 से रिवायत है।

जान व माल अस्बाब औलाद की हिफ़ाज़त के लिए

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रजि0 अपने माल व अस्बाब और औलाद की हिफ़ाज़त के लिए हुरूफ़ मुक़त्तेआत लिख दिया क़रते थे हरूफ मुकत्तआत नह हुरूफ़ कहलाते हैं जो कलामुल्लाह शरीफ़ मे बअज़ सूरतों के शुरू में अलग अलग हुरूफ़ आये हैं जो कि टुकड़े टुकड़े करके अलग अलग पढ़े जाने वाले हैं। हुरूफ़ मुक़त्तेआत चौदह हुरूफ़ हैं और उनतीस सूरतों के अव्वल में आये हैं। मसलन् الٓمٓ۔ الٓمٓر۔ الٓمٓصٓ كٓهٰيٰعٓصٓ حٰمٓ عٓسٓقٓ वग़ैरह वग़ैरह।

आयाते हिफ़ाज़त कुरान करीम में से

ये कुरान करीम की मुन्तख़िब शुदा आयात हिफ़ाज़त के लिए हैं। अगर इन आयतों को लिखकर इन्सान या किसी के लिए भी तावीज़ बनाकर गले में डाल दें। चाहे जिन्नात या आसेब या जादू सा खौफ़ हो तो ये आयात हिफ़ाज़त का क़िला बन जाती हैं। एक अल्लाह के वली से साबित है कि उन्होंने जंगल में भेड़ियों के साथ बकरी को खेलते हुए देखा इनको बड़ा तअज्जुब हुआ कि भेड़िये तो बकरी का खुला हुआ जानी दुशमन है और यहां पर मिली भगत है कि भेड़ या बकरी से खेल रहा है। ये बुज़ुर्ग क़रीब गये तो भेड़िया तो फ़रार हो गया और बकरी वहीं पर खड़ी रही। इन बुज़ुर्ग ने इस बकरी के गले में एक तावीज़ पड़ा हुआ देखा। इस तावीज़ को खोल कर देखा तो

इसमें ये कुराने करीम की आयात हिफ़ाज़त लिखी हुई थीं आयात हिफ़ाज़त ये हैं–

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم. وَلَايَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ حَفِيْظٌ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ لَهٗ مُعَقِّبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ. حَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانِ الرَّجِيْمِ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ وَ حِفْظًا ذَالِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ وَرَبُّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ حَفِيْظٌ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِيْنَ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ يَعْلَمُوْنَ مَاتَفْعَلُوْنَ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ذُوالْعَرْشِ الْمَجِيْدُ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِیْ تَكْذِيْبٍ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ فِیْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ.

अज़ाबे कब्र से हिफ़ाज़त का अमल

हदीस शरीफ़ में आया है कि मरने वाले आदमी की क़ब्र में अज़ाब देने वाले फ़रिश्ते आते हैं तो इसके पांव क़हते हैं कि तुम इस तरफ़ से नहीं आ सकते इसलिए कि ये शख़्स हमारे ज़रिये नमाज़ में सूरे मुल्क पढ़ता था। फिर वह फ़रिश्ते सीने और दिल की तरफ़ से आते हैं और पेट की तरफ़ से आते हैं वह भी इसी तरह जवाब दे देते हैं फिर अज़ाबे के फ़रिश्ते सर की जानिब से आते हैं। ग़र्ज़ हर अज़ू बदन का हिस्सा यही कहता है कि तुम इस रास्ते से नहीं आ सकते हो इसलिए कि ये शख़्स हमारे ज़रिये सूरे मुल्क पढ़ा करता था। पस ये सूरत इसको अज़ाबे क़ब्र से बचाती है। एक हदीस शरीफ़ में है कि सूरे मुल्क की तीस आयतें आदमी की इतनी शिफ़ाअत करती हैं कि इसकी मग़फ़िरत कर दी जाती है और एक हदीस शरीफ़ में है कि ये अपने पढ़ने वाले की मग़फ़िरत का इस वक़्त तक सवाल करती रहती है जब तक कि इसको बख़्श न दिया जाये। इसी लिए एक हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूल अल्लाह

स0अ0व0 ने इरशाद फ़रमाया कि मेरा जी चाहता है कि ये सूरत मुलक हर ईमान वाले के दिल मे हो।

सूरे मुल्क के फ़वाईद

सूरे मुल्क के फ़ायदों मे से एक ये भी रिवायत है कि एक सहाबी रज़ि0 ने न जानते हुए एक क़ब्र पर अपना ख़ेमा लगाया इस ख़ेमे में इन सहाबी रज़ि0 ने सुना कि एक शख़्स ज़मीन के अन्दर अपनी क़ब्र में सूरे मुल्क पढ़ता है और इसने सूरे मुल्क पूरी पढ़ी। इन सहाबी रज़ि0 ने फ़रमाया कि ये सूरत अज़ाबे क़ब्र से निजात देनी वाली है। बअज़ बुज़ुर्गाने दीन औलिया अल्लाह व उलमा कराम से रिवायत है कि जो शख़्स सूरे मुल्क चांद देखने के वक़्त पढ़े इसे इस महीने मे हर तरह की ख़ैर व बरकत हासिल हो और हर शर से महफ़ूज़ रहे।

दुआ मुहम्मद अशरफ़

ऐ अल्लाह मेरी इस किताब को अपनी पाक बारगाह में अपने फ़ज़्ल व करम से बेहद क़बूल फ़रमा और ऐबों को ख़त्म फ़रमा कमियों को पूरा फ़रमा, किताब से फ़ैज़ उठाने वालों को भरपूर मुस्तफ़ीज़ फ़रमा हर क़िस्म के शर व फ़ितनों से मुकम्मल हिफ़ाज़त फ़रमा, इस किताब को ज़रिये बनाये हुए रशद व हिदायत को जारी व सारी फ़रमा। गुमराही व ज़लालत से मुकम्मल हिफ़ाज़त फ़रमा। ज़मीन के ज़र्रात और मख़्लूक़ के सांसों की तादाद से ज़्यादा सय्यदुल अम्बिया महबूब कबीरया रहमतुल लिल आलमीन स0अ0व0 पर सलात व सलाम के तोहफ़े व हदिये हम सब की जानिब से हमेशा हमेशा तक नाज़िल फ़रमा और हमें आप स0अ0व0 की सच्ची इत्तबाअ़ व शिफ़ाअ़त का सही मुस्तहिक़ बना और आप स0अ0व0 की शिफ़ाअ़त हमारे मुक़द्दर में मुतय्यन फ़रमा।

وصلى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَصهاره وَاَنْصَاره واتباعته وامتهٖ معنا اجمعين. اَوَّلاً وَّاٰخِراً وَّظَاهِراً وَّبَاطِناً.

اٰمين بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.